Published by Janardan Sakharam Kudalkar, M. A., LL. B., Curator of State Libraries,
Baroda, for the Baroda Government, and Printed by Manilal Itcharam Desai, at
The Gujarati Printing Press, No. 6, Sassoon Buildings,
Circle, Fort, Bombay.

Price Rs. 2-4-0

FOREWORD.

Owing to the untimely death of Mr. C. D. Dalal, M.A., the editor, this work is published for the present without its Introduction and Notes. We are also aware that owing to the great pressure of other work that Mr. Dalal had on his hands at the time he was editing this work, he could not correct the several mistakes that have crept in the text.

Scholars of old Gujarati are only a few in number and those few are not free or prepared to undertake to complete this work just at present. Hence this First Part of the work containing only the Text is sent out to the public with a promise that it will be followed soon with a Second Part which will contain a critical Introduction and Notes written by the veteran old Gujarati scholar Mr. Keshav Harshad Dhruva, B.A., of Ahmedabad.

10-4-20

J. S. KUDALKAR.
Curator of State Libraries.

प्राचीनगुर्जरकाव्यसंग्रहः

अनुक्रमणिका.

पद्यसंग्रहः

	Page.
[illegible]	1.
[illegible]	8
[illegible]	11
[illegible]	27
[illegible]	38
[illegible]	41
[illegible]	47
[illegible]	59
[illegible]	62
[illegible]	67
[illegible]	71
[illegible]	74
[illegible]	78
[illegible]	83

गद्यसंग्रहः

[illegible]	86
[illegible]	87
[illegible]	88
[illegible]	89
[illegible]	91
[illegible]	9
[illegible]	13

APPENDICES.

		Page.
I	श्रीशत्रुञ्जयतीर्थयात्रावर्णनम्	1
II	रैवतकप्रशस्तिलेखो	8
III	उज्जयन्तस्तव.	10
IV	उज्जयन्तमहातीर्थकल्पः	12
V	रैवतकल्पः	15
VI	अम्बिकादेवीकल्प.	17
VII	श्रीगिरिनारकल्प	19
VIII	Inscription of the Reign of Alapkhan in the temple of Sthambhana Pârsvanatha at Cambay ...	22
IX	Inscriptions on the Satrunjaya *Hill* pertaining Samarâ's installation of the image of Âdishvara ...	23
X	वेषरत्न	24

प्राचीनगूर्जरकाव्यसङ्ग्रहः

प्रथमो भागः

रेवंतगिरिरासु

परमेसरनित्थेसरह पयपंकय पणमेवि ।
भणिसु रासु रेवंतगिरे अंबिकदिवि सुमरेवि ॥ १ ॥
गामागरपुरवणगहणसरिसरयरि सुपएसु ।
देवभूमि दिसि पच्छिमह मणहरु सोरटदेसु ॥ २ ॥
जिणु तहिं मंडलमंडणउ मरगयमउडमहंतु ।
निम्मलसामलसिहरभरे रेहइ गिरि रेवंतु ॥ ३ ॥
तसु सिरि सामिउ सामलउ सोहगसुंदरसारु ।
जाइयनिम्मलकुलतिलउ निवसइ नेमिकुमारु ॥ ४ ॥
तसु मुहदंसणु दसदिसि वि देसदेसंतरु संघ ।
आवइ भावरसालमणउ हलि रंगतरंग ॥ ५ ॥
पोरवाडकुलमंडणउ नंदणु आसाराय ।
वस्तुपाल वरमंति तहिं तेजपालु दुइ भाय ॥ ६ ॥
गुरजरधरधुरि धवलकि वीरधवलदेवराजि ।
विहु बंधवि अवधारियउ सुमू दृसममाझि ॥ ७ ॥
नागलगच्छह मंडणउ विजयसेणसूरिराउ ।
उवएसिहि विहु नरपवरे धम्मि धरिउ दिढु भाउ ॥ ८ ॥
तेजपालि गिरनारतले तेजलपुरु निपनामि ।
कारिउ गढमढपवपवरु मणहरु घरि आरामि ॥ ९ ॥

तहि पुरि सोहिउ पासजिणु आसारायविहारु ।
निम्मिउ नामिहि निजजणणि कुमरसरोवरु फारु ॥ १० ॥
तहि नयरह पूरवदिसिहि उग्रसेणगढदुग्गु ।
आदिजिणेसरपमुहजिणमंदिरि भरिउ समग्गु ॥ ११ ॥
बाहिरिगढ दाहिणदिसिहि चउरियवेहिविसालु ।
लाडुकलहहियओरडीय तडि पसुठाइकरालु ॥ १२ ॥
तहि नयरह उत्तरदिसिहि सालथंभसंभार ।
मंडण महिमंडल सपल मंडप दसह उसार ॥ १३ ॥
जोइउ जोइउ भवियण पेमि गिरिहि दुयारि ।
दामोदरु हरि पंचमउ सुवन्नरेहनइपारि ॥ १४ ॥
अगुण अंजण अंबिलीय अंबाडय अंकुल्लु ।
उंबरु अंबरु आमलीय अगरु असोप अहल्लु ॥ १५ ॥
करयर करपट करुणनर करयंदी करवीर ।
कुडा कडाह कपंथ कट्ट करव कदलि कंपीर ॥ १६ ॥
बेपल्लु बंजल्लु बउल बट्टो बेडस बरण विहंग ।
बामंनी बीरिणि विरह बंसियालि वण बंग ॥ १७ ॥
सीसमि सिंबलि सिरसमि सिंधुवारि सिरखंड ।
सरल सार साहार सय सागु सिगु सिणदंड ॥ १८ ॥
पल्लवफुल्लफलुल्लसिय रेहइ ताहि वणराइ ।
तहि उज्जिलतलि धम्मियह उल्लडु अंगि न माइ ॥ १९ ॥
बोलावी संवहतणीय कालमेघंतरपंथि ।
मिल्हविय तहि दिह पणीय वस्तपाल वरमंति ॥ २० ॥

(प्रथमं कडवम्)

दुविहि सुत्तरदेसे रिउरायविहंडणु ।
कुमरपालु भूपालु जिणसासणमंडणु ।
तेग मंडाविओ सुरठदंडाहियो ।
अंबओ सिरि सिरिमालकुलसंभवो ।
पाउ सुविसाल निजि नडिय ।
अंबरि धवल पुनु परय भरावियय ॥ १ ॥

घनु सु धवलह भाउ जिणि पाग पयासिय ।
बारविसोत्तरवरसे जसु जसि दिसि वासिय ।
जिम जिम चढइं तडि कडणि गिरनारह ।
तिम तिम ऊडइं जण भवणसंसारह ।
जिम जिम सेउजलु अग्गि पालाट ए।
तिम तिम कलिमलु सयलु ओहट्ट ए ॥ २ ॥
जिम जिम वायइ वाउ तहि निज्झरसीयलु ।
तिम तिम भवदुहदाहो तरुणि तुट्टइ ।
निवलु कोइलकलयलो मोरकेकारवो ।
सुंमए महुयरमहुरगुंजारवो ।
पाज चढंतह सावयालोयणी ।
लापारासु दिसि दीसए दाहिणी ॥ ३ ॥
जलदजालयवाले नीझरणि रमाउलु ।
रेहइ उज्जिलसिहरु अलिकज्जलसामलु ।
वहलवुहुयातुरसभेउणी ।
जत्थ उलदलइ सोयन्नमइ मेउणी ।
जत्थ दिप्पंति दिवो सही सुंदरा ।
गुहिर वर गरुय गंभीर गिरिकंदरा ॥ ४ ॥
जाइ कुंदु विहसंतो जं कुसुमिहि संकुलु ।
दीसइ दस दिसि दियसो किरि तारामंडलु ।
मिलियनवलयलिदलकुसुमझलहालिया ।
ललियसुरमहियलयचलणनलतालिया ।
गलियधलकमलमयरंदजलकोमला ।
विउल सिलयट्ट सोहंति तहि संमला ॥ ५ ॥
मणहरघणवणगहणे रसिरहसिय किंनरा ।
गेउ मुहुरु गायंतो सिरिनेमिजिणेसरा ।
जत्थ सिरिनेमिजिणु अच्छए अच्छरा ।
असुरसुरउरगकिंनरयविज्जाहरा ।
मउडमणिकिरणपिंजरियगिरिसेहरा ।
हरसि आवंति बहुभत्तिभरनिब्भरा ॥ ६ ॥

सामियनेमिकुमारपयपंकयलंविउ ।
घरधूल वि जिण धन्न मन पूरइ वंछिउ ।
जो भव कोडाकोडि ..... ।
अन्नु सोवन्नु घणु दाणु जउ दिज्जए ।
सेवउ जडकम्मघणगंठि जउ तिज्जए ।
तउ उज्जितसिहरु पाविज्जए ॥ ७ ॥
जम्मणु जोव जीविय तसु तहिं कयत्थू ।
जे नर उज्जितसिहरु पेक्खइ वरनित्थू ।
आसि गुरजरधरय जेण अमरेसरु ।
सिरिजयसिंघदेउ पवरु पुहवीसरु ।
हणवि सोरट्ठु तिणि राउ पंगारउ ।
ठविउ साजणु दंडाहिवं सारउ ॥ ८ ॥
अहिणवु नेमिजिणिंद तिणि भवणु कराविउ ।
निम्मलु चंदरु बिंबे नियनाउं लिहाविउ ।
थोरविरुंभवायंभरमाउलं ।
ललियपुत्तलियकलसकुलसंकुलं ।
मंडपु दंडघणु तुंगतरतोरणं ।
धवलिय वज्झिरुणझणिरिकिंकणिघणं ।
इक्कारसयसहीउ पंचासीय वच्छरि ।
नेमिभुयणु उद्धरिउ साजणि नरसेहरि ॥ ९ ॥
मालवमंडलगुहमुहमंडणु ।
भावडसाहु दालिधुखंडणु ।
आमलसारसोवन्नु तिणि कारिउ ।
किरि गयणंगण सूरु अवयारिउ ।
अवरसिहरवरकलस झलहलइ मणोहर ।
नेमिभुयणि तिणि दिट्ठइ दुह गलइ निरंतर ॥ १० ॥

(द्वितीयं कडवम्)

दिसि उत्तर कसमीरदेसु नेमिहि उम्माहिय ।
अजिउ रतन दुइ वंध गरुय संघाहिव आविय ॥ १ ॥

हरमयमिण घणकलस भरिवि ति न्हवणु करंतह ।
गलिउ लेवमु नेमिविंबु जलधार पडंतह ॥ २ ॥
संघाहिवु संघेण सहिउ निवमणि संनविउ ।
हा हा धिगु धिगु मह विमलकुलगंजणु आविउ ॥ ३ ॥
सामियसामलधीरचरण मह सरणि भवंतरि ।
इम परिहरि आहार नियमु लइउ संघधुरंधरि ॥ ४ ॥
एकवीसि उपवासि सामु अंबिकदेवि आविय ।
पभणइ स पमत्त देवि जय जय महाविय ॥ ५ ॥
उट्ठेविणु गिरिनेमिविंबु तुलिउ तुरंतउ ।
पच्छलु मन जोएसि पच्छ तुं भवणि चलंतउ ॥ ६ ॥
णइ वि अंबि·····कंचण·वलाणइ ।
·····विंबु मणिमउ तहिं आणइ ॥ ७ ॥
पदमभवणि देहलिहि देउ छुटि पुहि आरोविउ ।
संघाहिवि हरिसेण तम दिसि पच्छलु जोइउ ॥ ८ ॥
ठिउ निचलु देहलिहि देवु गिरिनेमिकुमारो ।
कुसुमवुट्ठि मिल्हेवि देवि किउ जइजइकारो ॥ ९ ॥
बहमाहीपुंनिमह पुंनवतिण जिणु थप्पिउ ।
पच्छिमदिसि निम्मविउ भवणु भवदुहतरु कप्पिउ ॥ १० ॥
न्हवणविलेवनणाय वंछ भवियणजण पूरिय ।
संघाहिव गिरिअजितुरतनु नियदेसि पराइय ॥ ११ ॥
सयलविचित्ति कलिकालि कालकलुसे जाणवि छाहिउ ।
झलहलंति मणिविंबकंति अंबिकुरु आइय ॥ १२ ॥
समुद्दविजयसिवदेविपुत्तु जायवकुलमंडणु ।
जरासिंधदलमलणु मयणभडमाणविहंडणु ॥ १३ ॥
राइमईमणहरणु रमणु सिवरमणि मणोहरु ।
पुनवंत पणमंति नेमिजिणु सोहगसुंदरु ॥ १४ ॥
वस्तपालि धरमंति भूयणु कारिउ रिसहेसरु ।
अट्ठावयसंमेयसिहरवरमंडपुमणहरु ॥ १५ ॥
कउडिजक्खु मरुदेवि दुह वि तुंगु पासाइउ ।
धम्मिय सिरु धुणंति देव वलिवि पलोइउ ॥ १६ ॥

तेजपालि निम्मविउ तत्थ तिहुयणजणरंजणु ।
कल्याणउ तउ तुंगु मुयणु लंघिउगयणंगणु ॥ १७ ॥
दीसइ दिसि दिसि कुंडि कुंडि नीझरणउमालो ।
इंद्रमंडपु देपालि मंत्रि उद्धरिउ विसालो ॥ १८ ॥
अइरावणगयरायपायमुहासमटंकिउ ।
दिट्ठु गयंदमु कुंड विमलुनिज्झरसमलंकिउ ॥ १९ ॥
गयणगंग जं सयलतित्थअवयारु भणिज्जइ ।
पक्खालिवि तहि अंगु दुक्क जलअंजलि दिज्जइ ॥ २० ॥
सिंदुवारमंदारकुरवककुंदिहि सुंदरु ।
जाइजूइसपवत्तिविन्निफलेहि निरंतरु ॥ २१ ॥
दिट्ठ य छत्रसिलकडणि अंबवणु सहसारामु ।
नेमिजिणेसरदिक्खनाणनिव्वाणह ठामु ॥ २२ ॥

(तृतीयं कडवम्)

गिरिगरुयासिहरि चडेवि अंबजंबाहिं बंबालिउं ए ।
संमिणी ए अंबिकदेविदेउलु दीठु रम्माउलं ए ॥ १ ॥
वज्जइ ए तालकंसाल वज्जइ मदल गुहिरसर ।
रंगिहिं नचइ बाल पेखिवि अंबिकमुहकमलु ॥ २ ॥
सुभकरु ए ठविउ उच्छंगि विभकरो नंदणु पामिक ए ।
सोहइ ए ऊजिलसिंगि सामिणि सीहसिंघासणी ए ॥ ३ ॥
दावइ ए दुक्खहं भंगु पूरइ ए वंछिउ भवियजण ।
रक्खइ ए चउविहु संघु सामिणि सीहसिंघासणी ए ॥ ४ ॥
दस दिसि ए नेमिकुमारि आरोही अवलोइउं ए ।
दीजई ए तहि गिरनारि गयणंगणु अवलोणसिहरो ॥ ५ ॥
पहिलइ ए सांवकुमारु बीजइ सिहरि पज्जून पुण ।
पणमइं ए पामइं पारु भवियण भीसण भवभमण ॥ ६ ॥
ठामि ठामि रयणसोवन्न बिंब जिणेसर तहिं ठविय ।
पणमइ ए ते नर धन्न जे न कलिकालि मलमयलिया ए ॥ ७ ॥
जं फलु ए सिहरसमेयअट्ठावयनंदीसरिहिं ।
तं फलु ए भवि पामेइ पेखेविणु रेवंतसिहरो ॥ ८ ॥

गहगण ए माहि जिम भाणु पव्वयमाहि जिम मेरुगिरि ।
त्रिहु भुयणे तेम पहाणु तित्थंमाहि रेवंतगिरि ॥ ९ ॥
धवलधय चमर भिंगार आरत्ति मंगलपईव ।
तिलय मउड कुंडल हार मेघाडंबर जाविपं ए ॥ १० ॥
दियहिं नर जो पवर चंद्रोय नेमिजिणेसरवरमुयणि ।
इह भवि ए भुंजवि भोय सो तित्थेसरसिरि लहइ ए ॥ ११ ॥
चउविहु ए संघु करेइ जो आयइ उज्जितगिरे ।
दिवसि वह रागु करेइ सो सुंचइ चउगइगमणि ॥ १२ ॥
अठविह ए ज्ञय करंति अठाई जो तहिं करइ ए ।
अठविह ए करम हणंति सो अठभवि सिज्झइ ए ॥ १३ ॥
अंबिल ए जो उपवास एगासण नीवी करइं ए ।
तसु मणि ए अछइं आस इहभव परभव वियहपरे ॥ १४ ॥
नेमिहि मुणिजण अन्नह दाणु धम्मियवच्छलु करइं ए ।
तसु कही नहीं उपमाणु परभानि सरण तिणउ ॥ १५ ॥
आवइ ए जे न उज्जिति घर घरइ धंधोलिया ए ।
आविही ए हीयह न जंति निष्फलु जीविउ सासुतणउं ॥ १६ ॥
जीविउ ए सो जि परि धन्नु तासु संमच्छर निच्छणु ए ।
सो परि ए मासु परि धन्नु वलि हीजइ नहि वासर ए ॥ १७ ॥
जहिं जिणु ए उज्जिलठामि सोहगसुंदरु सामलु ए ।
दीसइ ए तिहुणसामि नयणसलूणउं नेमिजिणु ॥ १८ ॥
नीझरण चमर ढलंति मेघाडंबर सिरि धरीइं ।
तित्थह एसउ रेवंदि सिंहासणि जयइ नेमिजिणु ॥ १९ ॥
रंगिहि ए रमइ जो रासु सिरिविजयसेणिसूरि निम्मविउ ए ।
नेमिजिणु तूसइ तासु अंबिक पूरइ मणि रली ए ॥ २० ॥

(चतुर्थं कडवम्)

॥ समत्तु रेवंतगिरिरासु ॥

नेमिनाथचतुष्पदिका

सोहगसुंदरु घणलायण्णु सुमरवि सामिउ सामलवन्नु ।
सखि पति राजल चडि उत्तरिय बारमास सुणि जिम वन्नरिय ॥ १ ॥
नेमिकुमरु सुमरवि गिरनारि सिद्धी राजल कन्नकुमारि ॥ आंकिणी ॥
श्रावणि सरवणि कडुयं मेहु गज्जइ विरहिरि झिज्जइ देहु ।
विज्जु झबक्कइ रक्कसि जेव नेमिहि विणु सहि सहियइ केम ॥ २ ॥
सखी भणइ सामिणि मन झूरि दुज्जणतणा म वंछित पूरि ।
गयउ नेमि तउ विणठउ काइ अछइ अनेरा वरह सयाइ ॥ ३ ॥
बोलइ राजल तउ इहु वयणु नत्थी नेमिसमं वररयणु ।
धरइ तेजु गहगण सवि ताव गयणि न उग्गइ दिणयरु जाव ॥ ४ ॥
भाद्रवि भरिया सर पिक्केवि सकरुण रोअइ राजलदेवि ।
हा एकलडी मइ निरधार किम ऊवेपिसि करुणासार ॥ ५ ॥
भणइ सखी राजल मन रोइ नीठुरु नेमि न अप्पणु होइ ।
सिंचिय तरुवर परि पलवंति गिरिवर पुण कड डेरा हुंति ॥ ६ ॥
साचउं सखि वरि गिरि भिज्जंति किमइ न भिज्जइ सामलकंति ।
घण वरिसंतइ सर फुट्टंति सायरु पुण घणुओह डुलिंति ॥ ७ ॥
आसोमासइ अंसुप्रवाह राजल मिल्हइ विणु नमिनाह ।
दहइ चंदु चंदणहिमसीउ विणु भत्तारह सउ वि वरीउ ॥ ८ ॥
सखि नवि खीना नेमिहिरेसि मन आपणपउं तउं खय नेसि ।
जिणि दिक्काडिउ पहिलउं छेहु न गणिउ अट्ठभवंतरनेहु ॥ ९ ॥
नेमि दयालू सखि निरदोसु कीजइ उग्रसिणऊपरि रोसु ।
पसुयभराविउ मूकउ वाडु मुझु प्रियसरिसउ कियउ विहाडु ॥ १० ॥
कत्तिग झिंसिग ऊगइ संझ रजमति झिझिउ हुइ अतिझंझ ।
राति दिवसु अछइ विलवंत वलि वलि दय करि दयकरि कंत ॥ ११ ॥
नेमितणी सखि मूकि न आस कायरु भग्गउ सो घरवास ।
इमइ इसी सनेहल नारि जाइ कोइ छंडवि गिरनारि ॥ १२ ॥
कायरु किम सखि नेमिजिणंदु जिणि रिणि जित्तउ लक्खु नरिंदु ।
फुरइ सासु जा अग्गलि नास ताव न मिल्हउं नेमिहि आस ॥ १३ ॥

मगसिरि मग्गु पलोअइ बाल इणपरि पभणइ नयणविसाल ।
जो मइ मेल्हइ नेमिकुमार तसुणी वेल वहउ सविवार ॥ १४ ॥
एहु कदाग्रहु तउ सखि मिल्हि करिसि काइ तिणि नेमिहि हिल्लि ।
मैंहि पढाविउ जो किर मालि हे हे कु करइ टोहणकालि ॥ १५ ॥
अठभव सेविउ सखि मइ नेमि तसु ऊमाहउ किम न करेमि ।
अवगन्नेसइ जइ मइ सामि लग्गी अछिसु तोइ तसु नामि ॥ १६ ॥
पोसि रोस सवि छंडिवि नाह राखि राखि मइ मयणह पाह ।
पडइ मीड नवि रयणि विहाइ लहिय छिह सवि दुक्ख अमाइ ॥ १७ ॥
नेमि नेमि तू करती मुक्कि जुव्वणु जाइ न जाणिसि सुक्कि ।
पुरिसरयणभरियउ संसारु परणि अनेरउ कुइ भत्तारु ॥ १८ ॥
भोली तउ सखि घरी गमारि घरि अच्छंतइ नेमिकुमारि ।
अन्नु पुरिसु कुइ अप्पणु नडइ गइयरु लहिउ कु रासभि चडइ ॥ १९ ॥
माहमासि माघइ हिमरासि देवि भणइ मइ प्रिय लहइ पासि ।
तइ विणु सामिय दहइ तुसारु नयनवमारिहि मारइ मारु ॥ २० ॥
इहु सखि रोहमि मइ अरसि हत्थि कि जामइ धरणउ कसि ।
तउ न पती जिमि माहरी माइ सिद्धिरमणिरत्तउ नमि जाइ ॥ २१ ॥
फंति वसंतइ हियडामाहि थानि पहीजउं किमइ लसाइ ।
सिद्धि जाइ तउ काइत बोह सरसी जाउ न उग्रसेणधीय ॥ २२ ॥
फागुण वागुणि पत्र पडंति राजलदुक्कि कि तरु रोयंति ।
गब्भि गलिवि हउं काइ न मूय भणइ विहंगल धारणिधूय ॥ २३ ॥
अजिउ भणिउ करि सखि विम्मासि अछइ भला वर नेमिहि पास ।
अलु सखि मोदक जउ नवि हुंति तुहिय सुहाली कि न रुचंति ॥ २४ ॥
मणह पासि जइ वहिलउ होइ नेमिहि पासि ततलउ न कोइ ।
जइ सखि धरउं न सामल धीरु घणविणु पियइ कि चातकु नीरु ॥ २५ ॥
चैत्रमासि घणसइ पंगुरइ घणि घणि कोयल टहका करइ ।
पंचबाण करि धनुष धरेवि वेहइ मांडी राजलदेवि ॥ २६ ॥
जुइ सखि मानउ मासु वसंतु इणि खिलिज्जइ जइ हुइ कंतु ।
रमियइ नव नव करि सिणगारु लिज्जइ जीवियजुव्वणसारु ॥ २७ ॥
सुणि सखि मानिउ मुझु परिणयणु नवि ऊयरि थिउ बंधवयणु ।
जइ पडियज्जइ चुक्कइ नेमि जीविय जुव्वणु जलणि जलेमि ॥ २८ ॥

वइसाहह विहसिय वणराइ मयणमित्तु मलयानिलु वाइ ।
फुट्टि रि हियडा माझि वसंतु विलवइ राजल पिक्किउ कंतु ॥ २९ ॥
सखी दुरु वीसरिवा भणइ संभलि भमरउ किम रुणझुणइ ।
दीस पंच थिरु जोव्वणु होइ खाउ पियउ विलसउ सहु कोइ ॥ ३० ॥
रमणि पसंसइ राजल कन्न जीह कंतु वसि ते पर धन्न ।
जसु प्रिउ न करइ किमइ मुहाडि सा हउं इक्क ज भुंडनिलाडि ॥ ३१ ॥
जिह विरहु जिम तप्पइ सूरु घणविओगि सुसियं नइपूरु ।
पिक्किउ फुल्लिउ चंपइविल्लि राजल मूछी नेहगहिल्लि ॥ ३२ ॥
मूछी राणी हा सखि धाउं पडियउ खंडइ जेवडु घाउ ।
हरिय मूछ चंदणपवणेहिं सखि आसासइ प्रियवयणेहिं ॥ ३३ ॥
भणइ देवि विरती संसार पडिखि पडिखि मइ जादवसार ।
नियपडिवन्नउं प्रभु संभारि मइ लइ सरिसी गढि गिरिनारि ॥ ३४ ॥
आसाढह दिहु हियउं करेवि गज्जु विज्जु सवि अवगन्नेवि ।
भणइ वयणु उग्रसेणह जाय करिसु धम्मु सेविसु प्रियपाय ॥ ३५ ॥
मिलिउ सखी राजल पभणंति चिणय जेम नमिरिय खज्जंति ।
अउगी अच्छि सखि झखि मन आल तपु दोहिल्लउ तउं सुकुमाल॥३६॥
अठ भव विलसिउ प्रियह पसाइ किमइ जीवु सखि सुख न थाइ ।
हिव प्रिय सरिसउं जीविय मरणु इण भवि परभवि निमि जु सरणु॥३७॥
अधिकु मासु सवि मासहि फिरइ छहरितुकेरा गुण अणुहरइ ।
मिलिवा प्रिय ऊयाहुलि हूय सउ मुकलाविउ उग्रसेणधूय ॥ ३८ ॥
पंच सयीसइ जसु परिवारि प्रिय ऊमाही गइ गिरिनारि ।
सयीसहित राजल गुणरासि लेइ दिक्क परमेसरपासि ॥ ३९ ॥
निम्मल केवलनाणु लहेवि सिद्धी सामिणि राजलदेवि ।
रयणसिंहसूरि पणमवि पाय बारह मास भणिया मइ भाय ॥ ४० ॥
नेमिकुमरु सुमरवि गिरनारि सिद्धी राजल कन्नकुमारि ।

इति श्रीविनयचन्द्रसूरिकृतनेमिनाथचतुष्पदिकाः ॥

उवएसमालकहाणयछप्पय

छप्पयछंद

विजय नरिंद जिणिंदवीरहत्थिहिं वय लेविणु ।
धम्मदासगणि नामि गामि नयरिहिं विहरइ पुणु ।
नियपुत्तह रणसीहराय पडिबोहणसारिहिं ।
करइ एस उवएसमालजिणवयणवियारिहिं ।
सयपंचच्चालगाहारयणमणिकरंड महियलि सुणउ ।
सुहभावि सुद्ध सिद्धंतसम सवि सुसाहु सावय सुणउ ॥ १ ॥
रिसहनाह निरहार वरिस विहरिउ अपमत्तउ ।
वद्धमाण छम्मास करइ तप गुणहि निरुत्तउ ।
अवर वि जिणवर दिक्ख लेवि तव तवइ सुनिम्मल ।
तिणि कारणि उपदेशमाल धुरि तप किय बहुफल ।
नियसत्तिसारि अणुसारि इणि तपआदर अहनिसि करउ ।
भो भविय भावि जम्मणमरणदुहसमुद्द दुत्तर तरउ ॥ २ ॥
सव्व साहु तुम्हि सुणउ गणउ जग अप्पसमाणउ ।
कोह कह वि परिहरउ धरउ समरस सपराणउ ।
तिहुयणगुरु सिरिवीर धीर पण धम्मधुरंधर ।
दासपेसदुव्वयण सहइ घणदुसह निरंतर ।
नरतिरियदेवउवसग्ग बहु जह जगगुरु जिणवर खमइ ।
तिम खमउ खंति अग्गलि करी जेम्म रिउदलबल नमइ ॥ ३ ॥
सव्व सुणइ जिणवयण नयणउल्हासिहिं गोयम ।
जाणइ जइ वि सुयत्थ तह वि पुच्छइ पहु कहु किम ।
भद्दकचित्त पवित्त पढम गणहर सुयनाणी ।
न करइ गव्व अपुव्व करवि मनि मन्नइ वाणी ।
छंदोइ मान ज्ञानहतणउ विणउ अंगि इम आणीइ ।
गुरुभत्ति कह वि नवि मिल्हीइ ग्रंथकोडि जइ जाणीइ ॥ ४ ॥
दहिवाहणनिवधूय वीरजिणपढमपवत्तणि ।
चंदनबाल विसाल गुणिहिं गज्जइ गुहिरप्पणि ।

अहनिसि रायकुंयारिसहस सेवइं पय भत्तिहिं ।
जाणइ नाणनिहाण माण पुण नाणइ चित्तिहिं ।
दिणदिक्खिय देक्खिय आवतु द्रमक साधु सा ऊठि करी ।
अभिगमण नमण वंदण विणय सुणइ वयण आणंदभरी ॥ ५ ॥
वाणारसिनयरीनरिंद नामिहिं संवाहण ।
पुर अंतेउर पवर अवर हय गय बहु साहण ।
कन्नासहस सुरूव अछइ पुण पुत्त न इक्कय ।
राय पत्त पंचत्त लच्छि लिवइ रिउ दुक्कय ।
नेमित्तियणि राणीउयरि कुंयर जाणि पट्टिहिं चविउ ।
तिणि अंगवीरि अरि आसुवी रज्जवंध सहु राहविउ ॥ ६ ॥
कियसिंगारउदार अंग आरीसइ पिक्खइ ।
पाणी पडी मुंद्रडी सयल तणु तिणिपरि दिक्खइ ।
अंतेउरआवासि पासि भववासि विरत्तउ ।
भरहेसर वरझाण नाण केवल संपत्तउ ।
एउ चक्कवट्टि विसयारसिहिं रमइ रंगि जणु इम गणइ ।
तसु अप्पकज्ज अप्पिहिं सरिउं किं परजणजाणावणइ ॥ ७ ॥
सेणिय करइ पसंस दुमुहदुव्वयणि निवारइ ।
रायरिसि कासग्गि रहिउ रणि अरिअण मारइ ।
सिरकफज्जि सिरि हत्थ घल्लि संजम संभालइ ।
मनिहिं वड्ढ बहु पाप आप आपिहि पक्खालइ ।
गति कहइ वीर सत्तम नरय मगहराय अचरिज भयउ ।
तिणि समइ देव जय जय भणइं प्रसनचंद केवलि जयउ ॥ ८ ॥
भरहसरिसु बल झुज्झि बुज्झ संजम अणुसरयु ।
कुण वंदइ लहुभाय ठाय तिणि कासग्ग करयु ।
इह ऊपानं नाण माण धरि वच्छर रहियु ।
सहइ भुक्ख बहु दुक्ख तह वि न हु केवल लहियु ।
नियवहिनिवंभिसुंदरिवयणि मयमयगल जव परिहरइ ।
रिसहेसरनंदणवाहुवलि सयल कज्ज तरुणि सरइ ॥ ९ ॥
कहिय इंदि अतिरूप सुणिय सुर वंभणवेसिहिं ।
पुहवि पत्त मज्झणइ रूप पेक्खइं सुविसेसिहिं ।

कियसिणगार सणंकुमार नरनाह निरंतरु।
हक्कारइ अत्थाणि जाणि आवि देसंतरु।
ग्वणि देहि हाणि इम वयण सुणि रज्ज छंडि संजम गहिउ।
सयसत्त वरिस चारित्तधर सहइ रोग लद्धिहिं सहिउ ॥ १० ॥
करइ रज्ज कंपिल्लनपरि छक्खंडनरेसर।
जाइसमरणि जाणि पुव्वभवबंधव मुणिवर।
बोहइ बहु उवएस सहसि पुण तोइ न बुज्झइ।
भोग भवंतरि बद्ध तिण विसयारस मुज्झइ।
सो बंभदत्त बंभणि किउ अंध अधिक पावग करी।
संपत्तउ सत्तउ सत्तमनरगि सु जि साधु पत्त सिद्धहं पुरी ॥ ११ ॥
सेणियकुलि कोणियनरिंदसुय निवइ उदाइय।
पाडलिपुरि गुरुभत्त रत्त पोसहसामाइय।
खत्तियपुत्त जाणि तिणि देसह कड्ढिउ।
उज्जेणि पज्जोयराय ओलग्गइ अणिट्ठिउ।
इणि वयरि अवर अलहंत छल वरिस बार व्रत धारयुं।
तिणि दुट्ठि तह वि अवसर लहवि निव उदाइ निसि मारयु ॥१२॥
चंपापुरि सुनार नारिसयपंचह सामी।
सासिमत्त अहरत्ति गेह नवि छंडइ कामी।
तिणि मारी इक नारि अवरनारिहिं सो मारीउ।
पढम भज्ज नररूपि विप्पकुलि सो पुण नारीउ।
सयपंच भज्ज जे चोर तस घरणि इकु सा नारि हय।
पहुवीरपासि पुच्छइ सु नर जा सा सा सा विप्पधय ॥ १३ ॥
कोसंबी सामि सुर वीर वंदइ सचिमाणय।
मिग्गावइ महासत्ति जंत चंदण नवि जाणइ।
निसि एकाही जाइ पाइ लग्गेवि खमायइ।
पडिवज्जइ निपदोस रोस मिल्हइ मिल्हावइ।
सुहभावि शुद्ध वेयल भयु भुजग विनाणिहि जाणियउ।
जिम पयसणी स भवपार गय विनय अंगि तिम आणियउ ॥१४॥
जंबूकुमर विलासभवणि पडिबोहइ भज्जह।
प्रभव पंचसयजुत्त पत्त तहिं परपणवज्जह।

कणयनवाणुंकोडि छोडि व्रत थंभइ सुहमणि ।
मं पिरुवि तसु वयणि मगल पडिबुज्झइ मगणि ।
सगवीसअधिकसयपंचमिउं रायगिहि संजम लएउ ।
सो दूसमि पंचमगणहरह सीस चरिमकेवलि भएउ ॥ १५ ॥
सुंसुमरागिहिं रत्त पत्त रायगिहिनगरिहिं ।
दास चिलाइपुत्त जुत्त पणयरि बहुचोरिहिं ।
कुंयरि करीय करि नइ दुट्ठ अट्ठगिहिं अणुमरिउ ।
थाहर पत्तउ पुट्ठि मिट्ठि पुत्तिहिं परियरिउ ।
सो रिरिक दिक्षि त्रिहु अक्षरिहिं सग्गसीस छंदइ करम ।
कीडियहं कट्ठि अदइ दियमि महरसारि दीसइ परम ॥ १६ ॥
जायवपुत्त जिणिंदसीस ढंढण गुणजुग्गह ।
अंतराय जाणिइ लेइ नियलद्धि अभिग्गह ।
बारवई छम्मास भमइ गुणि रमइ समिद्धउ ।
भुक्त दुक्त बहु सहइ लहइ आहार न सुद्धउ ।
मोदकसीहकेसरसहिय कर्म कूटि केवल कलिउ ।
संपत्त सिद्धि संपत्ति सुह तपतरु इम पुप्फिय फलिउ ॥ १७ ॥
हुंति जि पंडियपवर अवरदुव्वयणि न कुप्पइ ।
खंदगसूरिसुसीस जेम आयार न लुप्पइ ।
पालयकयउवसग्ग लग्ग मण तीहं सज्झाणिहिं ।
जंत्रिहिं जीविय चत्त पत्त सवि सिद्धह ठाणिहिं ।
सो अग्गिदड्ढ नरगिहिं गयउ वाडव भव भमिसिइ घणउ ।
भो भविय भावि इम कोह अरि खंतिखग्गि हेलां हणउ ॥ १८ ॥
पुज्जइ सुरवर पाय राय नितु नमइं निरग्गल ।
तपि सिज्झइं नवनिद्धि सिद्धि सवि सरइं समग्गल ।
तपह लेस हरिएसबलह जिम जगि जस होवइ ।
न कुलक्कम न प्पसिद्धि रिद्धि नवि तसु कुइ जोवइ ।
तिंदुक्क जक्क पयतलि लुलइ बहुबंभण बोहिय बलिहिं ।
कोसलियधुयपरिणीति जीय भजीय सुद्धि अच्छिपकुलिहिं ॥ १९ ॥
एसु साहुआचारसार जइ लोभि न दुल्लइ ।
वयरसामि संपत्त नयरि पाडल सम तुल्लइ ।

सुणवि तासु गुणवत्त रत्त धणसिट्ठिकुमारी ।
कणयकोटिसंजुत्त पत्त सासइं घरनारी ।
गुरुवयणवयणपडिबोह सुणि सुद्धसीलसंजमि रहि ।
जिम तेणि मुक्क तिम मुक्कीइ रमणि रयणकोडिहिं सही ॥ २० ॥
नंदिसेण दोहग्गनडिउ निद्धणबंभणसुय ।
भवविरत्त चारित्त गहवि तव तवइ अचब्भुय ।
वेयावच्चपसंस इंदकियकसिहिं पहुत्तउ ।
बंधिय अंति नियाण सग्गि सत्तमि सो पत्तउ ।
दसचउरसारनरवयरधूयसहसबहुत्तरिरमणियर ।
सोहग्गसार वसुदेव हुय हरिकुल वंसपयासकर ॥ २१ ॥
पत्त दिवसि चारित्त कन्हलहुबंधव रयणिहिं ।
गयसुकुमाल मसाणि रहिउ काउसग्गि जिणवयणिहिं ।
बंभणि बंधवि पालि सीसि वहसानर दिन्नउ ।
सिरह सरिस दुक्कम्म दहवि मुणि तक्खणि सिद्धउ ।
तस दुट्ठदुरियभारभरिय उयर फुट्ट नरय गमह ।
जिम सहिउं तेणि तिम संसहु लहु लच्छि सुपरक्कमह ॥ २२ ॥
थूलभद्द गुरुवयणि कोसवेसाहरि पत्तउ ।
चित्तसालि चउमासि रहिउ रसविगइनिरत्तउ ।
पुव्ववेर संभारि समर समरंगणि जित्तउ ।
जिणसासणि जयवंत सुहड सुपरिहिं विदित्तउ ।
खरग्गधारसिरि संचरिउ सरिउ सीह जिम इक्कमन ।
जे सीलभाव दुक्कर धरइं ते सुसाहु ते धन्न धन ॥ २३ ॥
तवसी इक्क उपकोसगेहि गिउ गुरु अवमन्निय ।
थूलभद्दमुणिसरिसु करिसु तव इम मनि मन्निय ।
अत्थलाभ सुणि वयण रयणकंबल भणि चल्लइ ।
सहवि अवत्थ सुवत्थ आणि वेसाकरि मिल्लइ ।
चंपेवि खालि पडिबोहिउ सुगुरुपासि पत्तउ भणइ ।
निंदीइ लोकि सो गुरुवयण अप्पमाण इह जो कुणइ ॥ २४ ॥
गुणिअणसरिसउं गव्व म करि मूरख मच्छरि धमि ।
न हु निव्वडइ समत्थ जइ वि गहह गयमरकमि ।

सुहडभणी संभूतविजय दुक्कर ति पसंसिय ।
तसु सीसिहिं पुण थूलभद्दमुणिवरगुण विसिय ।
तिणि कम्मि कोसवेसिहिं नडिऊ चडिउ हत्थ दुज्जणनणइ ।
अपकित्ति अलिय अज्ज वि अजस महिमंडलमाहि रणाझणइ ॥२५॥
म करउ मच्छर माण जाण सरिसउ जगि कोइ ।
पूरउ पुण्य प्रभावि पावि पुण हीणउ होइ ।
बाहुसुबाहु सुसाहु सुणवि गुण किउ मनि मच्छर ।
तिणि हीणत्तण पत्त पीढमहपीढिहिं दुहकर ।
परजम्मि बंभिसुंदरि सुधूय महि महिला महियलि सुणउ ।
सिरिरिसहभरहबाहुबलिहिं त्रिहुं प्रभाव पुन्नहतणउ ॥ २६ ॥
अणगल नीर विपार सुहम जीवाइअरक्खण ।
इण कारणि बहुकट्ठ अप्पफल कहइ वियक्खण ।
छट्ठिहिं सट्ठिसहस्स वरिस तप तपइ अज्ञानिहिं ।
पारण पुण इकवीसवारजलधोइयधानिहिं ।
सो तामलि रिसि एरिस तपी मास दुन्नि अणसणि सरिउ ।
ऊपन्न इंद्र ईसाणि तिणि मुक्कमग्ग न हु अणुसरिउ ॥ २७ ॥
कंबलरयणविनाणि जाणि जग उत्तमचंगिम ।
नरवरपिक्खणि जाइ माइ पुत्तह पभणइ इम ।
आवि इक्क खण पुत्त पत्त सेणिय तुह मंदिर ।
लेउ क्रियाणउं माइ ठाइ ठावउ जिणि तिणि परि ।
न क्रयाणउं कुइ एउ सामि तुम्ह सालिभद्द य वयण सुणि ।
भववासविरत्त चरित्त लिइ छंडि सुक्क सहु कणयमणि ॥ २८ ॥
अवंतीसुकुमाल नयरि उज्जेणि पसिद्धउ ।
नलिणीगुलमविचार सुणवि तक्खणि पडिबुद्धउ ।
अज्जसुहत्थिमुणिंदहत्थि वय लेवि मसाणिहिं ।
कासगि रहिउ सीयालि खद्ध मण लग्गु विमाणिहिं ।
सुहझाणि ठाणि तिणि सुर हुओ रमणि बत्तिसे व्रन लिउ ।
तसु नंदणि तिणि थानकि पछइ महाकालदेउल किउ ॥ २९ ॥
रायगिहि मेयज्ज भज्जनवयर विवहारिउ ।
पुव्वमित्त सुरि बोहि दिक्क दुक्किहिं लेवारिउ ।

विहरंतउ तिहि पत्त दुहसोनारइ मंदिरि ।
पंचिंदिय पणाय जय रुक्ख पक्क वडउ तिणि लग्ग सिरि ।
दुहगाढ दिट्ठि दुइ नीकलीय दलिय धरणि निवडु भणउ ।
लग्ग पंखिबाण रक्खा करो धरी ध्यान सिद्धिहि गयउ ॥ ३० ॥
भणगिरिसिखरणिसुनेहउपरि जायउ जाईसर ।
सम्मामिउ पिउपासि पयर संपत्तउ पयपर ।
लग्ग सम्मोवि मुणिकहि सुरिहि पायण अणुजाणीय ।
भत्त सोत्तगिरिसीस जेहि मलिय इय पाणीय ।
जे माणाणा मनि परिहरी सुगुरुवयण इम सहहइ ।
ते सुक्क सरीरु सुकुलीण सविगुणनिलाण गुरुवहि लहइं ॥ ३१ ॥
संगमथुरि जिणदाण पासि संजमविहि रक्खइ ।
धम्मकालि लग्ग सीस दत्त गुरुदोस निरिक्खइ ।
चित्तविचार सविज्ज पिट्ठ अंगुलि दिप्पंतिय ।
निम्मयास नितु सरसु अमणु दीपय मणि चिंतिय ।
अप्पउ गुनि अप्पउं सगुण निगुण भणवि गुरु परिभवइ ।
पोरंधयार घण सह करि सम्मदिट्ठि सुर निरुवइ ॥ ३२ ॥
वद्धमाण विहरंत नगरि सावत्थिहि आयइं ।
गोसालउ पउसाल आप निग्गंथ भणायइ ।
संखलिपुत्तसरूव कहइ पहु पुच्छिउ सीसिहि ।
जिणवरसंमुह सुक्क तेउलेसा तिणि रीसिहि ।
भं पिक्कि सुगुरुपरिभव अगह सुनरकत्त मुनि विधि थयउ ।
तिणि तेजि दहु आराधना करवि सविग अच्चुति गयउ ॥ ३३ ॥
नालियपादि नरिंद नयरि सेतंबी पएसी ।
पासमीस विहरंत पत्त तहि गणहर केसी ।
नरयगामणि इकचित्त सुगुरुवयणिहि पडिबोहिउ ।
सावयधम्म सुरम्म करवि तिणि अप्पउं सोहिउं ।
लहुकालि काल करि सु जि सरिउ सूरिआभसुविमाणि सुर ।
इम दुरियदुक्क दूरिहि हणी सयल सुक्क साधइ सुगुरु ॥ ३४ ॥
तुरमिणिपुरनरिंद दत्त बंभणकुलि बहुबल ।
माउलकालिगसूरिपासि पुच्छइ जत्तह फल ।

अंगपीड अंगमिय सुगुरु सचं चिय जंपइ ।
जागि जीववधि नरय सुणवि सु जि कांपइं कंपइ ।
अहिनाण जाण सत्तामदिवसि मलप्रवेश मुहि तुझनणइ ।
दक्खिन्न दुट्ठभय परिहरिय धम्मवयण मुणि इम भणइ ॥ ३५ ॥
आसि मरीइ मुणिंद भरहसुय नियवय छंडइ ।
कियपरिवायगवेस रिसहपहुसरिस न हिंडइ ।
पडियोहइ बहुलोय दिक्ख जिणपासि लियारइ ।
अन्नदिवसि अनिकुटिल कपिल तसु वयण विचारइ ।
तसु शिष्यकाजि फूड नवि कहइ इत्थ उत्थि बहु धम्म छइ ।
भव कोडिसागर भमिउ हुउ वीरजिण नउ पछइ ॥ ३६ ॥
कनकमरगि मलभइ नवइ नव तुंगियगिरिसिरि ।
जाइ सरण इक हरिण रहइ अहनिसि रिद्धिपरिसरि ।
बहुकालि रहकार पत्त यनि सान्त कलावइ ।
जिमगोल जाणेवि लेवि मुणि मृग लहि आवइ ।
भो दिवइ दान भो सुहमन भो विहुगुण मनि चिंतवइ ।
सिरि पडइ झाल समकाल त्रिहुं संभलोय सुरमनि हवइ ॥ ३७ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]

दीवअवधि कासग्ग करिय निचल हुइ पालइ ।
दासी पुण दीवेल घल्लि चउपहर उजालइ ।
पूरिय प्रतिज्ञ प्रहउग्गमणि परम प्रीति पामिउ पवर ।
सुकुमालअंग सुहझाणमण सग्गलोइ संपन्न सुर ॥ ४० ॥
सावय सागरचंद रहिउ कासग्गि महावनि ।
कमलामेलाहरणवैर नभसेन धरइ मनि ।
घल्लइ सिरि अंगार तह वि सो झाणनिरत्तउ ।
पोसहवय दृढ पालि टालि दुह सग्गि पहुत्तउ ।
जइ हुंति दुसह उवसग्ग सहइ न गिहत्थ सुकुमालतणु ।
ता अइदुक्करचारित्तधर साहु थेम न सहंति पुण ॥ ४१ ॥
चंपापुर अट्ठारकोडिधणवइ कोडुंबिय ।
पोसह करि कासग्गि रहिउ निसि भुज आलंबिय ।
इंद्रप्रसंस असहंत अमरेहिं परिरक्खिय ।
मरागइंदभुयंगघोररक्खसभय दक्खिय ।
न हु चलिउ मेरुचूलाअचल कामदेव गिहवइ सुधिर ।
पहुवीर पयासिउ प्रहसमइ सीसवग्गअग्गलि सुथिर ॥ ४२ ॥
रायगिहि इक रंक अछइ अइदुक्खिउ अग्गइ ।
उज्झाणी जण जत्त पत्त तहिं भिक्क सु मग्गइ ।
अलहंतउ अइरोसि दोसि नियकम्मिहिं नडिउ ।
चरिसु लोग सग्गग्ग एम चिंतिय गिरि चडिउ ।
ढोलेइ ढोल परवसतणा गडघडाट सुणि नट्ठ सहु ।
पापाणि तेणि सो चंपिऊ नरयदुक्ख पामिऊ दुसहु ॥ ४३ ॥
पक्खमाण पय लिऊ जाव बीजऊ वरसालऊ ।
मुंड तुंड मंडेवि पुंछि विलगऊ गोसालऊ ।
जिणवयणिहिं विधि जाणी तेजलेस्या तपि साधी ।
तह अट्ठंगनिमित्त पढ वि विद्या निण लाधी ।
उम्मग्गचारि अनरथभरिउ गुरुहोरी गरविहिं नडिउ ।
मंखलिसुय मोघ विहेम करि दुहसायरि दुत्तरि पडिउ ॥ ४४ ॥
दृढपहारि पट्ट पोर जाइ कुसथलिमिउं चोरिहिं ।
खीरकड्डि धावंत विप्प मारिउ तिणि घोरिहिं ।

वंभणभज्ज सगब्भ हणिय बालक फुरकंतउ ।
पिक्खवि भववेरग्गि लेइ संजम दिप्पंतउ ।
संभरणअवधि छंडिय असण तिणि ज गामि छम्मास रहि ।
अक्कोस बंधवह दुसहसह सिद्धि पत्त दुक्कम दहि ॥ ४५ ॥
वीरसेणसेवक्क सहसमल्ल त्ति पसिद्धउ ।
कालसेनरिउराय जेण विहुबांहिहिं बद्धउ ।
तिणि गुणि संघनरिंदि किद्ध सामंत विदित्तउ ।
वेरग्गिहिं व्रत लेवि तीण अरिदेसि पहुत्तउ ।
पयारिय पूरव बाहुबल कालसेनि कुट्टाविउ ।
सव्वट्ठसिद्धि सुरवर सरिउ कोइ कह वि तस नाविउ ॥ ४६ ॥
सायरधीनियकणयकेतुसुय नंदग नामिहिं ।
दिक्ख लेवि जिणकप्प करइ विहरइ पुरगामिहिं ।
व्रत लिद्धउ तस ताय नेहि मिरि छत्त धरावइ ।
तह वि अवक्कउ बंधुपासि कंतीपुरि आवइ ।
तस वहिन सुनंदा रायवरि मरिग जंतु तिणि दिट्ठ गुणि ।
तरवरि अलोकडंका पडिय हरिय प्राण तस तिणि रणणि ॥ ४७ ॥
दीरघसिउं रहरक्खिय गुरुणी मयणातुरि ।
वंभदत्तनिवपुत्तदहण दक्खइ लक्खाहरि ।
वरधन मंत्रि सुरंगमंगि रक्खिउ परपंगिहिं ।
किरिय किरिय महिमज्झि रत्त पुण लहइ सुरंगिहिं ।
इह कम्म कोइ न हु वहुहउ भवसरूप नडपिक्खणउं ।
मुहियां त्रि मुह मोहिय भणइ हणइ कस पर सहतणउ ॥ ४८ ॥
तेयलिपुरि तिव कणयकेतु पडमावइ राणी ।
मंत्री तेयलिपुत्त भत्त तस पुहिम नाणी ।
ताय मत्त मवि पुत्त राय निय लोभि मरावइ ।
राणी मंत्रि कहेवि एक सुय छत्त रहावइ ।
नासइ पत्त पंचत्त सु त्रि कुंवर राय महलइ किरउ ।
महलइ पुत्त पुहिलसुरवयणि पहिवुद्धउ केवलि निरउ ॥ ४९ ॥
रत्नकोस मवि परवि मरइ पहुत्तउ समरंगणि ।
बन्धुवलिहिं सहिं दिट्ठिमुट्ठिजुद्धिहिं निलउ रणि ।

रोसि चडिउं रणि चक्क भरह भाइसिरि मिल्हइ ।
धिग विसयारसि लुद्ध मुद्ध सासयसुह ठिल्लइ ।
इम चित्ति चिंति संजम सबल बाहुब्बलि कासगि रहिउ ।
भरहेसर पत्त अवज्झपुरि भायनेह कित्तिम कहिउ ॥ ५० ॥
भज्जा विसयविकारिभारि पइमारणि चल्लइ ।
सुरियकंत कलत्त भत्तभोतरि विस घल्लइ ।
रायपएसि सुधम्म रम्म पोसहवय पारिय ।
करइ पारणउं जाव ताव तक्खणि विसि घारिय ।
सुहझाणि ठाणि निअ आणि मण सग्गलोइ संपत्त सुर ।
दुक्कमचारि मा नारि पुण भमइ भूरि भव भीडभर ॥ ५१ ॥
धीरयणि जाणेवि नरय सेणिय चिंतइ मनि ।
कोणिय रज्ज ठवेसु लेसु संजम जाई वनि ।
हल्लविहल्लहं हार गुज्यगयवरसिउ दिज्जउ ।
कूड करी कोणियि रायसेणिय तव बज्जउ ।
निवताय कट्ठपंजरि धरी बाण पाण वे राहवइ ।
सयपंच घाय दिणि दिणि दियइ पुत्तनेह एरिस हवइ ॥ ५२ ॥
वणियपुत्त चाणिक्क कवड बहुबुद्धि वियाणइ ।
चंदगुप्तमाहिज्जकज्जि पव्वयनिय आणइ ।
तत्तसरिसी अतिप्रीति करीय अरिकंटय टालिय ।
नंदनरिंदह रज्जनयरि पाडलि उद्दालिय ।
विसकन्न जाणि परिणाविउ सो वि मित्त जमपुरि लयउ ।
निवकन्न करवि विहडिउ पछइ मित्तनेह एरिस भयउ ॥ ५३ ॥
परसुराम जमदग्गिपुत्त रेणुपअंगुब्भम ।
कत्तविरिय नरनाह हणइ मामीसुय दुद्दम ।
अप्पण पइ तस रज्ज लेवि हत्थिणपुरि रहियउ ।
खत्तियवंस असेस फरसुझालिहिं तिणि दहियउ ।
निवघरणि नट्ठ पच्छन्न ठिय तस सुभूम सुय चक्कवइ ।
निहलइ वंस बंभणतणउ नियनेह एरिस हवइ ॥ ५४ ॥
अज्जमहागिरिसूरि भूरिभवपावनिवारण ।
गिइ जिणकप्पि करंति तस्स तुलणा अइदारुण ।

कुलघरनियसुहसयणसंग निस्सा सवि छंडिय ।
अपडिबद्धविहारसार संजमगुणमंडिय ।
सावयघरि अज्जसुहत्थि गुरि गुणपसंस हरपिहिं करिय ।
अइआदर दिक्खि सुकारणिहिं पाडलपुर तिणि परिहरिय ॥ ५५ ॥
सेणियधारणिपुत्त मेह भज्जह विमुक्किय ।
वीरपासि वय लिद्ध बुद्धि निसि संजम चुक्किय ।
पुव्वजम्म परिकहिय पुण वि थिर किद्धउ वीरिहिं ।
बहुजइजणसंघट्ट सहइं अइदुसह सरीरिहिं ।
सो रायवंसअवयंसमणि मणिन अप्प तृणसम गणइ ।
चापरइ विजयवेमाणि सुह रहिउ सिद्धि घरअंगणइ ॥ ५६ ॥
चेडयधूयसुजिट्ठसुद्धमहासइअंगुब्भम ।
विज्जाहरपेढालपुत्तु विज्जावलदुहम ।
खायगसम्मदिट्ठि अंग इग्यारइ जाणइ ।
तह वि विसयरसरंगि अंगि अतिदूषण आणइ ।
उज्जेणि उमावेसावसिहि करवि कूड हेला हणिउ ।
सो सव्वइ सचइं नरय गय विसयदोस एरिस भणिउ ॥ ५७ ॥
बारवईपुरि पत्त नेमिपहु केवलनाणी ।
दसदसारनरनाह कन्ह निसुणइ जिणवाणी ।
सहसअढार मुणिंदचंद विधिवंदणि वंदइ ।
नरयभूमि चिहुदुक्खक्ख निम्मूल निकंदइ ।
तित्थयरगुत्त बंधइ सुदृढ असुहकम्म हेला हरइ ।
पूजाप्रणामवंदणविणय सगुणसाहुसंगति करइ ॥ ५८ ॥
पंडरह गुरु कहरोसि रीसाल विदित्तउ ।
उज्जेणीउज्जाणि सगुणसीसिहिंसिउं पत्तउ ।
नवपरणीत कुमार हसिय पभणइ दिउ दिक्खा ।
सूरि सीस तस चंपि केस लुंचिय दिय सिक्खा ।
सो सीसभावि संजम लियइ मग्गि लग्गि गुरु सिर धरी ।
निम सहइ घाय दुव्वयण जिम लहइ वेउ केवलसिरि ॥ ५९ ॥
गयकलो परिवरिउ सूयर सुमिणइ मुणि दिट्ठउ ।
तिणि अहिनाणि सुसीससहिय पुण कुगुरु अणिट्ठउ ।

निसि चंपइ अंगार मृगाविण मन्नइ प्राणिउ ।
तय अंगारयमद्द सूरि अभविय इम जाणिउ ।
ते सीस सवे निवपुत्त हुय सूरि करइ परहरभरिउ ।
तिहिं देखि सयंवरि आवते पुव्वजम्म तक्खणि सरिउ ॥ ६० ॥
पुप्फचइसुय पुप्फचूल भइणी तह भज्जा ।
सुमिणि नरयदुह देखी पुप्फचुला पयसज्जा ।
अक्खियसुयसुकलत्त खीणजंघाबाह जाणी ।
आणंती सा भत्तपाण हुय केवलनाणी ।
पुच्छेइ सूरि मह नाण कहिं सु पण गंगभीतरि कहइ ।
तय दुहदेवि उवसग्ग सहि सुगुरु तत्थ केवल लहइ ॥ ६१ ॥
सिद्धि पत्त मरुदेवि तपिहिंविणु इणि आलंबणि ।
के वि करंति पमाय ति पणि अच्छेरयसम गिणि ।
जिणि कारणि पुव्वंमि जम्मि थावरनरभीतरि ।
थोरिसंगि बहु अंगि सहिय दुह कम्म विनिज्जरि ।
सुहभावि पावि परिसुक्कमण सरलसार संतोसमय ।
जिणाणि नाभिकुलगरघरणि रिसह इत्थाणि निव्वाणि गय ॥ ६२ ॥
लद्धि पत्त पत्तो य पुव्व सुहसिद्धि समाणइ ।
अच्छेरयसमहुद्ध बुद्ध किवि ते मनि आणइ ।
निहिसंपत्ति व खित्ति धरवि धियसाय ति संदइ ।
सामग्गी परिहरिय करिय पावग निय दंडइ ।
करयंडुदुमुहनमिनग्गइ चिहुपरित्त चिंतिय सुपरि ।
धरि धम्म रम्म उज्झमसहिय सुह साय अपमाय करि ॥ ६३ ॥
सरसगभसगनियपुत्तवहिणि सुकुमालिय कुमरी ।
चंपापुरि चारित्त लेइ रुपिहिं किर अमरी ।
फिरइ तरुण तस पासि रागि रत्ता गयसमणी ।
रखइ बंधय वेउ लेइ निणि अणसण समणी ।
बहुदिवसि तापि तपि मुरडामुइय जाणि वनि परहवी ।
ओसहविसेसि सु जि सज्ज करि सन्नपाहि मोहिणि हवी ॥ ६४ ॥
सु बहुसीसपरिवारसार सिरिजंबविदिक्खइ ।
महुरापुरि सिरिमंगुसूरि रसणिद्दिं जिक्खइ ।

नयरग्वालि उप्पन्न जक्क बहु दुक्क निहालइ ।
सुविहियजणपडिबोहकत्ति नियजीह दिखालइ ।
जिप्पइ मुणिंद रसणिंदियह अणजित्तइ एरिसु हुउ ।
जग्गइ जि जोग जुगतिहिं सदा म म म मोहनिद्दां सुउ ॥ ६५ ॥
गिरिसुय ग्रहिउ पुलिंदि पुप्फसुय तवसी सेवइ ।
सुयडा अडवीमज्झि अछइ पक्खोदर वेवइ ।
इक्क भणइ लिउ मारि अवर पुण विणय पयासइ ।
अंतरसंगविसेसि दोस गुण नरनइपासइ ।
इम जाणि निगुणसंगति तिजउ सगुणसंग अणुदिण करउ ।
झगमगइ जेम जगमज्झि जस भवसमुद्द तक्कणि तरउ ॥ ६६ ॥
सिरिथावच्चापुत्तसूरि सुकसूरि अणुक्कमि ।
सेलगसूरि पमायपंकि पडियउ अइदुहमि ।
गया सीस सवि छंडि एक्क पंथग मुणि रहिउ ।
खामंतइं पगि लागि पव्ववासरि तिणि कहियउ ।
मियमहुरवयणि सुनिपुणपणइ ठविउ सुद्धसंजमि स गुरु ।
सो सूरि पुण वि चारित्त वरि सित्तुंजय सिद्धउ सधर ॥ ६७ ॥
सेणियनंदण नंदिसेण बारस संवच्छर ।
वीरसीस वय छंडि वेस धरि वसइ समच्छर ।
दस प्रतिबोध्याविणु न लेइ आहार निरंतर ।
इक्क न बुज्झइ भणइ वेस दसमा तुम्हि सुंदर ।
इण वेसयवणि पुण वेसधर चरण धरवि सुर संपजइ ।
इय जस्स सत्ति देसुणतणी अहह सो वि संजम तिजइ ॥ ६८ ॥
वरससहस तव कट्ठ करिय कंडरिय न सुद्धउ ।
अंति दुट्ठपरिणाम कामवश नरयनिबद्धउ ।
अचिरकालि परिपालि सुद्ध संजम संपत्तउ ।
पुंडरीक सव्वट्ठसिद्धि सुहबुद्धिनिरुत्तउ ।
बहु दुक्क सहवि नवि लद्ध सुह अप्प दुक्कि बहुसुख लहिउ ।
बिहु बंधव एवड अंतरउ भावभेदि भगवति कहिउ ॥ ६९ ॥
नयरि कुसुमपुरि राय भाय दुइ ममि सूरप्पह ।
सर्मा न मन्नइ धम्म रम्म मन्नइ विसयासुह ।

नपजपविण सो पत्त नरगि ओजइ दुहतत्तउ ।
करवि सुर दुहचूर सग्गि सत्तमइ स पत्तउ ।
समि रडइ सुरसुरअग्गलिहिं तणु तच्छिय दुह दिक्खवउ ।
सो भणइ जीव विणु तणु दहिहिं नरयदुरुह किम रक्खिवउ ॥ ७० ॥
सुग्गइमग्गपईव नाण जे दिवइं निरुप्पम ।
तिहं गुरु किं पि अदेय नत्थि जगमज्झि जगुत्तम ।
दिक्खउ जेम पुलिंदि सिवगजरुह नियलोयण ।
तिण सरिसंउं सुर पत्त करइ भत्तह दिय चोयण ।
केवलइं दाणि तूसइ न गुरु अंतरंगभत्तिहिं वरइ ।
तिणि कारणि विहुपरि करि विणय जिम बाहिरि तिम अंतरइ ॥७१॥
अंबयोर पंडाल पडिउ अभयटकरि कंपइ ।
दय नामिणी सुविज्ज मज्झ इम सेणिउ जंपइ ।
विणयविपज्जिय विज्जवज्ज करियइ नवि जग्गइ ।
सिंहासणि बइसारि भारि गुरु करि सो मग्गइ ।
ओ कहइ विज्ज ओ लहइ फल विहुह कज्ज तरुणि सरिउ ।
इण कारणि जिणसासणि विणय सुगुरु सीस अणुपमि करिउ ॥७२॥
दग्गइपरउ निदंडि तामलित्ती पुरि अच्छइ ।
नापितपासि सु विज्ज लेवि देसंतरि गच्छइ ।
महिमा मोहिम पत्त दंड गयणंगणि रहियउ ।
पुच्छिउ नरयरि जाम ताम सुसउ नवि कहियउ ।
गुरुलोपि कोपि विज्जा गई गयणदंड गडयडि पडिउ ।
लज्जियउ लोकि हसिउ मयलि इम सु नाणनिन्हवि नडिउ ॥ ७३ ॥
बंभण एक अनेककूडकवडाइनिरुत्तउ ।
उज्जेणिहिं कढियउ देसि चम्मारि स पत्तउ ।
त्रिहुं गामहं विचालि करइ सप वेसि त्रिदंडी ।
भगतलोकघरमार सुसइ निसि सु जि पाखंडी ।
अहच्च हिउ हत्थि नरवरतणइ नयण कढि नडियो घणउ ।
बहु झुरइ अति सोचइ सु चिर निंदइ नियकुडरुणउ ॥ ७४ ॥
दुहरंग वरदेव कुट्ठिरूपिहिं पहु वंदइ ।
छींक करइ जव वीर नाम मरि कहि अभिणंदइ ।

सेणियप्रति चिर जीव अभयप्रति जा पड चिहुपरि ।
कालसूरप्रति कहइ म मरि म म जीविय अणुसरि ।
मगहेसर पुच्छइ ए कवणु कवण एम परमत्थ पुण ।
जिण भणइ विप्पसेट्ठयचरिय चिहु प्रकारि नरआचरण ॥ ७५ ॥
यरि अंगमीह मरण सरण जिणधम्म धरिज्जइ ।
जियहिंसा पुण घोर घोरदुहहेउ न किज्जइ ।
कालसूरियह पुत्त सुलस जिम पाव निवारउ ।
परपीडा परिहरह तरह संसार असारउ ।
कुलकारण किं पि म लिक्खयउ गुणह रूप गुम्यडि धरउ ।
परलोगमग्ग जाणउं सुपरि कुपरि कुकम्म म आयरउ ॥ ७६ ॥
हेजिह हित अरिहंत कह वि नवि प्राणि करावइ ।
तं पुण दिइ उपदेस जेण किड्ड सुख आवइ ।
जं सुरवइ सुरवग्गि सग्गि एरावणवाहण ।
जं भरहाहिव रज्जसज्ज भुंजइ सुहसाहण ।
जं जं अवर वि सुरअसुरनरमुक्क सुक्क माणइ घणउ ।
तिहुयणह मज्झि तं सयल फल जिणवरउवएसहतणउं ॥ ७७ ॥
खत्तियकुंडि जमालि वीरजामाइ खत्तिउ ।
सुहंसणभत्तार सार वयभारपवत्तिउ ।
नवि मन्नइ किज्जंत किड्ड इय आगमवाणी ।
निन्हवि तेण कुदिट्ठि दुट्ठि किय बहु गुणहाणी ।
नियकित्ति सुसिय सुर किव्विसिय मिलिउ मिच्छमइ मोहियउ ।
सयपंच साहु साहुणि सहस ढंकसट्ठि पुण बोहियउ ॥ ७८ ॥
जिम मासाहस पंखि मुखिहिं मा साहस जंपइं ।
वग्घवयणि पइसेवि मंस लिंतउ नवि कंपइ ।
तिम अवरह उवएस दिंति किवि फुडवयणक्करि ।
पणि अप्पणि न करंति रम्म जिणधम्म तणीपरि ।
वेरग्गवाणि नड उचरइ जलहि जालि पाणी गलइ ।
इम कम्मभारि भारिय भणी जाइ भूर भवजलतलइ ॥ ७९ ॥
धम्मबीय जिणराइ आणि दीवंतर दिड्डउ ।
अविरति सयल वि खड्ड देसविरते अध खड्डउ ।

पासत्थे पुण खुट्टि त्तिन्ति ग्वाइव सहु हारिउ ।
संजमि ए सुभम्वित्ति सव्व वावीय पद्धारिउ ।
त्रिहु भेदि जीव ते करसणी राजदंडि अप्पउं दहइ ।
सुविहियमुणि रायपसायवसि सुग्व सुगालि लच्छी लहइ ॥ ८० ॥
इणिपरि सिरिउवएसमालकहाणय ।
तवसंजमसंतोसविणयविज्जाइ पहाणय ।
सायपसंभरणत्थ अत्थपय छप्पयछंदिहिं ।
रयणसीहगुरीससीस पभणइ आणंदिहिं ।
अरिहंतआण अणुदिण उदय धम्ममूल मत्थइ हउं ।
भो भविय भत्तिसत्तिहिं सहल सयल लच्छिलीला लहउ ॥ ८१ ॥

॥ इति श्रीउपदेशमालासर्वस्थानकछप्पया ॥

समरारासु

पहिलउ पणमिउ देव आदीसरु सेत्तुजगिहरे ।
अनु अरिहंत सव्वे वि आराहउं बहुभत्तिभरे ॥ १ ॥
तउ सरसति सुमरेवि सारयससहरनिम्मलीय ।
जसु पयकमलपसाय मूरखु माणइ मन रलिय ॥ २ ॥
संघपतिदेसलपुत्तु भणिसु चरिउ समरारासणउ ए ।
धम्मिय सोलु नियारि निसुणउ श्रवणि सुहायणउ ए ॥ ३ ॥
भरह सगर दुइ भूप चक्रवति त हुअ अतुलबल ।
पंडव पुहविप्रचंड नीरसु उधरइ अनिसबल ॥ ४ ॥
जायइतणउ संजोगु हुअउं सु दुखम नय उदए ।
समइ भलेरइ सोइ मंत्रि बाहडदेउ उपजए ॥ ५ ॥
हिय पुण नवी य ज थान जिणि दीहाइइ दोहिलए ।
थत्तिय थग्गु न लिंति साहसियह साहसु गलए ॥ ६ ॥
तिणि दिणि दिनु दिखाउ समरसीहि जिणधम्मयणि ।
तसु गुण करउं उचोउ जिम अंधारइ फटिकमणि ॥ ७ ॥
सारणि अमियतणी य जिणि पहावी मरमंडलिहिं ।
किउ गूलजुगअवतारु कलिजुगि जीनउ बाहुबले ॥ ८ ॥

ओसवालकुलि चंदु उदयउ एउ समानु नही ।
कलिजुगि कालइ पाखि चांद्रिणउं सचराचरिहिं ॥ ९ ॥
पाल्हणपुरु सुप्रसीधु पुन्नवंतलोयह निलउ ।
सोहइ पाल्हविहारु पासभुवणु तहि पुरतिलउ ॥ १० ॥

भास—हाट चहुटा रूअडा ए मठमंदिरह नियेसु त ।
वाविकूवआरामवण घरपुरसरसपएस त ।
उवएसगच्छह मंडणउ ए गुरु रयणप्पहसूरि त ।
पम्मु प्रकासइं तहि नयरे पाउ पणासइ दूरि त ॥ १ ॥
तसु पट्टकरूडीसिरिमउडो गणहरु जगदेवसूरि त ।
हंसवेगि जगु जगु रमइ सुरसरीपजलपूरि त ॥ २ ॥
तसु पट्टकमलमरालुडउ ए कहसूरि मुनिराउ त ।
रयणकलुवि जिणि भंजिवउ ए मयणमाहु भडिवाउ त ॥ ३ ॥
तिहसूरि तसु भीमवरो जिम पवनइं इकलीह त ।
जसु पयांसणा वालहिजण दूरिपलोलपलोह त ॥ ४ ॥
तसु सीसाणणि सोहइं ए देवसुसूरि वईदु त ।
उदयाचलि जिम सूरवरु उवसमइ जिण दंदु त ॥ ५ ॥
तिह पट्टपाटअलंकरणु गच्छआधारभारु त ।
हरु हरइ संसारसयलह ए सिरिसुरिसुरु पहु त ॥ ६ ॥
सोह जसु वाणीरायहंसु सिरिदेवसूरि विवेक त ।
[illegible] ए [illegible] [illegible] त ॥ ७ ॥
[illegible] कुलि [illegible] [illegible] त ।
[illegible] त [illegible] त ॥ ८ ॥
[illegible] त ॥ ९ ॥
[illegible] त [illegible] त ॥ १० ॥
[illegible] त ॥ ११ ॥
[illegible] त ॥ १२ ॥

ोपभाषा-रतनकुपि कुलि निम्मली य भोलीपुत्तु जाया ।
सहजउ साहणु समरसीहु बहुपुत्तिहि आया ॥ १ ॥
लहुअलगइ सुविचारचतुर सुविवेक सुजाण ।
रत्नपरीक्षा रंजवइ राय अनु राण ॥ २ ॥
तउ देसल नियकुलपईव ए पुत्र सधन्न ।
रूपवंत अनु सीलवंत परिणाविय कन्न ॥ ३ ॥
गोसलसुति आवासु कियउ अणहिलपुरनयरे ।
पुन्न लहइ जिम रयणमाहि नर समुद्रह लहरे ॥ ४ ॥
चउरासी जिणि चउहटा वरवसहि विहार ।
मह मंदिर उत्तंग चंग अनु पोलि पगार ॥ ५ ॥
तहिं अछइ भूपतिहिं भुवण सनम्मणिहि पसत्थो ।
विश्वकर्मा विज्ञानि करिउ थोइउ नियहत्थो ॥ ६ ॥
अमियसरोवरु सहसलिंगु इकु धरणिहिं कुंडलु ।
किसिपंसु किरि अवरेसि मागइ आग्वंडलु ॥ ७ ॥
अज्ज वि दीसइ जत्थ धम्मु कलिकालि अगंजिउ ।
आचारिहिं इह नयरतणइ सचराचरु रंजिउ ॥ ८ ॥
पातसाहि सुरताणभीयु तहिं राजु करेई ।
अलपग्वानु हींदूअह लोय घणु मानु जु देई ॥ ९ ॥
साहु रायदेसलह पुत्तु तसु सेवइ पाय ।
कला करी रंजविउ ग्वानु बहु देइ पसाय ॥ १० ॥
मीरि मलिकि मानियइ समरु समरथु पभणीजइ ।
परउवयारिपमाहि लीह जसु पहिली य दीजइ ॥ ११ ॥
जेठसहोदरि सहजपालि निज प्रगटिउ सहजू ।
दक्षणमंडलि देवगिरिहि किउ धम्मह धणिजू ॥ १२ ॥
चउवीसजिणालय जिणु टविउ सिरिपासजिणिंदो ।
धम्मधुरंधरु रोपियउ धर धरमह कंदो ॥ १३ ॥
साहणु रहियउ थंभनयरि सायरगंभीरे ।
पुव्वपुरिसकीरितितरंडु पूरइ परतीरे ॥ १४ ॥
ोपभाषा-निसुणऊ ए समहप्रभावि तीरथरायह गंजणउ ए ।
भवियह ए करुणारावि नीठुरमनु मोहि पडिउ ए ।

समरऊ ए साहसधीरु वाहविलग्गउ वहु अ जण ।
बोलई ए असमवीरू दृसमु जीपइ राउतवट ए ॥ १ ॥
अभिग्रहू ए लियइ अविलंबु जीवियजुव्वणवाहवलि ।
उधरऊ ए आदिजिणबिंबु नेमु न मेल्हउ आपणउ ए ।
भेटिऊ ए तउ पानपानु सिरु धूणइ गुणि रंजियउ ए ॥ २ ॥
वीनती ए लागु लउ वानु पूछए पहुता केण कज्जे ।
सामिय ए निसुणि अडदासि आसालंवणु अम्हतणउ ए ।
भइली ए दुनिय निरास हू ज भागी य हींदूअतणी ए ।
सामिय ए सोमनयणेहिं देपिउ समरा देइ मानु ॥ ३ ॥
आपिऊ ए सव्ववयणेहिं फुरमाणु तीरथमाडिवा ए ।
अहिंदर ए मलिकआएसि दीन्ह ले श्रीमुखि आपण ए ।
पनमन ए पानपएसि किउ रलियाइतु घरि संपत्तो ।
पणमई ए जिणहरि राउ समणसंघो तहि वीनविउ ए ॥ ४ ॥
संघिहि ए कियउ पसाउ युक्ति विमामिय वहयपरे ।
सामण ए वर सिणगारु वस्तपालो तेजपालो मंत्रे ।
दरिसण ए छह दानारु जिणधर्मनयण ये निम्मला ए ।
आइसी ए रायसुरताण तिणि आर्णाय फलही य पयर ॥ ५ ॥
दृसम ए तणी य पुणु आण अवसरो कोइ नही मसुतणउ ए ।
इह जुग ए नही य वीमासु मनुमात्रे इय किम छरए ।
तउ तुहू ए पुन्नप्रकासु करि ऊधरि जिणवरधरमु ॥ ६ ॥
चतुर्थभाषा–संघपतिदेसलु हरषियउ अति धरमि सनेहो ।
पणमइ सिधसुरिपयकमलो समरागरसहितो ।
वीनती अम्हतणी प्रभो अवधारउ एक ।
तुम्ह पसाइ सकल किया अम्हि मनोरहनेक ॥ १ ॥
सेत्रुजगिरिथ ऊधरिवा ऊपन्नउ भावो ।
एकु मनोवनु आवगउ तुम्हि दियउ सहाउ ।
मदनु पंडितु आइसु लहवि आगमणि पहुगइ ।
गुगुरवयनु मनमाहि धरिउ गाडउ अति रूगइ ॥ २ ॥
राजेरा तहि राजु करइ महियाणदेउ राजउ ।
जीवदया जगि जागिजए जो वीर सवराजउ ।

पालउ नामिहि मंत्रिवरो तसुनणइ सुरज्जे ।
चंद्रकन्हइ चकोरु जिसउ मारइ बहुकज्जे ॥ ३ ॥
राणउ रहियउ आपुणपई पाणिहि उपकंठे ।
टंकिय पाहइ सुप्रहार भांजइ घणगंठे ।
फलही आणिय समरवीरि ए अतिबहुजपणा ।
समुद्र विरोलिउ वासुगिहि जिम लाभा रयणा ॥ ४ ॥
कुआरसि उछवु हुअउ त्रिसींगमइनइरे ।
फलही देखिउ धामियइ रंगु माइ न सइरे ।
अभयदानि आगलउ करुणारसभरिओ ।
गोत्रि मेल्हावइ पहराहुआ आपइ बहुविओ ॥ ५ ॥
भांडू आव्या भाउघणउ भवियायण पूजइ ।
जिम जिम फलही पूजिजए तिम तिम कलि धूजइ ।
खेला नाचइ नवलपरे घाघरिरवु हमकइ ।
अग्गरिउ देखिउ धामियइ कइ चित्तु न चमकइ ॥ ६ ॥
पालीताणइ नयरि संघु फलही य वधावइ ।
बालचंद्र मुनि वेगि पवरु कमठाउ करावइ ।
किं कप्पूरिहि घडीय देह वीरसायरसारिहि ॥ ७ ॥
सामियमूरति प्रकट थिय कूप करिउ संसारे ।
मागी दीन्ह वधावणी य मनि हरषु न माए ।
देसलजत्रइ चरिति सह रलियातु थाए ॥ ८ ॥

पञ्चमी भाषा-संघु बहुभत्तिहि पाटि बयसारिउ ।
लगनु गणिउ गणधरिहि विचारिउ ।
पोसहसाल समासण देपए ।
सुरिसेगंबरमुनि सवि संमहे ए ॥ १ ॥
घरि बयसवि करी के वि सझाविया ।
के वि धम्मिय हरसि धम्मिय थाइया ।
बहुदिसि पाठविय कुंकुमपत्रिया ।
संघु मिलइ बहुभली य सरज्जाइया ॥ २ ॥
सुहगुरुमिथसुरियामि अहिसिंचिउ ।
संघपति कल्पनक अभिय जिम सिंचिउ ।

कुलदेवत सचिया वि भुजि अवतरइ ।
गृहव सेम भरइं निलकु मंगलु करइं ॥ ३ ॥
पोमवदि सातमि दिवसि सुमुहुत्तिहिं ।
आदिजिणु देवालए ठविउ सुहपित्तिहिं ।
पम्मपोरी य धुरि पवल बुद्ध जुत्तया ।
कुंकुमविंजारि कामधेनुपुत्तया ॥ ४ ॥
इंदु जिम जायरवि चढिउ संगारए ।
सुरवसिरि सालिभाइ निलायए ।
ता किम इयवरो गगहु राखिउ हुउ ।
कारु अत्तालिवि गहुनु इहु लाहा ।
आगमि मुनिवरगेहु सारवगणा ।
सिंहु व सिरइ निम सिंहिण लोप गणा ॥ ५ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ७ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

आगेवाणिहि संचरए संघपति साहूदेमलु ।
बुद्धिवंतु बहुपुंनिवंतु परिकमिहिं सुनिश्चलु ॥ ३ ॥
पाछेवाणिहि सोमसीहु साहुसहजापुत्तो ।
सांगणुसाहु लूणिगहु पुत्तु सोमजिनिजुत्तो ।
जोइ करी असवारमाहि आपणि समरागम ।
चडीय हींड चहुगमे जोइ जो संघअसुहकम ॥ ४ ॥
सेरीसे पूजियउ पासु कलिकालिहिं सकलो ।
सिरपेजि थाइउ धवलकए संघु आविउ सयलो ।
धंधूकउ अतिकमिउ साम लोलियाणइ पहुतो ।
नेमिसुवणि उछवु करिउ पिपलालीय पत्तो ॥ ५ ॥
सप्तमी भाषा-संघिहिं चउरा दीन्हा तहिं नयरपरिसरे ।
अलजउ अंगि न माए दीठउ गिरिवरगिरे ।
पूजिउ परवतराउ पणमिउ बहुभक्तिहिं ।
देमलु देषए दाणे मागणजणपंतिहिं ॥ १ ॥
अजियजिणिंदजुहारो मनरंगि करेवि ।
पणमइ सेत्रुजगिहरो सामिउ सुमरेवि ॥ २ ॥
पालीताणइ नयरे संघ भयलि प्रवेसु ।
ललतसरोवरतीरे किउ संघनिवेसु ।
बाजसहाय लहुभाय लहु आविवउ मिलेवि ॥ ३ ॥
सहजउ साहणु सीहि त्रिन्हइ संगप्रवाह ।
पासु अनइ जिण वीरो वंदिउ सरसीरिहि ।
पंचि करइ जलकेलि सरु भरिउ बहुनीरिहिं ॥ ४ ॥
सेत्रुजगिहरि चडेवि संघु सामि ऊमाहिउ ।
सुललितजिणगुणगीते जणदेहु रोमंचिउ ।
सीपलो वायए पाओ भवदाहु ओलावए ।
भाईय नमिय मरुदेवि संतिभुवणि संघु जाए ॥ ५ ॥
जिणबिंबइ पूजेवो कपडिजरु जुहारए ।
अणुपमसरतहि होई पहुता सीहदुयारे ।
तोरणतलि वरसंते घणदाणि संघपत्ते ।
भेटिउ आदिजगनाहो मंडिउ पत्रोटमहूत्सवो ॥ ६ ॥

आगेवाणिहि संचरए संघपति साहुदेसलु ।
बुद्धिवंतु बहुपुंनिवंतु परिकमिहिं सुनिश्चलु ॥ ३ ॥
पाछेवाणिहि सोमसीहु साहुसहजापूतो ।
सांगणुसाहु लूणिगहु पुतु सोमजिनिजुत्तो ।
जोड करी असवारमाहि आपणि समरागरु ।
चडीय हींड चहुगमे जोइ जो संघअसुहकरु ॥ ४ ॥
सेरीसे पूजियउ पासु कलिकालिहिं सफलो ।
सिरपेजि थाइउ धवलकए संघु आविउ सयलो ।
धंधूकउ अतिक्रमिउ ताम लोलियाणइ पहुतो ।
नेमिभुवणि उछवु करिउ पिपलालीय पत्तो ॥ ५ ॥
सप्तमी भाषा-संघिहिं चउरा दीन्हा तहिं नयरपरिसरे ।
अलजउ अंगि न माए दीठउ विमलगिरे ।
पूजिउ परवतराउ पणमिउ बहुभत्तिहिं ।
देसलु देयए दाणे मागणजणपंतिहिं ॥ १ ॥
अजियजिणिंदजुहारो मनरंगि करेवि ।
पणमइ सेत्रुजसिहरो सामिउ सुमरेवि ॥ २ ॥
पालीनाणइ नयरे संघ भयलि प्रवेसु ।
ललतसरोवरतीरे किउ संघनिवेसु ।
कज्जसहाय लहुभाय लहु आविपउ मिलेवि ॥ ३ ॥
सहजउ साहणु तीहि त्रिन्हइ गंगप्रवाह ।
पासु अनइ जिण वीरो वंदिउ सरतीरिहिं ।
पंपि करइ जलकेलि सरु भरिउ बहुनीरिहिं ॥ ४ ॥
सेत्रुजसिहरि चडेवि संघु सामि ऊमाहिउ ।
सुललितजिणगुणगीते जणदेहु रोमंचिउ ।
सीयलो वायए वाओ भवदाहु ओल्हावए ।
माडीय नमिय मरुदेवि संतिभुवणि संघु जाए ॥ ५ ॥
जिणबिंबइ पूजेवी कवडिजक्षु जुहारए ।
अणुपमसरतडि होई पहुता सोहदुवारे ।
तोरणतलि वरसंते धणदाणि संघपत्ते ।
भेटिउ आदिजगनाहो मंडिउ पत्रोठमहुछवो ॥ ६ ॥

अष्टमी भाषा–चलउ चलउ सहियडे सेत्रुंजि चडिय ए ।
आदिजिणपत्रीठ अम्हि जोइसउं ए ।
माहसुदि चउदसि दूरदेसंतर संघ मिलिया तहिं अति अवाह॥१॥
माणिके मोतिए चउकु सुर पूरइ रतनमइ वेहि सोवन जवारा ।
अशोकवृक्ष अनु आम्र पल्लवदलिहि रितुपते रचियले तोरणमाला ॥२॥
देवकन्या मिलिय धवलमंगल दियइ किंनर गायहि जगतगुरो ।
लगनमहूरतु सुरगुरो साधए पत्रीठ करइ सिधसूरिगुरो ॥ ३ ॥
भुवनपतिव्यंतरजोतिसुर जयउ जयउ करइ समरि रोपिउ द्रिढु धरमकंदो ।
दुंदुहि वाजिय देवलोकि तिहुअणु सीचिउ अमियरसे ॥ ४ ॥
देउ महाधज देसलो संघपते ईकोतरु कुल ऊधरए ।
सिहरि चढिउ रंगि रूपि सोवनि धनि वीरि रतनि वृष्टि विरचियले ॥५॥
रूपमय चमर दुइ छत्त मेघाडंबर चामरजुयल अनु दिन्नदुन्नि ।
आदिजिणु पूजिउ सहलकंतिहिं कुसुम जिम कनकमयआभरण ॥ ६ ॥
आरतिउ धरियले भावलभत्तारिहिं पुव्वपुरिस सगि रंजियले ।
दानमंडपि थिउ समर सिरिहि वरो सोवनसिणगार दियइ याचकजन ॥७॥
भत्ति पाणी य परमुनि प्रतिलाभिय अचारिउ वाहइ दुहियदीण ।
थाविउ सुपम वितु सिडखेत्रि इंद्रउच्छवु करि ऊतरए ॥ ८ ॥
भोलीपनंदणु भलइ महोत्सवि आविउ समरु आवासि गनि ।
तेरहकहसरइ तीरथउद्धारु थउ नंदउ जाव रविससि गयणि ॥ ९ ॥
नवमी भाषा–संघवाछलु करी चीरि भले मालहंतडे पूजिय दरिसण पाय ।
सुणि सुंदरे पूजिय दरिसण पाय ।
सोरठदेस संघु संचरिउ मा० चउंहे रयणि विहाइ ॥ १ ॥
आदिभक्तु अमरेलीयइ मालहं० आविउ देसलजाउ ।
अलवेसरु अल जवि मिलए मालहं० मंडलिकु सोरठराउ ॥ २ ॥
टामि टामि उच्छव हुअइ मालहं० गडि जूनइ संपत्तु ।
महिपालदेउ राउलु आवए मालहं० सामुहउ संघअणुरत्तु ॥ ३ ॥
महिपु समरु विउ मिलिय सोहइं मालहं० इंदु किरि अनइ गोविंदु ।
तेजि आगंजिउ तेजलपुरे मा० पूरिउ संघभाणंदु । सुणि० ॥ ४ ॥
चउमथलीचेत्रप्रवाहि करे मालहं० नलहटी य गढमाहि ।
उजिलउगिरि चालिया ए मालहं० चउव्विहसंघहमाहि । सुणि० ।

दामोदरु हरि पंचमउ मा० कालमेघो क्षेत्रपालु । सुणि० ।
सुचनरेहा नदी तहिं पहए मा० तरुवरतणउं झमालु ॥ ५ ॥
पाज चढंता धामियइ मा० कमि कमि सुकुल विलसंति । सुणि० ।
ऊभी य चडियए गिरिकटणि मा० नीची य गति पोटंति ॥ ६ ॥
पामिउ जादवरायसुवणु मा० त्रिनि प्रदक्षिण देइ ।
शिवदेविसुतु भेटिउ करिउ मा० उतरिया मदमाहि । सुणि० ।
कलस भरेविणु गयंदमए मा० नेमिहिं न्हवणु करेइ ।
पूज महापज देउ करिउ मा० छत्र चमर मेल्हेइ ॥ ७ ॥
अंबाई अवलोयणसिहरे मा० सांविपज्जूनि चढंति । सुणि० ।
महमारासु मनोहरु ए मा० विहसिय सवि वणराइ । सुणि० ।
कोइलसाहु सुहावणउ ए मा० निसुणियइ भमरझंकारु । सुणि० ॥८॥
नेमिकुमरतपोवनु ए मा० दुहु जिय ठाउं न लहंति । सुणि० ।
इग्यइ तीरथि निहुयणदुलभे मा० निसिदिनु दानु दिपंति ॥ ९ ॥
समुद्रविजयरायकुलतिलय मा० वीननदी अवधारि । सुणि० ।
आरतीमिसि भवियण भणइं मा० चतुरनिकेरडउ वारि । सुणि०॥१०॥
जइ जगु एकु सुहु जोइयए मा० त्रिपति न पामियइ लोइ । सुणि० ।
सामलधीर तउं सार करे मा० वलि वलि दरिसणु देजि । सुणि०॥११॥
रलीयरंयपगिरि उतरिउ ए मा० समरहो पुरुषप्रधानु ।
पोहउ मीकिरि मांकलिय मा० राउलु दियइ बहुमानु । सुणि० ॥१२॥

दशमी भाषा–रितु अवतरियउ तहिं जि वसंतो सुरहिकुसुमपरिमल पूरंतो
समरह पाजिय विजयदला ।
सागुमेलुसाहुसच्छाया केसूयकुडयकयंबनिकाया
मंधसेनु गिरिमाहइ पहए ।
बालीय पुहइं तरुवरनाम पाटइ आयइं नव नव गाम
नयनीझरणरमाउलइं ॥ १ ॥
देवपटणि देवालउ आयइ मंधइ मरयो सरु पूरायइ
अपूरवपरि जहिं एक हुईअ ।
तहिं आयइ सोमेसरछत्तो गउरवकारणि गरुउ पहूतो
आपणि राणउ भूधराजो ॥ २ ॥
पान फूल फापट बहु दीजइं तृणसमउं कपूरु गणीजइ
जयाधिहिं सिरु लिपियए ।

ताल तिविल तरविरियां वाजइं ठामि ठामि थाकणा करीजइं
पगि पगि पाउल पेषण ए ॥ ३ ॥
माणुस माणुसि हियउं दलिजइ घोडे वाहिणिगाहु करीजइ
हयगय सूझइ नवि जणह ।
दरिसणसउं देवालउ चल्लइ जिणसासणु जगि रंगिहिं मल्हइ
जगनिहिं आव्या सिवभुवणि ॥४॥
देवसोमेसरदरिसणु करेवी कवडिवारि जलनिहिं जोएवी
प्रियमेलइ संघु ऊतरिउ ।
पहुचंदप्पहपय पणमेवी कुसुमकरंडे पूज रएवी जिणभुवणे
उच्छवु कियउ ॥ ५ ॥
सिवदेउलि महाधज दीधी सेले पंचे वन्नसमिद्धी अपूरवु उच्छवु
कारविउ ।
जिनवरधरमि प्रभावन कीधी जयतपताका रवितलि बद्धी दीनु
पयाणउं दीवभणी ।
कोडिनारिनिवासणदेवी अंबिक अंबारामि नमेवी दीवि
वेलाउलि आवियउ ए ॥ ६ ॥

एकादशी भाषा–संघु रयणायरतीरि गहगहए गुहिरगंभीरगुणि ।
आविउ दीवनरिंदु सामुहउ ए संघपतिसवदु सुणि ॥ १ ॥
हरषिउ हरषालु चीति पहुतउ ए संघु मोलविकरे ।
पभणइं दीवह नारि संघह ए जोअण ऊलावली ए ।
भाउलां वाहिन वाहि वेगुलइ ए चलावि प्रिय वेहुली ए ॥ २ ॥
त्रिरउ सुपुरुषुरिषु जोइउ ए नयणुलां सफल करउ ।
निवछणा नेत्रि करेसु ऊतारिसु ए कपूरि ऊआरणा ए ।
वेढीय वेढीय जोहि वलियऊ ए कीधउं वंधियारो ॥ ३ ॥
लेउ देवालउमाहि पइठउ ए संघपति संघसहिउ ।
लहरि लागइं आगासि प्रवहणु ए जाइ विमान जिम ।
जलवटनाटकु जोइ नयरंग ए राम लउडारस ए ॥ ४ ॥
निरखसु हीइ प्रवेसु दीगइं ए कवडला पयपहर ।
तिहां अच्छइ कुमरविहार कआइऊ ए कआइऊ जिणभुवण ।
तीर्थंकर सोह वंदेवि वंदिऊ ए सयंभू आदिजिणु ।

दीठउ वेणियच्छराजमंदिरु ए मेदनीउरि धरिउ ।
अपूरवु वेपिउ संपु उत्तारिरु ए पहली तहि समुद्दला ए ॥ ५ ॥
द्वादशी भाषा–अजाहरवरतीरथिहिं पणमिउ पासजिणिंदो ।
पूज प्रभावन तहिं करहिं अज्जिउ ए अज्जिउ ए अज्जिउ सफल सुछंदो ॥ १ ॥
गामागरपुरवोलिंतो चलिउ सेतुंजि संपत्तो ।
आदिपुरीपाजह चडिरु ए वंदिरु ए वंदिरु ए वंदिरु ए मरुदेविपूतो ॥२॥
अगरि कपूरिहिं चंदणिहिं मृगमदि मंडणु कीय ।
कसमीराकुंकुमरसिहिं अंगिहिं ए अंगिहिं ए अंगो अंगि रचीय ।
जाइयउलविहसेवत्रिय पूजिसु नाभिमल्हारो ।
मणुयजनमुफलु पामिरु ए भरियरु ए भरियरु ए भरियरु सुहृत्तभंडारो॥३॥
सोहग ऊपरि मंजरिय धीजी य सेतुंजि उधारि ।
.....ठिय ए समररु ए समररु ए समरु आविउ गुजरात ।
विपलालीय लोलियणे पुरे राजलोकु रंजेई ।
छट्ठे पयाणे संचरए राणपुरे राणपुरे राणपुरे पहुचेई ॥ ४ ॥
वहयाणि न विलंबु किउ जिमिउ फरीरे गामि ।
मंडलि होईउ पाटलए नमियरु ए नमियरु ए नमियरु नेमि सु जीवतसामि ।
संखेसर सफलीयकरणु पूजिउ पासजिणिंदो ।
सहजुसाहु तहिं हरषियउ ए देषिरु ए देषिरु ए देषिउ फणिमणिवृंदो ॥ ५ ॥
डुंगरि डरिउ न बोहि चलिउ गलिउ न गिरयरि गव्वो ।
संघु सुहेलइ आणिउ ए संघपती ए संघपती ए संघपतिपरिहिं अपुव्वो ॥ ६॥
सज्जण सज्जण मिलीय तहि अंगिहि अंगु लियंते ।
मनु विहसइ ऊलटु घणउ ए नांदरु ए नांदरु ए नांदरु कंठि ठयंते ॥ ७ ॥
मंत्रिपुत्रह मीरह मिलिय अनु ववहारियसार ।
संघपति संघु वधाविउ कंठिहि ए कंठिहि ए कंठिहि घालिय जयमाल ।
तुरियघाटनरवरि य तहि समरउ वरइ प्रवेसु ।
अणहिलपुरि वरामणउ ए अभिनवु ए अभिनवु ए अभिनवु पुरनिवासो॥८॥
संघचउरि इहाहचरण थापिउ रिसहजिणिंदो ।
चैत्रवदि सातमि पहुत घरे नंदउ ए नंदरु ए नंदरु जा रविचंदो ॥ ९ ॥
पासहसूरिहि गणहरह नेरुअगच्छनिवासो ।
सह सीसिहि अंबदेवसूरिहि रचियरु ए रचियरु ए रचियरु समरारासो ।

एहु रासु जो पढइ गुणइ नाचिउ जिणहरि देइ ।
श्रवणि सुणइ सो वयठऊ ए तीरथ ए तीरथ ए तीरथजात्रफलु लेई ॥ १० ॥

इति श्रीसंघपतिसमरसिंहरासः ॥

सिरिथूलिभद्दफागु ।

पणमिय पासजिणंदपय अनु सरसइ समरेवी ।
थूलिभद्दमुणिवइ भणिसु फागुबंधि गुण केवी ॥ १ ॥
अह सोहगसुंदरस्ववंतु गुणमणिभंडारो ।
कंचण जिम झलकंतकंति संजमसिरिहारो ।
थूलिभद्दमुणिराउ जाम महियलि वोहंतउ ।
नयररायपाडलियमाहि पहुतउ विहरंतउ ॥ २ ॥
वरिसालइ चउमासमाहि साहू गहगहिया ।
लियइ अभिग्गह गुरह पासि नियगुणमहमहिया ।
अज्जविजयसंभूयसूरि गुरु वय मोकलावइ ।
तसु आणसि मुणीस कोसवेसावरि आवइ ॥ ३ ॥
मंदिरतोरणि आविय मुणिवरु पिरकेवी ।
चमकिय चित्तिहि दासडिय वेगि जाइ वधावी ।
वेसा अतिहि ऊतावलि य हारिहि लहकंती
आविय मुणिवररायपासि करयल जोडंती ॥ ४ ॥
भास—धर्मलाभु मुणिवइ भणिसु चित्रसाली मंगेवी ।
रहियउ सीहकिसोर जिम धीरिम हिपइ धरेवी ॥ ५ ॥
झिरिमिरि झिरिमिरि झिरिमिरि ए मेहा वरिसंति ।
ग्वलहल ग्वलहल ग्वलहल ए वाहला वहंति ।
झवझव झवझव झवझव ए वीजुलिय झवकइ ।
थरहर थरहर थरहर ए विरहिणिमणु कंपइ ॥ ६ ॥
महुरगंभीरसरेण मेह जिम जिम गाजंते ।
पंचवाण निय कुसुमवाण तिम तिम साजंते ।
जिम जिम केतकि महमहंत परिमल विहसावइ ।
तिम तिम कामि य चरण लगि नियरमणि मनावइ ॥ ७ ॥

सीयलकोमलसुरहि वाय जिम जिम वायंते।
माणमहप्फर माणणि य तिम तिम नायंते।
जिम जिम जलभरभरिय मेह गयणंगणि मिलिया।
तिम तिम कामीतणा नयण नीरिहि झलहलिया ॥ ८ ॥
भास—मेहारवभरऊलटि य जिम जिम नाचइ मोर।
तिम तिम माणिणि ग्वलभलइ साहीना जिम चोर ॥ ९ ॥
अइ सिंगारु करेइ वेस मोटइ मनऊलटि।
रइपरंगि बहुरंगि चंगि चंदणरसऊलटि।
चंपयवेलविजाइकुसुम सिरि पुंप भरेइ।
अनिआछउ सुकमाल चीरु पहिरणि पहिरेइ ॥ १० ॥
लहलह लहलह लहलह ए उरि मोतियहारो।
रणरण रणरण रणरण ए पगि नेउरसारो।
झगमग झगमग झगमग ए कानिहि वरकुंडल।
झलहल झलहल झलहल ए आभरणहं मंडल ॥ ११ ॥
मयणाग्वग्ग जिम लहलहंत जसु वेणीदंडो।
सरलउ तरलउ सामलउ रोमावलिदंडो।
तुंग पयोहर उल्लसइ सिंगारथयवा।
कुसुमवाणि निय अमियकुंभ किर थापणि मुक्का ॥ १२ ॥
भास—काजलि अंजिवि नयणजुय सिरि संथउ फाडेई।
वोरीपावडिकांचुलिय पुण उरमंडलि ताडेइ ॥ १३ ॥
कन्नजुयल जसु लहलहंत किर मयणहिंडोला।
चंचल चपल तरंगचंग जसु नयणकचोला।
सोहइ जासु कपोलपालि जणु गालिमसूरा।
कोमल विमलु सुकंठु जासु वाजइ संखतूरा ॥ १४ ॥
लवणिमरसभरफूवडिय जसु नाहि य रेहइ।
मयणराय किर विजयखंभ जसु ऊरू सोहइ।
जसु नहपल्लव कामदेवअंकुस जिम राजइ।
रिमिझिमि रिमिझिमि ए पायकमलि घाघरिय सुवाजइ ॥ १५ ॥
नवजोवनविलसंतदेह नवनेहगहिल्ली।
परिमलल्हरिहि मयमयंत रइकेलिपहिल्ली।

अहरबिंब परवालखंड वरचंपावन्नी ।
नयणसलूणी य हावभाववहुगुणसंपुन्नी ॥ १६ ॥
भास—इय सिणगार करेवि वर जव आवी मुणिपासि ।
जोएवा कउतिगि मिलिय सुरकिंनर आकासि ॥ १७ ॥
अह नयणकडक्कहं आहणए वांकउ जोवंती ।
हाव भाव सिणगार भंगि नवनवि य करंति ।
तह वि न भीजइ मुणिपवरो तउ वेस बोलावइ ।
तवणुतुल्लु तुह देह नाह मह तणु संतावइ ॥ १८ ॥
बारहवरिसहंतणउ नेहु किणि कारणि छंडिउ ।
एवडु निठुरपणउ कंइ मूंसिउ तुम्हि मंडिउ ।
थूलिभद्द पभणेइ वेस अह खेदु न कीजइ ।
लोहिहि घडियउ हियउ मज्झ तुह वयणि न भीजइ ॥ १९ ॥
मह विलवंतिय उवरि नाह अणुराग धरीजइ ।
एरिसु पावसु कालु सयलु मूसिउ माणीजइ ।
मुणिवइ जंपइ वेस सिद्धिरमणी परिणेवा ।
मणु लीणउ संजमसिरीहिसुं भोग रमेवा ॥ २० ॥
भास—भणइ कोस साचउ कियउ नवलइ राचइ लोउ ।
मूं मिल्लिवि संजमसिरिहि जउ रातउ मुणिराउ ॥ २१ ॥
उवसमरसभरपूरियउ रिसिराउ भणेइ ।
चिंतामणि परिहरवि कवणु पत्थरु गिहेइ ।
तिम संजमसिरि परियणवि बहुधम्मसमुज्जल ।
आलिंगइ तुह कोस कवणु पसरंतमहाबल ॥ २२ ॥
पहिलउ हियडा कोस कहइ जुव्वणफलु लीजइ ।
तवणंतरि संजमसिरीहि सुह सुहिण रमीजइ ।
मुणि बोलइ जि मइ लियउ तं लियउ ज होइ ।
कवणु सु अच्छइ भुवणतलि जो मह मणु मोहइ ॥ २३ ॥
भास—इणपरि कोसा अवगणिय थूलिभद्दमुणिराइ ।
तसु धीरिम अवधारिवि चमकिय गिलि सुहाइ ॥ २४ ॥
अइबलवंतु सु मोहराउ जिणि माणि निपाडिउ ।

झाणग्गदुगिण मयणसुभट समरंगणि पाडिउ ।
कुसुमवुट्टि सुर करइ तुट्टि हुउ जयजयकारो ।
धनु धनु एहु जु थूलिभद्द जिणि जीवउ मारो ॥ २५ ॥
पडिवोहिवि तह कोसवेस चउमासिअणंतरु ।
पालिय भिग्गह लहिय चलिय गुरुपासि मुणीसरु ।
दुक्करदुक्करकारगु त्ति सूरिहि सु पसंसिउ ।
संजमनुज्जलजसु लभंतु सुरनरहं नमंसिउ ॥ २६ ॥
नंदउ सो सिरिथूलिभद्द जो जुगह पहाणो ।
मलियउ जिणि जगि मद्दमद्दरइवल्लहमाणो ।
सरतरगच्छि जिणपदमसूरिकियफागु रमेयउ ।
रेला नाथइं चैत्रमासि रंगिहि गावेयउ ॥ २७ ॥
॥ सिरिथूलिभद्दफागु समत्तु ॥

जंबूसामिचरिय

जिण चउवीसइ पय नमेवि गुरुचलण नमेवी ।
जंबूसामिहिंतणउं चरिय भविउ निसुणेवी ।
करि सानिध सरसत्तिदेवि जिम रयं कहाणउं ।
जंबूसामिहिं गुणगहण संखेवि वयाणउं ॥ १ ॥
जंबूदीपह भरहखित्ति तिहिं नयरपहाणउं ।
राजगृह नामेण नयर पहुवि पक्काणउं ।
राज करइ सेणियनरिंद नरवरहं जु सारो ।
तासुतणइ पुत्त बुद्धिमंत मंति अभयकुमारो ॥ २ ॥
अन्नदिणंतरि वद्धमाण विहरंत पहूतउ ।
सेणिउ चालिउ वंदणह बहुभत्तितुरंतु ।
मागि यहंतु माहाराज केसउं पेखेइ ।
भोगविरत्तउ पसनचंद बहुतवण तवेइ ॥ ३ ॥
धनु धनु माया एहरसि पसंसिउ वंदइ ।
दुमुखवयणि सो चलिउ ध्यानि कुमारगि चल्लइ ।
धम्मलाभ नवि दीयइ जाम मुनि हूउ अभाओ ।

ईहं सहू को एक मानि रंको अनु राओ ॥ ४ ॥
सामिय वंदिउ वद्धमाण सेणीयं पूछीइं ।
जइ पसनचंद हिव करेइ काल कींछे ऊपजइ ।
मन जाणेविण पसनचंद सामी बोलीजइ ।
नरगावासइ सातमए नींछइं ऊपजइ ॥ ५ ॥
बीजी पूछइं मणुय होइ त्रीजी अणउत्तर ।
दुंदुहि वाजी देवकोय चालीय तिहिं सुरवर ।
सेणिउ पूछइ सामिसाल कांहां जाईजइ ।
केवलमहिमा पसनचंद देवे कीजीजइ ॥ ६ ॥
सेणिउ मनि चिंताचडिओ सामी वलि पूछइ ।
जं प्रभु तम्हे बोलीयउं तं अम्हे न बूझिउं ।
सेणिय तम्हि बूझियउं तअं तिसउं त होए ।
मणपरिणामह विसमगति जीवहं पुण होइ ॥ ७ ॥
केवलनाणउ भरहखेति केतूं वरतेसिइ ।
सामी दापीउ विज्जुमालियउ छेदु होसिइ ।
चउसट्ठि देवे परियरिउ चउदेवे सहीउ ।
अतिमइं दीसइ देहकंति सेणीचिनि चडीउ ॥ ८ ॥
देवहं नवि हुइ एहु नाणु यउ किम होएसिइ ।
आजूना दीह सातमए इणि नयरि चयेसिइ ।
किंकारण पुण एहकंति किरूयह अतिसउ ।
कयणाह धम्मह्नणाह भावियउ देवभइसउ ॥ ९ ॥
ठवणि—महाविदेहनणइ विजय वीतसोय नयरी ।
पद्मरथ नामेण राउ वनमाला घरणी ।
ताम ऊयरि ऊपन्न पुत्त सुरलोपहुंतु ।
वद्ध नामिइं सिवकुमार बहुगुणिहिं संजुत्तउ ॥ १० ॥
पुव्वभवंतरतणइ नेहि सागरमुणि पहुतु ।
आवीउ वंदण सिवकुमार बहुभत्तिपुरंतउ ।
हउं जाणउं तू मुणिहिं नाह कीछे मइं दीठउ ।
एह जन्मह लहयभवि मुझ भाइ य हुंतउ ॥ ११ ॥
उठ्ठावीह करेहि जाम पाडिग्गउ भय देवइ ।

जा मइं मुंकी सुरह रिद्धि या कीणइं लेखइं ।
तु चिंतावियउ सिवकुमार अथिरउ संसारो ।
भवनिस्सारण लेहमिउं अम्हि संजमभारो ॥ १२ ॥
माइ न मेल्हइं एकपुत्त मो मुनिहिं थाई ।
दृढधम्मेण सावएण जायवि बोलावीउ ।
पारि पारि दृढधम्म भणइ अम्ह भणीउ कीजइ ।
दुल्लभ वेडी मणुयजम्म जननिहिं रापीजइ ॥ १३ ॥
कहइ धम्म मो मुणिहिं जाम तसु वयण मनेई ।
विहुं उपवासहं पारणइ ए आंबिल पारेई ।
फासुयवेसण भत्तपाण दृढधम्मो आणइ ।
माहि धीउ अंतेउरहं सो सील ज पालइ ॥ १४ ॥
नवकरवालीवीपधार करमं सवि सृटइ ।
निहणइ मोहकंदप्परउ भवपरीयण मोडइ ।
बारहं वरसहंतणइ अंति आऊपूं पूरीजइ ।
पंचमदेवलोकि सिवकुमार सो देव ऊपजइ ॥ १५ ॥
कयणह नारिहितणइ उयरि एह जीव चवेसिइ ।
कयणह बापहतणइ कुलि एउ मंडण होसिइ ।
उसभदत्तसेठिहिं घरणि धारणिउरि नंदण ।
होसिइ नामिइं जंबुसामि तिहुयणि आणंदण ॥ १६ ॥
ऊठीउ देव अणाहिउ हरपिइं नाचेई ।
धनु धनु अम्हतणउं कुल एसु पुत्त होसिइ ।
चविउ विमाणह बंभलोय धारणिउरि आविउ ।
सुमिणप्रभावियं उसभदत्त अंगेहि न माईउ ॥ १७ ॥
जायउ पुत्त पहाण जाम दसदिसि उदयंतउ ।
वद्धइ नामिहिं जंबुसामि गुणगहण करंतु ।
अठवरीसउ हुउ जाम गुरुपासि पहुतु ।
ब्रह्मचारि सो लियइ नीम भववासविरत्तउ ॥ १८ ॥
जोयणवेसह पहुतु जाम कन्ना मग्गावइ ।
धीजा धूया पाठवए तस विवारा थय ।
मन देजिउं तम्हि अम्ह देसु अम्हि इसउं करेशउं ।

सांझहं परणी प्रहह जाम नीछइं व्रत लेसिउं ॥ १९ ॥
माय दुहुंघीय तणइं वयणि परिणेवउ मन्नीउ ।
आठइ कन्या एकवार परिणीय घरि आवीउ ।
आठइ परणी मृगनयणी बूझवणइ बइठउ ।
पंचसएचोरेहंसिउं प्रभवउ घरि पइठउ ॥ २० ॥
नीद्र अणावीय सोयणीय आभरण लीयंता ।
ते सवि अछइं थंभीया टगमग जोयंता ।
प्रभवउ भणइ हो जंबुसामि एक साठि ज कीजइ ।
बिहुं विद्यावडइं एक विद्य थंभणीय ज दीजइ ॥ २१ ॥
हिय हूं कहि नवि ज लेवि पुण किसउं करेसो ।
आठइ परिणी ससिवयणी नीछइं व्रत लेसो ।
रूपयंत अणुरत्त रमणि एउ एम चएसिइ ।
अणहंतासुहतणी य आस मुझ जीव करेसिइ ॥ २२ ॥
एवडु अंतर नरहं होइ प्रभवउ चिंतेई ।
संवेगरसि जउ गयउं मन प्रभवउ पूछेई ।
सिद्धिरमणिऊमाहीया ह तम्हि संजम लेसिउ ।
कम्मइं विलयइं माइबप्प किम किम मेल्हेसिउ ॥ २३ ॥
इंदियाल नवि जाणीइ ए को किम होइसिइ ।
भद्दार नाथां एकभवि जंबूस्वामि कहेई ।
पिसर तम्हारा जंबुसामि किम तृपनि लहेसइं ।
पिट पहइ लोयहंतणइ ए ऊभा जोसिइं ॥ २४ ॥
बाप मरवि भइंसु हुऊ पुत्रजन्मि हणीजइ ।
इणपरि प्रभवा पितरतृप्ति तिणि धीयरि कीजइ ।
अणहंतासुहतणी य आस हूं नउं छांडेसिउ ।
तिम करसणि जिम कलत्र भणइ अपनरता करेसिउ ॥ २५ ॥
नरह रमिहिं हउं लोभ करउं देवि मणहर रूपहउं ।
हत्थिकंडेवर काग जिम भवसायर निपडउं ।
बीजी कलत्र कहेवि नाह जइ अम्ह छंडेसिउं ।
तिणि वातरि जिम पच्छुताव पडु पीसि परेसिउं ॥ २६ ॥
विहुमलाहउं विसयसुख आदर किम कीजइ ।

इंगालवाहग जेम तुम्हि तूस किम न छीपइ ।
बीजी कलत्र भणइवि नाह जउ अम्ह छांडेसिउ ।
तिणि जंबुकि जिम साणहार वहुरोद करेशउ ॥ २७ ॥
ऊतर पहि ऊतर वहु य संखेवि कहीजइं ।
विलखी हुई ते सव्वि वाल जंबूसामि न बूझइं ।
आसातरवर सुक्क जाम अम्हि इशउं करेशउं ।
नेमिहिंसिउं राइमइ जिम वयगहण करेशउं ॥ २८ ॥
आठइ कलत्रह बूझवीय पंचमयसिउं प्रभवउ ।
माइ बाप बेउ भणइं ताम अम्ह साधुसरीसउ ।
ठवणि—ग्रह पिहसइ सुविहाण प्रभवु विनवइ जंबुसामि ।
सजनलोक मोकलावि तम्हिसिउं संजम लेसिउं ॥ २९ ॥
खण एक पहपाणवि राय मोकलावण चालीय ।
तु सुहडसमूह करेवि भुइं कंपइं भडभडयइं ॥ ३० ॥
जस भय ग्रसकइ राउ जस भय नींद न पयरीयइं ।
एसउ प्रभवउ जाइ नरनारी जोयण मिलीय ।
पहुतु रायदुयारि पडिहारिइं बोलावीउ ।
वेगिइं राउ भेटावि अम्हि आइउं उत्सुकमणा ए ॥ ३१ ॥
पुत्तनणउ पिह राय तुम्ह दरिसणि उमाहीउ ओ ।
कारण जाणीउ राय वेगिहि सो मेल्हावीउ ओ ।
ब्रेहि न खंडइ राउ प्रभवउ देपी आयउ ।
साचउ ए भडियाउ पुरुषह आकृति जाणीइ ए ॥ ३२ ॥
रूपगुणे संपन्न रायरमणिमन चोरतु ओ ।
सोहइ पूनिमचंद जइहय कोणी प्रणमीउ ।
नुतउ अकसीय शरीर जइ कोइ जणणीजाइउ ।
नयणे छुटुं नीर संवेगजलहरि परिसिउ ।
सामी खमि अपराध अम्हे लोक संमाधीया ए ॥ ३३ ॥
पडिवज बोलइ राउ कोणी मनि आणंदियउ ।
धन्न पतुली माइ इसिउ पुत्र जिणि जाइउ ओ ।
तो मोकलावी राउ चोरपाडी सामंतए ।
सजनह कहीइं एउ अम्हे संजम लेइशउं ॥ ३४ ॥

सप्तक्षेत्रिरासु

सवि अरिहंत नमेवी सिद्ध सूरि उवझाय ।
पनरकर्मभूमिसाहू तीह पणमिय पाय ॥ १ ॥
जिणसासणहमाहि जो सारो चउदह पूरवतणउ समुधारो ।
समरिउ पंचपरमिठि नवकारो सप्तक्षेत्रि हिव कहउ विचारो ॥ २ ॥
धुनु धुनु ते जि संसारे जीहं जिणवरु स्वामी ।
गुरु सुसाहु जिणभणिउं धम्मु सुग्गइगामी ॥ ३ ॥
बारि अंगि दुलहु मणुजम्मु अनी अ विहोयिहि जिणवरधम्मु ।
सम्मत रयणु चिनि निवसइ जीह सोहग ऊपरि मंजरि तीह ॥ ४ ॥
पुणु जिणसासणु दुलहउं जीव संभलि कथनु निरुपमु ।
नाणुपहाणु एकु जिं जिनवरधम्मु ॥ ५ ॥
भरहखित्ति खट्टपंडह थित्ति केवलनाणि जिणवर जंपंति ।
पैनाडयपरहां त्रिखि खंड होइ तहि धरमनामु नियरतन तोइ ॥ ६ ॥
उल्या त्रिहु खंडि थित्ति केवलि इम आपइ ।
तीहमांहि दुनि पंटने पटिया पापइ ॥ ७ ॥
मज्झिम पंड इकु यहनो मडिउ तेउ त्रिहुभागि पाछइ पडिउं ।
चउथउ भाग धरमनइ लागे तेउ जोईजइ मयमइ भागे ॥ ८ ॥
ते अ नयाणवइ भाग साहू मिथ्यातिहि जडिउं ।
थाकलउं कुमतिकुबोधिकुगुरुमगहि पडिउं ॥ ९ ॥
थोडा जीव केई दीसंते जे जिणभणिअं मनिहि करंति ।
हिव तिहुयणिहि साहू समिकतु पामिउ जीवि जिनभणिउ नयतत्तु ॥१०॥
बार वरत नइं पामिउ जे जिणवरि वुत्ता ।
सुगइनिबंधण मत्ता जीव मुगति दीयंता ॥ ११ ॥
प्राणातिपातव्रतु पहिलउं होई बीजउ सत्यवचनु जीव जोई ।
त्रीजइ व्रति परधनपरिहारो चउथइ शीलतणउ सचारो ॥ १२ ॥
परिग्रहतणउं प्रमाणु व्रतु पांचमइ कीजइ ।
इणपरि भवह समुद्रो जीव निश्चय तरीजइ ॥ १३ ॥
छट्ठउं व्रतु दिसितणउ प्रमाणु भोगुवभोगव्रत सातमइ जाणु ।
अनरथव्रतु दंड आठमउं होइ नवमउं व्रत सामायकु सोइ ॥ १४ ॥

देसावगासी दसमुं व्रतु नथी मूलु ।
पोषधव्रतु इग्यारमउ संजमसमतूलु ॥ १५ ॥
व्रतु बारमउं अतिथिसंविभागुउ तोइ मुकतिनयर न न मागो ।
जे ईणइ मारगि चालइ संसारे धनु सक्रियारथ ते नरनारे ॥ १६ ॥
समकितमूल व्रतु बारइ गहियधरमि पालेवउ ।
सप्तक्षेत्रि जिनभणिया तिह वित्तु वावेवउ ॥ १७ ॥
सप्तक्षेत्रि जिन कहिया महामुनि वितु वावेजिउ विवहपरे ।
जिनवचनु आराधीउ अवक्रमु साधिउ लहइ पारु संसारुसरे ॥ १८ ॥
सप्तक्षेत्रि जिनसासणिहि सवली कहीजइं ।
अधिरु रिधि धनु द्रव्यु बीजउ तहि जि वावीजइ ।
तेहि क्षेत्रि वावेत्रणा थानकि लाभइ देवलोको ।
कणनी थाहरु मुक्तिफलो पामउ निसंदेहो ॥ १९ ॥
पहिलउं क्षेत्र सु जिणह भुवण करावउ चंगू ।
जीछे महिमा करइ सहु श्रीचउविहसंघू ।
मूलगभारउगूढमंडपुछकुचउकीसहिउ ।
आगइ कीजइ रंगमंडपु जो पुस्तकि कहिउ ॥ २० ॥
तहि आनरइ थलामणु कीजइ आवेरउ ।
जिम जिनभवनह नालिमाहि दीसइ नीकेरउं ।
उत्तंगतोरणु थंभथोरु घांटु अतिनीकउ ।
कडीयइ नानाविधि रूपि साम थाम तहि नीमलु जडिउ ॥ २१ ॥
विहु पक्ष फरती देहरी कीजइ अतिरूडी ।
ठवीजइ मूर्ति जिनहतणी माहि तेवड तेवडी ।
कणयकलस दंड घांटीइं धज पूरीय किपजइ ।
छोहपकनभामाडु भलउ जीय नीपाइजइ ॥ २२ ॥
तहि जिनवारि कमाइ भलां कीजइ अतिसुयिपइ ।
सारुआर दृढ प्रागु ए जो आपइ संगुट ।
तालां कूंची मांकली अतिनीमल कीजइ ।
जउ आपमगह जाइ सूर तउ संगुट दीजइ ॥ २३ ॥
अतिसउ जिणह भुपणु किरि अमरविमाणु ।
दीसइ मूरति वीतराग माहि निहुपणुभाणु ।

कवणु रूप वीतरागतणु जोइ कवणु विशेषु ।
अठ प्रतिहारि ज जिणहतणइ वृक्ष होइ अशोकु ॥ २४ ॥
भामंडलुसुरकुसुमवृष्टिसीहासणुछत्तु ।
भेरिचमरदेवंदुणिहिण जोइ कवणु प्रमुत्तु ।
ए थिति एसी वीतराग मेल्ही अवर न होई ।
सुरादिक जिनसेव करइं नवि मगलइं जोई ॥ २५ ॥
तउ जिनजीर्णउद्धारु भवि जीव विशेषिहि करीयइ ।
भागउ लागउ जिणह भुवणि तेउ लोइ समुद्धरियइ ।
लीपिउ घउलीउ भीतु देइ चीत्रासु लिपीजइ ।
इणपरि भुवणु समारीय जन्महु फलु लीजइ ॥ २६ ॥
अनीउ जु काइं विंपि टासु जिणभुवण मांदाइ ।
तं निश्चिइं कराबीयए बहुफलु बोलाइ ।
आपणि स्वामिउ वीतरागु इणपरि भणेइ ।
जीर्णोद्धारहतणा पुण्य तेह अंत न होइ ॥ २७ ॥
बीजं खेत्रु सुजिनह बिंपु ते इहां विचारो ।
मणिमय रयण सुवर्णमए विंब रूपम कारो ।
हिव जिनभुवणह गृहचैत्यदेवरा ज कीजइ ।
कीजइ कणयभिंगार कलस जे नीर भरीजइ ॥ २८ ॥
तउ सीलमइ कराबीयइ जिनभवन ठवीजइ ।
पारइ पीतलमइ भलां प्रिहचैनि पूजीजइ ।
घरि देवालाइं कराविय नीकाइ मणोहर ।
जीते त्रिभुवणसरण स्वामि पूजीजइ जिणवर ॥ २९ ॥
सुगंधि नीरि सनानु करइ जिण जीणि आणंदिहि ।
ते संसारह कसमलह भवि छीपइ विंदिय ।
अंगलूहणे सूक्ष्म करउ सुफरां बहुमूलां ।
निपनिपसक्ति कराविपइ कीजे देवंगमूलां ॥ ३० ॥
कीजइ ओरसु रूपटा सिरवंट पटेवा ।
कपूरघटे पाटीइ कपूरु जिनस्वामुनि देवा ।
मुंकइ जिणभुवणिहि धोति अतिनीकी धूपा ।
वालाकुंची पूंजणीइ पीगाणी कूपा ॥ ३१ ॥

अतिसुगंधिहि सिरखंडिहि कपूरिहि आंगी ।
कीजइ सामी वीतराग प्रभु नवनवभंगी ।
कस्तूरिहिं कुंकुमिहि तिलउ निलाडिहिं सामी ।
ते पुण वितपति करइ भली अतिनीकइ धामी ॥ ३२ ॥
तउ आभरण चडावियइ सोवणमय घडिया ।
हीरे माणिकि मोतीए बहुरयणे जडिया ।
अतिरूयडउं आभरणउ भलउं कीजइ संपूरउ ।
नीकउं सिहरउं पूठिउं हूतलि अनइ मसूरउ ॥ ३३ ॥
कानिहि कुंडल सिरि मुकुड किरि ऊगिउ भाणूं ।
जाणे तिहूयणि सयल लोक अभिनवउं विहाणूं ।
उरह माल कंठि सांकलउं मुक्तावलिहार ।
नयणि निहालिन वीतरागु रूयडउ सुरसार ॥ ३४ ॥
बाहुजुयलि बेउ बहिरखा अतिनीका सोहई ।
टीलूउं श्रीवत्सु सारूयार भवियण मणि मोहइ ।
सोनाकेरी पालठी कीजइ जिनपत्ते ।
सोहइ बीजउरउं रूयडउं सामीजिणहत्थे ॥ ३५ ॥
इणि विवेकिहि बहु य विशेषिहि जिणवरपूज सलक्षणी य ।
करउ मनरंगिहि नवनवभंगिहि श्रीसंघनयणसुहामणी य ॥३६
एती अ जोइ आभरणतणी पूजा नीपजी ।
हिय आरंभिसु जिणह अंगि सुरहां कुसमजी ।
कीजइ कुसमे चंगेरीपए पूज कारणि रूयडी ।
पावरइ दीठु देवकाजि अइह छाजी छयडी ॥ ३७ ॥
रायचंपु केतकी जाइ सेवत्री परिमल ।
बउलि मिरीवालउ बेअलु अनु करणी पाडल ।
मोलउश्री विधि पूजमाहि सोहइ अतिचंगी ।
वितपति दीसइ रूयडे तिणि नयनवभंगी ॥ ३८ ॥
नीकउ कणयक पूजमाहि वरणकि सोहंती ।
परिमलु पसरइ कुसुमजाति पाडइ विहसंती ।
कुंदु अनइ मुचुकुंदु वाडु जुई परिजाते ।
एसे कुसुमि करउ पूज तुम्हि तिहूयणपत्ते ॥ ३९ ॥

सुरहउ सरूयउ वायची अनइ कल्हार ।
सहुयइ सोहइ वीतराग सामी सुरसार ।
नीलउप्पी नागवेलि पानमाहि जा सोहइ ।
इणपरि पूजइ सामिसाल नरनारी घन्न ॥ ४० ॥
एहि रामणीयइ पूज तोइ नीकी सोहंती ।
तउ नक्षत्रहतणी माल दीवाइ चंगी य ।
रेलीयइ माहि सुपण जिणबिंबहकेरी ।
आणी कुसुमे पूजियइ ते सवि संखेवी ॥ ४१ ॥
समोसरणु जो पूजीयए जो निसिपयाकं ।
चिहु पस्वि दीसइ वीतरागु जहि निहुयणसाकं ।
तउ पूजा नीपली पूठि धूपउटजउ लीजइ ।
वीजणिय उगेविनु गुरु तहि घंटी वाजइ ॥ ४२ ॥
धूप अगुरु सासियारेसि डावडी जि वीजइ ।
दंडासणे अभिरूयहे जिणभुयणु पुंजीजइ ।
आरेरिहिं मंजूस भली अरुय चउवीयइ ।
दीइउ आग्वे पारउ भली य मंगलीक आठ य ॥ ४३ ॥
वरुमाणु वरधलसु अनइ भद्दासणु छत्तू ।
दप्पणु मंदायरतु तहि साथिउ श्रीवत्सू ।
अठ मंगलीक तीण पाटि भरियइ जिनआगइ ।
इणपरि जं धन वेधीइ ए तं लेयइ लागइ ॥ ४४ ॥
दीवा वीजइ जिनभुयणि छत्रप्रउ दीजइ ।
चमर ढलंते वीतराग तेहि धनु वेधीजइ ।
ते उलोय वारावियइ जिणभुयणमउहारे ।
वाघोटा मरवर अ लंब वीजइ जिनवारे ॥ ४५ ॥
तोरण चंदुरवाली वारि सापि जिणभुयणि ।
पूजा जोइ सहु कोइ आवइ तोणि त्रिणि ।
पूजा जोइवा जिणह भुयणि तोइ गुरुगुरु आवइ ।
तउ संघिहि आमहु करीउ तोडे रखावियइ ॥ ४६ ॥
पहपउ वेला एक प्रभु आरां उच्छवु होमिइ ।
संघवयणु मानेवि गुरुगुरु निसि सिरं पहरइं ।

तिणि वेलां बइसणां पाटि जोइ पाटल्ला ।
चउकीवटि बइसंति सुगुरु तउ भावइ भल्ला ॥ ४७ ॥
बइसइ सहूइ श्रमणसंघ सावय गुणवंता ।
जोयइ उच्छवु जिनह भुवणि मनि हरष धरंता ।
तीछे तालारस पडइ वहु भाट पढंता ।
अनइ लकुटारस जोइई खेला नाचंता ॥ ४८ ॥
सविहू सरीपा सिणगार सवि तेवड तेवडा ।
नाचइ धामीय रंभरे तउ भावइ रूडा ।
सुललित वाणी मधुरि सादि जिणगुण गायंता ।
तालमानु छंदगीत मेलु वाजिंत्र वाजंता ॥ ४९ ॥
तिविलां झालरि भेरु करडि कंसालां वाजइं ।
पंचशब्द मंगलीकहेतु जिणभुवणइं छाजइ ।
पंचशब्द वाजंति भाटु अंवर वहिरंती ।
इणपरि उच्छवु जिणभुवणि श्रीसंघु करंतउ ॥ ५० ॥
तउ आरती पग्गुणउं कीउं आरती पटऊपरि ।
ऊठिउ संघपति विधिहि सहिउ तउ साहीउ विहुकरि ।
नीर लुण उतारियए कुसुम उतारी ।
संघपति ऊठी सेमि भरइं सहत्थिहि माही ।
संघपति आरती हिया हुइ जउ वार वहेरी ।
आरती जोगी थांभली अ आणउ गरुएरी ॥ ५१ ॥
पाछइ जिणगुण गाइ पडइ सहू पालउ लोक ।
श्रीसंघु तीह अ दानु दियइ जीह जेसा जोगू ।
उतारीइ आरतीअ तीह संघपति सह हरखिउ ।
रोमांचीमारीक तहि जिणदंसणु देखीउ ॥ ५२ ॥
मंगलीकु उतारीयए घंट वाजइ गरूई ।
श्रीसंघु करइ प्रभावना जिणसासणि गरूई ।
तउ विधि वांदियउ वीतराग श्रीसंघु उतारीउ ।
इणपरि सुकृतभंडारु तीह भव्यजीविहि भरियउ ॥ ५३ ॥
ते जिन भुवनतणां कृत्य इह छेडइ कहिया ।
ते गुरुपैस्य करावियइ सविदोषिहि सहिया ।

अनि अ ज काई कोइ ठामु मूं हुइं वीसरियउं ।
तेउ तुम्हि भविय कराविं जि अ सहइ सांभरियउं ॥ ५४ ॥
उछवुं जिनभुवणि हरपि नियमणि करइ संघु जयवंतु ।
नितु हिव श्रीजउ क्षेत्रु कहिसु पवित्तु सुणउ जीव जे जिणभणितु॥५५॥
श्रीजउ क्षेत्रु ॥ संभलउ ए वरलोयणे जं भणिउं वीयराइ ।
गुणगंभीर सो जिणह वयणु मृगलोयणे तसु नवि उपम काइ ॥ ५६ ॥
वचन इकेका मूलु नही वरलोयणे जं बोलइ भगवंतु ।
त्रिहु भुवणे चूडामणि य मृगलोयणे सहू जाणइ अरिहंतु ॥५७॥
पइ कवण व्याप जिनवचनतणउ वर० बुज्झइ लोकु अलोकु ।
सउ जि सिद्धंत ज सलहीअइ ए मृग० देअइ सिद्धिसंजोगु॥५८॥
गणधर करइ जं पुव्वधर वर० सुयकेवलिहि करंतु ।
दसपूरवधर जं करइ मृग० तं भणियउ यइ सिद्धिंतु ॥ ५९ ॥
त्रिहु भुवणहतणउ जाणियइ वर० आगममाहि विचारु ।
चउदपूरव इग्यार अंग मृग० करइ गोतमु सुतिहारु ॥ ६० ॥
सूत्रहार तहि निउछणा ए वर० जिणि जाणिउ एउ सूत्र ।
त्रिपदी आपी य वीरनाथिइ मृग० आघउं गोतम वृतु ॥ ६१ ॥
केवलनाण बुच्छिति गयउं वर० गया सवि पूरवधर ।
जे हूंता गुरु प्रज्ञाधणउं मृग० गया सु ते मुनिवरा ॥ ६२ ॥
अल्पप्रज्ञह नवि धारणए वर० जिणवयणुं निरुपमु ।
तीण कारणि श्रीसंघ मिलीय मृग० पोथे ठवीउ आगमु ॥ ६३ ॥
भक्षाभक्ष सो बुज्झियए वर० अछी गम्मागंमु ।
कृत्याकृत्य परीछियए मृग० जाणीयइ धर्म्माधर्म्मु ॥ ६४ ॥
धन जीवी लाहउ लिउ ए वर० बुज्झियइ एहु विचारु ।
श्रीसिद्धंतु लिखावियए मृग० जोउ त्रिहुभुवणह सारु ॥ ६५ ॥
श्रीजउ क्षेत्रु इम थापीयए वर० चित्ति संवेगु धरेउ ।
वेचीउ वित्त लिखावियए मृग० श्रीसिद्धान्त जएउ ॥ ६६ ॥
वाहदंड पोथा कराउए वर० पोथीय नीकी य तोइ ।
ज्ञानलगइ सवि लाभ हुइ मृग० एह विचार तूं जोइ ॥ ६७ ॥
पाठां दोरी वीटणां वर० वर सिद्धांतह भत्ति ।
थानीदोरा उत्तरीय मृगलोयणे पोथीय पोथीय सत्ति ॥ ६८ ॥

श्रीजउ क्षेत्रु इम थावउ निरुपम लियउ लाभु हुंतानणउ ।
जिम अट्ठकम्म गंजीउ भवदुह भंजीउ सिद्धिनयरि सेमिइ मुणउ ॥६
हिव श्रीश्रमणसंघभत्ति करउ जीव तुम्हि यथाशक्ति ।
पहिलउ कीजइ तोइ पावयणा अनी य विशेषिहि आयरियउवणा॥७
इणपरि श्रमणुक्षेत्रु थावीजइ निश्चय भवसायरु तरीजइ ।
जे जिनवरि मुनि कहिया आगमि क्रियासार अनइ स्वरूपर संजमि॥७
पंचमहव्वयभारु धरंता दस अनु च्यारि उपगरण वहंता ।
नव कल्पिइ विहार करंता ते मुनि भणियइ चारित्तवंता ॥ ७२ ॥
जे मुनि पंच समिति छइ समिता त्रिहुहि गुप्तिहि जे अछइ गुपिता ।
सीलंग सहसअढार वहंता ते मुनि भणियइ उपसमवंता ॥ ७३ ॥
जे मुनि निम्मल निरहंकार सदाचार दीसइ सुविचार ।
जे धुरि जूता गणगच्छभारा ते मुनि भणिया गुणह भंडारा ॥ ७४ ।
इणपरि भल्ला क्षेत्र विशेषि दियउ दानु तुम्हि भवि हरखि ।
जिम तु छूटउ भवना भार पामउ सिवसुखु निरुपमसारु ॥ ७५ ॥
जे जिनआण सदा छइ रत्त बावीस परीसह सहइ अपमत्त ।
जिनआदेसु धरइ सिरिऊपरि ते जि महामुनि नमीयइ सुरवरि ॥ ७६ ॥
बईतालीसदोषसुविसुद्धउ लियइ आहारु जे जिणवरि दिट्ठउ ।
इंदियविषयव्यापि नवि मूचइ तवि नीमि संजमि खण वि न मूचइ ॥७७॥
किसुं घणउं हउं कहउ विचारो मुनिरयणगुण न लहउं पारो ।
अनुव्रतु चालइ जे जिनआण ते मुनि भणीयइ मेरुसमाण ॥ ७८ ॥
प्रसंसीइ मुनि जिहि गुणि सहिया ते गुण जिणवरि श्रमणी कहिया ।
एकु विशेषु पुण श्रमणी दीसइ वहइ उपगरण तोइ पंचवीसइ ॥ ७९ ॥
चालइ खड्गधार तोइ ऊपरि सीलवंत ति नमीइं सुरवरि ।
महासती जे छइ अपमत्त धारा भणइ हूं तेहि पवित्त ॥ ८० ॥
जीह जिनआण हियइ परिणमी ते श्रमणी तोइ मेरह समी ।
जे सिद्धी जिणआण करंती धनु धनु श्रमणी ते महासती ॥ ८१ ॥
जिणसासणु जेहि य इम उज्जालिउ कसिमल पावपंकु पखालिउ ।
एउ साहू अनइ श्रमणी खित्त वाविन धामी हुईउ सवित्त ॥ ८२ ॥
जा हिवडां तूं संपति अच्छइ इसीय वराप न पामिसि पछइ ।
जउ भलखेत्रिहि वित्त न वाविसि पाछइ परभवि किसउ लुणाविसि॥८३॥

घराप टली वितु धाविसि सारु ऊगिसि खटसलु काइ फलवारु ।
जउ भलक्षेत्रि घरापइं धाविसि तउ इकुगुणइ अणंतगुणं पाविसि ॥८४॥
ए भलुं क्षेत्रं जिनवरि कहिया धाये धर्मी भावणसहिया ।
तउ सीचे अनुमोदनापाणी जिम हुइ सफली गय निरवाणी ॥ ८५ ॥
इणपरि पावीजइ मुनिसेवु दीजइं भक्त पानु सूझंतु ।
विद्यादानुं जउ दीजइं सारु जिणु भणइ तेह पुन्य नहीं पारु ॥ ८६ ॥
औषधआदि सहु सूझतउ सं सं दीजइं निरवरिहूंतउं ।
अनिउ ज्ञ काई मुनि उपगरइ सं सूझतुं घहरउं करइ ॥ ८७ ॥
जं जं मुनि जोअइ सूझंतउं सं सं दीजइं निरवरहूंतउं ।
गुरु आवंता कीजइ अभिगमणउं दीजइ भक्ति थोभवंदनउ ॥ ८८ ॥
विनउ वेयावचु अनीउ विद्वेषिउ कीजइ भयाउ महामुनि देखीउ ।
पर्युपास्ति तही कीजइ घणी य जिम जिम जिनवरि आगमि भणीय॥८९॥
एह ज परि श्रमणी जाणेयी करउं भक्ति तुम्हि हरिख धरेयी ।
ते सूझ महामुनि दीजइ सं सं श्रमणी कीजइ ॥ ९० ॥
आगइ तोइ पूर्विहि सुणीजइ धनु धनु सारथवाह कहीजइ ।
पीउ विहिरावियउ जिणि मुणिदउ तिणि फलि हुयउ पहम जिणंदु ॥९१॥
हरिणाउरि नयरि श्रेयंसिहि पारावियउ रिषुभु इक्षुरसिहि ।
तिणि फलि तिण भवि केवलु ज्ञानु दिइन भविकु मुनि इणपरि दानु॥९२॥
धीर जिणेसर छट्ठा मास वंदण पारावइ कोमास ।
तीणि दानि तिण संपति पामी दियउ दानु मुनि अनुपम धामी ॥९३॥
जोइन संगमि कीउं मुनि पारावाउ खीर खांड पाउ ।
तिणि फलि तु सर्वार्थसिद्धि पामी पाउइ हंसिरि सिवसुहगामी ॥ ९४
इउ भाइउ सेतु थावउ वितु अतिफलोअइ सवसाचितु ।
सिवसुह संपत्ती देइन भक्ति स्वामिवात्सल्य आगमि भणिक्ति ॥ ९५ ॥
हिव लोइ श्रावकतणउं क्षेत्रु भवी कहीयइ ।
जउ जिणसासणतणा भूमि अतिभलउ पकासिइ ।
किसउ सुश्रावक जाणियउ जिणसासणभत्ति ।
श्रीवीतरागतणी य आण मानइ सिरकपति ॥ ९६ ॥
समकितमूल बार वरत पालइ नरनारि ।
निवसइ हियडइ वीतरागु एह जि सुरकरि ।

कामदेव जिम चलइ नही वीतरागह धर्म ।
वीरनाहु जिणवरु दियइ तसुनी ऊपम्म ॥ ९७ ॥
सदाचारु सुविचारु कुसलु अनइ निरहंकारु ।
शीलवंत निकलंक अनइ दीनगणआधार ।
जिनह वचनि निम मानयातु जीह श्रावक भेदी ।
जाणे तीह गर्भवासवेलि मूलहुंनि छेदी ॥ ९८ ॥
जाणइ ऊचितु सहु काय साचउ विवहार ।
त्रिधा सुद्धि मनमाहि वसइ इकु निश्चउ सारु ।
उत्सर्ग अनइ अपवाद एह जाणइ सविसेषू ।
भणियइ श्रावकतणी भावीय मूलिह सा जीह एहु विवेक ॥९९॥
जे पुण श्रावकतणा भविय कहीयइ जिणमासणि ।
ते गुणु जिण भणइ श्राविय जाणेवा नियमा ॥ १०० ॥
त्रिधा सुद्धि वीतराग वसइ मनभीतरि जीह ।
सुलहउ सिवपुरतणउ वासु तो श्रावक तीह ।
पढइ गुणइ जिणवयणु सुणइ संवेगि संपूरिय ।
सील सनाहि पहिरिइ क्रमऊपरि सूरी ॥ १०१ ॥
ईहं तु श्रावकतणउ क्षेत्रु वावु सवि दीस ।
जे तुम्हि भवियउ अच्छइ काइ धर्मतणी जगीस ।
जिम भरयेसरि वावी रिसहेसरनंदणि ।
गृहवासऊपरि ज्ञानु जासु पसरीउ तिहुयणि ॥ १०२ ॥
तिम तुम्हि वावेउ भलीपरि भविउ इउ खित्तु ।
लहिसउ फल निरवाणनयरि तिम तिहां बहुतु ।
पहिलुं कीजइ महाविनउं गुणश्रावक जाणी ।
पाय पपालीय सइहाथि लेउ कुंकुम वाणी ॥ १०३ ॥
पाछइ भोजनुं भलीयभक्ति सविवेकिहि सहियउ ।
दीजइ श्रावकश्राविकां एउ आगमि कहिउ ।
ऊपरि ऊगटि फूल पान कापड अनुमानिय ।
दीजइ निजभक्ति भलां गरूयइ बहुमानि ॥ १०४ ॥
भरयेसर जिम श्रावकह दीजइ आवासे ।
लीणा जे जिनवयणि अछइ घणगुणह निवास ।

वाछिलनी परि एक कीसउ परि हुअइ असंख ।
विधिमातु करसइ सहू कोइ नरनारी दुःख ॥ १०५ ॥
वाछिलनी परि एकजीभ हउं कहिउं न सकउं ।
एकह वाक साक सकू तुम्ह कहीउ अज मू किउं ।
जं जं कीजइ कुणवकाजि अतिभलां भलेरां ।
ता कीजइ साहमिय प्रति अजी अधिकेरां ॥ १०६ ॥
कीधे काजे कुटंबनणे अतिघणउ संसारो ।
जं कीजइ साहंमिअवेरउ काजि ते परत भंडारो ।
इणपरि वाछिल श्रावकह कीजइ सुरचंगू ।
हव ते कहीइसिइ जिणभवणि वाछिल अंतरंगू ॥ १०७ ॥
जिणपरि लोग समाराअए सवि साहंमिअवेरु ।
धावइ जिम संसारमझि वलि वलि एउ फेरु ।
कीजइ श्रावकश्राविकारहि वरपोषधशाल ।
जीछे करिसिइ धरमध्यान तु हरषि सवि काले ॥ १०८ ॥
पडुजीवरक्षा सवि काल तीछे दीसंती ।
समकितसिउं वार ए व्रत जीव अनेकिइ लहंती ।
प्रतिमा नाम अभिग्रह संपन्नइ त्रिणि हाट ।
अनेकि सुकृत ऊपजइ कुलियाकडेवरमाट ॥ १०९ ॥
तीछे सुगुरु वयाणु करइ आगमभंडार ।
सहू समाधियइ सांभलइ व्यूध नरनारे ।
थापनाचार्य थउकीयइउ सिंहासण कीजइ ।
नउकरवाली चिरवला महुपत्ती मूंकीजइ ॥ ११० ॥
संथारा ऊनरउट पाटि कीजइ पुंछणा ।
करे पोसाल पाटला अनइ दंडालणा ।
काजामेलणी य पउंजणी य काजाऊभरणी ।
पोषधसालहलणइ दामि ए काजइ करणी ॥ १११ ॥
कीजइ कमली ठवणी ए वाचीजइ सिद्धांतु ।
ज्ञान पढंता जीव तीहा कर्मक्षय अनंतु ।
जइ ज्ञान पडिलेहवा मोरवीली य छे तोई ।
दीसई आखर पडवडा अनइ जडणा होई ॥ ११२ ॥

ईइ सातइ क्षेत्र इम बोलीया आगमअणुसारे ।
पुण तुम्हे वावीयं भलीयपरि वित्त आपणरे ॥ ११३ ॥
न्यायनीति वितु लिउं तीउ थानकि वावे ।
जिणसासणि वेचीतु कुलि कमल सु चडावे ।
संघसमुदाइ सहू कोइ तीरथ वंदावे ।
देवजात्र गुरुजात्र करीइ तउ भलउ भणावे ॥ ११४ ॥
इम वितु सु वेचउ धम्म सु संचउ अप्पं जीव म वंचसुउ ।
वली न लहिसउ प्रस्तावु एसउ करउ सफलु भव माणसउ ॥ ११५ ॥
सातक्षेत्र इम बोलिया पुण एकु कहीसिइ ।
कर जोडी श्रीसंघपासि अविणउ मागीसइ ।
कांईउ ऊणं आगउं बोलिउं उत्सूत्र ।
ते बोल्या मिच्छा दुकडं श्रीसंघविदीतुं ॥ ११६ ॥
मूं मूरख तोइ ए कुण मात्र पुण सुगुरुपसाऊ ।
अनइ ज त्रिभुवनसामि वसइ हियडइ जगनाहो ।
तीणि प्रमाणिइ सातक्षेत्र इम कीधऊ रासो ।
श्रीसंघु दुरियह अपहरउ सामी जिणपासो ॥ ११७ ॥
संवत तेरसत्तावीसए माहमसवाडइ ।
गुरुवारि आवी य दसमि पहिलइ पखवाडइ ।
तहि पूरु हूऊ रासु सिव सुख निहाणूं ।
जिण चउवीसइ भवीयणह करिसिइ कल्याणूं ॥ ११८ ॥
जां सिसि रवि गयणंगणिहि ऊगइ महिमंडलि ।
ता वरतउ एउ रासु भविय जिणसासणि ।
निम्मल ज ग्रह नक्षत्र तारिका व्यापइं ।
गयवंतु श्रीसंघ अनइ जिणसासणु ॥ ११९ ॥

इति सप्तक्षेत्ररासः समाप्तः ।

कछुलीरासः

जिम दुरीउविनिट्ठणु रोलनिवारणु निहयणमंडणु, पणमवि सामीउ पासजिणु ।
सरसूरिहिं वंसो वीजीसाहइ वंनिसु रासो धमीय रोलु निवारीउ ।
जिम महीयलि जाणउं अठारसउ देसु वपाणउं गोउलि घणि रमाउलउ ॥
हसंभम परमार राजु पालइं लहिलो सविचार आबूगिरियउ लहि पवरो ।
टयसहीं आदिजिणंदो अप्पलेखउ सिरिमालिरि वंदो लखु लहि नयरी य वसीयण ।
णनयणाह वाम्मणमूली वाहुली विरि लंकविसाली सरसवयाविं मणोहरी य ॥

पस्त—लहि नयरी य लहि नयरी य वसइं बहु लोय ।
चिंतामणि जिम दुकडीयइं दीइं दानु सविसेय हरिसि य ।
सयइं सीलि वयाउइं फुटफपडु नवि ते य जाणइं ।
गालीउं जलु वाडी पीइ धम्मकरिम अणुरत्त ।
नकजीह जिम वसीइ वाहुली सु पवित्त ॥
हिमगिरिधवलउ जिसु कवित्तासो गुरुमंडणु पुन्नलोयविणासो पासगुणणु
भवीयइं गुरु सणि आणंदु आणइ जसखडनदणु न परिमाणइ सरसि भेदि
विहिमगि सिरिपासूरि गुण गाजइ लखाउ उपवास करेइ बीजा दिण
सासणदेवलि देवण आयइ रयणीहि प्रत्यसलि गुरु वदइ कवित्तकीर्ति थंभ-
मालारोपण कीयां गुरुवइ सइ नर आयोय पुन्नरयाइ सविसेसि नदइ बहु य वधाइ
छाहडनंदणु वहु गुणवंतउ दीण लाइ सम्मारविरत्तउ ।
लाषणसंदपरमाणपरिरवणु आगमधम्मविचारविचक्षणु ।
एयोसो गुरुगुणि गुणवउ जाणीउ निरुपदि दविउ निरुत्तउ ।

माणिकपहुसूरि नामू श्रीयसूरिप्रतीछीउ कछूलीपुरि पासजिणभूयणि अहिठीउ॥
सावयलोय करइं तसु भत्ती नवनवधम्ममहूसवजुत्ती।
श्रीयसूरि आरासणिअठाही अणसणविहि पहतउ सुरनाही।
निवीय आंबिलि सोसीय नियकाया माणिकपहसूरि वंदउ पाया।
विणठदेह जस धवलह राणी पायपखालणि हुई य पहाणी।
माणिकसूरि जे कीध जिणधम्मपभावण इकमुहि ते किम वन्नउ भवपाव पणासण।
कालु आसन्नु जाणेवि माणिकसूरि नयरिकछुलि जाएवि गुणमणिगिरि।
सेठि वासलसुउ वादिगयकेसरी विरससंसारसरिनाहतारणतरी।
संघु मेलवि सिरिपासजिणमंदिरे वेगि नियपाटि गुरु ठविउ अहसइ परं।
उदयसिंहसूरि कीउ नामि नाचंती ए नारिगण गच्छभरु सयलु समपीजए।
सूरु जिम भवियकमलाइं विहसंतओ नयरि चहुवली ताव संपत्तओ॥
वन्न चत्तारि वरवाणि जो रंजए राउलो धंधलोदेउ मणि चमकए।
कोइ कम्माली पाऊयारूढओ गयणि खापरिथीइं भणइ हउं वादीओ।
पंडिते बंभणे तापसे हारियं राउलोधंधलोदेविहिं चिंतियं।
वादिहिं जीतउं नयरो नवि कोउ हरावइ उदयसूरि जइ होए अम्ह माणु रहावइ॥
घत्त—जित्त नयरि य जित्त नयरि य सयलमुणिसीह।
नीरंतइं नीरु पडो गरुयदंडडंबरु करंतइं।
धंधलु राउलु चिन्नवइ सामिसाल पइ मझि संतइं।
बंभण तपसीय पंडीया जं त न बंधइं बाल।
सु गुरु कम्मालिउ निज्जणीउ अम्ह अप्पउ वरमाल॥
धंधलजिणहरि सवि मिलिय राणालोय असेस।
उदयसूरि संघिहि सहीउ निवसइ ए निवसइ ए निवसइ वरहरि पीठि॥
सत्थिपमाणी हरावीउ मंत्रिहिं ए मंत्रिहिं ए मंत्रिहिं वादुकमठो॥
सेयंबर तउं हिव रहिजे जे गुरु सिद्धिहिं चंडो।
विसहरु आवतु परिपलि जे लंपीउ ए लंपीउ ए लंपीउं दंडु पयंडो॥
तउ गुरि मुहंतां मिल्हिकरि होई गरडु पणेण।
धाईउ लीधउ चंचुपहे गिलीउ ए गिलीउ ए गिलीउ छालभुयंगो॥
पाउपिहि वि संमुहीय डरडरंतु थीउ वाघो।
जोवणहार सवि थलभलीय हीयडई ए हीयडई ए हीयडइ पडीउ दाघो॥

गुरि मूकीउ रयहरणु कीधउ सीहु कराली।
ता दूरि थीउ हरिसीउ ए हरिसीउ ए हरिसीउ नयरु सवाली॥
थंतरि मुणि गयणठिय तसु सिरि पाडीय ठीव।
ालीउ कालमुहो लोकिहिं ए लोकिहिं ए लोकिहिं धाईय बूंव॥
ठंडीउ माणु कवालधरो धाईउ वंदइ पाय।
वमि सामि पसाउ करी जीनउं ए जीनउं ए जीनउ नइं मुणिराय॥
ताव संधीउ ताव संधीउ ठीव मंतेण।
गणहरि करि कम्मालीयह भिव्वभरीउ अप्पीउ मुहरिण।
रामिहिं जिम वायसह इक्कु निजुत्त सु हरीउ सत्तीण।
धारावरसि कयंनसमि भिडीउ डिंभीउ ताम।
प्रनपउ कोटि वरीस जिनउदयसूरिरवि जाम॥
चड्डावलिहिं विहरीउ प्रभु पहुनउ मेयाहि।
पासु नमंसीउ नागद्रहे समोसरीउ आहाहि॥
जाहु कुहालिय नीसरणी दीवउ पारउ पेटि।
वादीय टोडरु पइ धरए पहुत्तउ पमणउ पेटि॥
केवलिसुकति न जिणु भणए नारिहिं सिद्धि सजाणि।
उदयसूरि पमणउ पलीउ जयम ल रायअभाणि॥
केवलिसुकति म भ्रंति करे नारि जंति भुव सिद्धि।
तिसमपमिका वज्रि जीय लीइं आहारु विसुद्ध॥
पांच पीर दीठंतु दीउ जिणु नंदिमुणिदेवि।
गयकुंभथलि आरूढीय पदमसिरु मकदेवि॥
चिवरणु पिडयिसुद्धि कीउ धमयिहिरंगु प्रसिद्धु।
चीयवंदणदीयाय रचीय गणहरु भुअणि प्रसिद्धु॥
अम्हहं साजणसंठे छम्मासहं कालो।
धसलिणि उयरि ऊपनउ पदि ठाविजि बालो॥
तेरदुरोत्तरयरिसे अप्पउं सापेइं।
चड्डावलि दिविहो जगि लोह लिहावो॥
कहुली जाणवि परमकल सु गच्छभारधरो।
पंचम वरिस पहंति सजणनंदणु दीक्खीउ।
देवाएसु लहेवि गोठीय सत्तमे वरिस लहो।

चउदीसि मेलीउ संघु आरीठवणउं विविहपरे ।
गोतमसामिहिं मंत्रु आपात्रीजइ दिणी दीइए ।
जोगवहाणु वहेवि अंग इग्यारइ सो पढए ।
त संजमि रणि जीतु सयरह चुकउ पंचसरो ॥
गूजरधर मेवाडि मालव ऊजेणी वहू य ।
सावय कीय उवयार संघपभावण तहिं घणी य ॥
सात्रीसइ आपाडि लखमण मयधरसाहुसूओ ।
छयणीनयरमझारि आरिठवणउं भीमि किओ ॥
कमलसूरि नियपाटि सइं हथि प्रज्ञासुरि ठवीओ ।
पमीउ पमावीउ जीवु अणसणि अप्पा सूधु कीओ ॥
पणि पहुत्तउ सुरलोइ गणहरु गंगाजलविमलो ।
तासु सीसु चिरकालु प्रतपउ प्रज्ञातिलकसूरे ॥
जिणसासणिनहचंदु सुहगुरु भवीयहं कलपतरो ।
ता जगे जयवंत उम्हाउ जां जगि ऊगइ सहसकरो ।
तेरत्रिसठइ रासु कोरिंटावडि निम्मिउ ।
जिणहरि दिंतसुणंतं मणवंछिय सवि पूरवउ ॥

फडूलीरासः समाप्तः ॥

सालिभद्दकक्क

भलि भंजणु कम्मारिवल वीरनाहु पणमेवि ।
पउसु भणइ कक्कक्करिण सालिभद्दगुण केइ ॥ १ ॥
कत्थ वच्छ कुवलयनयण सालिभद्द सुकमाल ।
भद्दा पभणइ देव तुहु कह थिउ इत्तियवार ॥ २ ॥
करुणामयनीरनिहि समवसरणि ठिउ सामि ।
अज्जु माइ मइं वंदियउ वीरनाहु सियगामि ॥ ३ ॥
सरउं कुहु ता पुत्त कहि का देमण किय वीरि ।
कवणु अन्नु वखाणिइउ कंचणगोरसरीरि ॥ ४ ॥
धारसमुद्दह आगलउ माइ कहिउ संसारु ।
संजमपयहणहीण तसु किमइ न लब्भइ पारु ॥ ५ ॥

गयममत्त धीरियपवर जे जगि पुरिसपहाण ।
सालिभद्द भद्दा भणइ संजमु सोहइ ताण ॥ ६ ॥
गारवयव्विउ विसयउं काइउ मग्गउं माइ ।
जइ मोकलउ तउ व्रतु लियउं तुम्हह पाय पसाइं ॥ ७ ॥
घणकुंकुमचंदणरसिण तुह तणु वासिउ वच्छ ।
वयह परीसह किम सहिसि मुणि गंगाजलसच्छ ॥ ८ ॥
वाणइ पीलिय पंचसइं वंदगसूरिहि सीस ।
साहु माइ दुस्सहु सहइं एरिस धम्म जिणीस ॥ ९ ॥
नवि वउ लिव्वइ तरुणपणि सालिभद्द सुकुमाल ।
महु कुलमंडण कुलतिलय कुलपईव कुलवाल ॥ १० ॥
नाउं गव्वियहिं कुलतणइं पाविव्वइ भवछेउ ।
माइ मरीचि भव भमिउ वड्ढमाणजिणुदेउ ॥ ११ ॥
चरणु लेसिजइ पुत्त तुहु नंदण नीयपवीण ।
रोअंती भद्दा भणइं मइं किम मेल्हिसि दीण ॥ १२ ॥
चाकचक्किबलदेव तह वासुदेव बलयंत ।
माइ तडि ट्ठिय परियणह कड्ढिउ लेइ कयंतु ॥ १३ ॥
छण महलंछणसमवयण तुह भज्जा बत्तीस ।
ते विलवंती पेमभरि किम करिसि कुलईस ॥ १४ ॥
छाइ जेम उड्डइ सयलु अंतेउरु घरसारु ।
माइ जीवु जउ संचरइ छंडेविणु ढंढारु ॥ १५ ॥
जणणि भणइ जां बालपणु तां पुत्तह पडिबंधु ।
तारुण्यइ बुल्लाविअउ बहु उग्गाहइ कंधु ॥ १६ ॥
जाणिउ देह असारवलु भरहिं मूकउ मोहु ।
ताव माइ तसु विहिडियउं केवलनाण निरोहु ॥ १७ ॥
झलकंतउ कंचणघडिउ सत्तभूमिपासाउ ।
विहवह कोडाकोडि घण कहि कोइ ऊणउ ठाउ ॥ १८ ॥
झाणानलि जिणि कम्मवणु बालिउ गहिउं नाणु ।
वीरनाहु महु हिय सरणि रिद्धि रमणि अपमाणु ॥ १९ ॥
नरवइ सेणिउ तुम्ह पहु सुरगोभद्दु सुताउ ।
निच्चु नवलं आभरणु कहि को चित्ति विसाउ ॥ २० ॥

माइक्कु सेणिउ तुम्ह महु जइ किरि कहिइउ माइ ।
ता घणु कंचणु गेहवलु खण वि न चित्ति सुहाइ ॥ २१ ॥
टलटलेसि धम्मत्थ पुण धम्मगहिल्ला बाल ।
धम्म करेवा महु समउ तुहु घणुरक्खण वाल ॥ २२ ॥
टालिसि चरण म माइ मइं देइ महावयसिक्ख ।
वड्ढमाणजिणवरकिरिहिं पुन्निहिं लब्भइ दिक्ख ॥ २३ ॥
ठणकइ पुत्त सु चित्ति महु पुत्तविहूणिय नारि ।
विहवह सुवइ दुहु सहइ दीणी परघरवारि ॥ २४ ॥
ठामि ठामि जिउ हिंडिइउ भव चउरासीलक्ख ।
माइ जि सहिया नरयदुहु ताह कु जाणइ संख ॥ २५ ॥
डरपिसि सुणियइ सीहसरि निसुणिसि सिवफिक्कार ।
भुक्किइउ तिसिइउ वच्छ तुह किम हिंडिसि नरसार ॥ २६ ॥
डालिहि चडियउ डालिसउ माइ म हल्लावेउ ।
पच्छइ कहि हउं चरणु कहि वड्ढमाणुजिणदेउ ॥ २७ ॥
ढलइं चमर वर पुत्त तुहु सीसि धरिज्जइ छत्तु ।
मणिसीहासणि बइठणउं किणि कारणि वइचित्तु ॥ २८ ॥
ढाउ विलग्गउ माइ महु सिवपुरि रज्जहरेसि ।
थोलावउ ठिउ थीरजिणु रहिसु न भवह किलेसि ॥ २९ ॥
नवउं अंतेउरु नवउं घरु नवजोवणु नवरंगु ।
सालिभद्दु नवकणयमणु दल करि चरणपसंगु ॥ ३० ॥
नाणु रसायणु करिसु हउं कम्मिंधणदाहेण ।
तिणि आऊरिसु माइ तणु जरा न दुक्कइ जेण ॥ ३१ ॥
तरुअरतलि आवासु मुणि भिक्खह भोयणु पाणु ।
भूमंडलि आसणु सयणु वच्छ चरणु दुहठाणु ॥ ३२ ॥
तालउ भंजिवि पइसरइ माइ गेहि जमराउ ।
छुट्टइ थाडु न वुड्ढु जणु पडइ अचिंतिउ घाउ ॥ ३३ ॥
थल डूंगर पाहण सयण कक्कर कंट तुसार ।
पाणहयच्छिउ गुरि सहिउ हिंडिमि केम कुमार ॥ ३४ ॥
थाहररहि न मज्झु मणु माइ कहिउ तउ सम्मु ।
वीरनाहु जिणु वयहरउ लेसु चरणु घणु धम्मु ॥ ३५ ॥

दहविह धम्मु करेसि किम किम सोसिसि निय अंगु ।
पच्छ तहं ता दोहिलउं होसिइ तुह सीलंगु ॥ ३६ ॥
दाणसीलतवभावणह अणु न सोसिउ जेहिं ।
माइ मणूभवु दुल्लहउ आलिहि हारिउ तेहिं ॥ ३७ ॥
धम्मु विहउ जिम रिसहजिणि तिम किज्जइ सुअ इत्थु ।
पहिलउं साखिहिं पसरिउ अंति पयासिउ तित्थु ॥ ३८ ॥
धारउ जमरायहतणउ पइह अचिंतिउ माइ ।
कहिउ लिज्जइ जीवु तिणि धुंव न धारइ काइं ॥ ३९ ॥
नवकप्पूरिहि पूरिया नंदण कोमल केस ।
केलगियालइं घासिया किम उद्धरिसि असेस ॥ ४० ॥
नारायणवंधवु निसुणि तहिं दिणि दिक्खिउ बालु ।
सोसु अग्गि दुस्सहु सहइ माइ सु गयसुकुमालु ॥ ४१ ॥
पइ सुअ तहं पइरिणां रमियउं दिव्व अहाउ ।
सुअ उच्चासिहिं सोसिया केम करेसि विहाउ ॥ ४२ ॥
पालिसु पंच महव्वइं बारस अंग पढेसु ।
धीरनाहिसुं माइ हउं नवकप्पिहि विहरेसु ॥ ४३ ॥
फणिरायह सिरि पुत्त मणि मुल्लेण व बहुमुल्लु ।
सा गिण्हंता पाणहर संजमभरु तस तुल्लु ॥ ४४ ॥
फाडिज्जइ करवत्तु सिरि पाइज्जइ कत्थीरु ।
माइ दुक्खु नाम्य सुणिउ भइ उल्लसइ सरीरु ॥ ४५ ॥
बत्तीसहं पहुंकि तउं सयणु करइ नितु जाइ ।
इंगरि कासुगि करिसि किम बलि किज्जउं तह काय ॥ ४६ ॥
बार मास कासग्गि रहिउ बाहुबलि मुणिराउ ।
नाणह कारणि निणि सहिउ सीअ छुअ जन्तु वाउ ॥ ४७ ॥
भमिसि विहारिहिं भारिअओ नंदण तुं सुकुमाल ।
धीर जिणंदह चरणु पुणु मुणि वायवउं कालु ॥ ४८ ॥
भारु माइ मुक्किय वहइ रासहवसहपमुक्क ।
आरंकुसकसि ताडियइं ताहं कु जाणइ दुक्खु ॥ ४९ ॥
मयलंछण जिम तारयहं सयलहं बिल भत्तारु ।
तं बत्तीसहं वहुअरहं एकु देव आधारु ॥ ५० ॥

माइ महामुणि वीरजिणु कुलगुरु मह मंताणि ।
तसु मइं अप्पं अप्पिउं जिम सुहु होइ निवाणि ॥ ५१ ॥
यह तउं संजमु लेसि सुअ मेल्हिवि सयलु मिणेहु ।
ता गोभइ अभागिइउ हा पिगु छुट्टउ गेहु ॥ ५२ ॥
याइवनाइगु नेमिजिणु गुणसोहग्गनिवासु ।
माइ सिद्धिपट्टणि गयउ मेल्हेविणु गिरयासु ॥ ५३ ॥
रहि रहि नंदण वयणु सुणि मा मा मइं संनावि ।
तुह विणु नितु कुण पूरिसइ मुक्काहरणह वावि ॥ ५४ ॥
राहडि पूरिय माइ तइं महुकेरी सवियार ।
दिक्क दियावह जिणभणिय जा तियलोअह सार ॥ ५५ ॥
लहकइंसउं संजमु लियए नंदसेणु मुणिराउ ।
सो संजमुप्पव्वइपडिउ सुअ भोगह कम्मपसाय ॥ ५६ ॥
लाहइं विणिजु करेसु हउं छेहउ माइ चएसु ।
ईणि असारि देहडि य संजमु सारु गहेसु ॥ ५७ ॥
वच्छ ति नारी दुक्कनिहि जाइं न कंतु न पुत्तु ।
महुत्तइं नंदण जाइयइं हिंव आविउं निरुत्तु ॥ ५८ ॥
वार स माइ सलक्खणीय तं सुहुत्तु सुपवित्तु ।
धन्न ति बंधव जणइजण चरणु लेइजइ पुत्त ॥ ५९ ॥
सहसाकारिहिं गहियवउ सुमइ कंडरिएण ।
नंदण तेण य नरइदुह पामिय भट्टवएण ॥ ६० ॥
सारउं साटउं मिलिय सुह माइ कहिउ तउ सम्मु ।
वीरनाहु किउ ववहरओ लेसु चरणु धणु रम्मु ॥ ६१ ॥
पलह मणोरह पूजिसइं सज्जण होसिह सोसु ।
नंदण तुं थाइसि समणु एउ महु कम्महं दोसु ॥ ६२ ॥
पाससासवेयणपमुहवाहि माइ तणु मूलु ।
जीवु तेहिं धंधोलियइ उड्डइ जिम लहु तूलु ॥ ६३ ॥
समल देह कप्पड समल रत्तिदिवस गुरुआण ।
होइसिइं तुं भद्दा भणइ परआइत्त पराण ॥ ६४ ॥

सालिभद्दु जंपइ जणणि ए मइ कहिउ जिणेण ।
संजमविणु भवभयहरणु ताणु न किज्जइ केण ॥ ६५ ॥
हसतरोअंता पाहुणउ ताम हसंता होउ ।
सालिभद्द संजमु लियइ मइ बुज्झिअइ पमोहु ॥ ६६ ॥
हारमउडकुंडलकलिउ चडिऊ पुरिसविमाणि ।
धीरपासि पहुतउ कुमरु जण दिज्जंतइं दाणि ॥ ६७ ॥
क्षमासमणि भद्दाणणइं दिक्खिउ जिणिहि कुमारु ।
सालिभद्दु बहु तपु करइ आगमु पढइ अपारु ॥ ६८ ॥
क्षामेविणु जिण मुनिसहिउ अणसणु गहिउ उवसु ।
सव्वट्ठह सिद्धिहि गयउ सालिभद्द तहिं थसु ॥ ६९ ॥
महाविदेहि सु मुणि गहवि केवलनाणु लहेवि ।
सासयसुक्खु वि पावियइ भवियह धम्मु कहेवि ॥ ७० ॥
इहु कहियउ कयह कुलउ इकहत्तरि कडुयाह ।
भवियउ संजमु मणि धरउ पढहु गुणहु निसुणेहु ॥ ७१ ॥

सालिभद्दकथा समाप्त.

दूहामातृका

भले भलेविणु जगतगुरु पणमउं जगह पहाणु ।
जासु पसाइं मूढ जिय पावइ निम्मलु नाणु ॥ १ ॥
उँकारिहि उवरउ परमिट्ठिहि नवकारु ।
सियमंगलु कल्लाणकरो जासु वि नामुवारु ॥ २ ॥
नयनिहि धम्मिहि संपदए सकयपहरिरिद्धि ।
धम्मु इहा करि धीर जिय सइ कर आवइ सिद्धि ॥ ३ ॥
मणगयवय हाणुंकुसिण ताणिउ आणउ ठाउं ।
जइ भंजेसइ सीलपणु करिसइ सियफलहाणि ॥ ४ ॥
सिज्झइ तसु सवि कज्जइ जसु हियइ अरिहंतु ।
चिंतामणिसारिच्छ जिय एहु महाकप्पु भंतु ॥ ५ ॥
धंधइ पडियउ जीव तुहुं रणि रणि तुट्टइ आउ ।
दुग्गइ कोइ न रक्खिसइ सयणु न बंधवु माउ ॥ ६ ॥

अणहंता पयडेसि तुहु दोस पराया मूढ ।
नियदोसण पव्वयसरिस ते सवि कारिस गूढ ॥ ७ ॥
आइ किजिय जिणधम्मु करि सुत्थइ संबन्धु लेवि ।
अग्गइ किंपि न पामिसए अत्थइ भरिया गेह ॥ ८ ॥
इण भवि लद्धी रिद्धि पइ परभवि केव लहेसि ।
अच्छिसि तिणि धणि मोहियउ जइ न सुपत्तह देसि ॥ ९ ॥
ईसरु देखिउ कोइ नरु नीधिणु मणि दूमेइ ।
एउ न जाणइ मूढ जिउ जणु वावियउं लुणेइ ॥ १० ॥
उप्पलदलजलबिंदु जिव तिव चंचलु तणु लच्छि ।
धणु देखंता जाइसए दइ मन मेलत अच्छि ॥ ११ ॥
ऊयरु जउ भरियउं कुपुरिसह तो भरियउ भंडारु ।
इक्कि जीव पुन्निहि पयर लक्खह कोडि आधार ॥ १२ ॥
रिणि राउलि जलि जलणि घरि तक्करि धणु घणु जाइ ।
धम्मकज्जि जउ मग्गियए ताव परमुहु थाइ ॥ १३ ॥
रीस करंता जीव रीह अच्छइ अवगुण तिन्नि ।
अप्पउं ताविसि परु तवसि परतह हाणि करेसो ॥ १४ ॥
लिहियउं लब्भइ सिरतणउं जइ चालियइ समुहु ।
लच्छिहि केसवु संगहिउ तिणि विसि धारिउ रुहु ॥ १५ ॥
लीलइ धम्मु जु होइसए सेवंता जिणनाहु ।
तं नवि मिच्छत्तिहि सहिउ जइ तपु करिसि अवाहु ॥ १६ ॥
एकहि ठावि वसंतडा एवडु अंतरु होइ ।
अहिडंकिउ महियलु मरए मणि जीवइ सहु कोइ ॥ १७ ॥
ऐ आणाइ समतण जीव न बूझइ हेव ।
हिंडइ रोसिं पूरिया न करइ उपसमसेव ॥ १८ ॥
ओदउ नहु लोभहतणउ जीव न फिट्टइ निच्चु ।
अहनिसि तेण भमाडियउ न गणइ किच्चु अकिच्चु ॥ १९ ॥
ओसरि नेह अभिग्ग पुणु पिच्छिस हिय भज्जंति ।
चंदपल किरणेहि तहि दूरठिया विहसंति ॥ २० ॥
अंधउ अंधइ ताणियए कवणु कहेसइ मग्गु ।

केवलिपहु निव्वाणि गउ धम्मु मणंतरि भग्गु ॥ २१ ॥
अकयधम्मि जइ माणुसह हुइ नवकारु वि अंति ।
तिणि पुरिहि सह देवगइ अहवा मुत्ति न भंति ॥ २२ ॥
कयहिहि माया मूढ जिउ वंचइ लोउ अप्पाणु ।
तिणि पावियहि भवि भवि दुहिय नवि पावइ निव्वाणु ॥ २३ ॥
चउहइ कालु कयंत जगि को अज्ज वि को कल्लि ।
संजमि गयपरि आगहिउ सिद्धिसरणि जिय चल्लि ॥ २४ ॥
गयघरमसा जेम हिय मा हिंडसि नरसीह ।
हणि कसाय दमि इंदियइ गणिया लब्भइ दीह ॥ २५ ॥
घडिय न लब्भइ अग्गलिय इंदह अरहइ धीरु ।
घउ जाणिउं जिणधम्मु करि जावह वहइ सरीरु ॥ २६ ॥
इवि जाणिज्जइ सो दिवसु जणु पुणु मरइ निरुत्तु ।
छड्डेविणु परहोहलउ धम्मु करेवा जुत्तु ॥ २७ ॥
चंचलु चित्तु पयंगु जिम वयबंधण न धरेसि ।
धम्मारामि विणासियइ मूढा हत्थ म लेसि ॥ २८ ॥
छज्जउ पयडउ जीव तुहुं उज्जमु करि जिणधम्मि ।
सुहियं दुहियं माणुसह पासु न मेल्लइ कम्मु ॥ २९ ॥
जरजज्जरि देहडी हुई य पंडरि हुया केस ।
अरि जिय धम्मु करेजि तउं गइय स वालियवेस ॥ ३० ॥
झलहलंत जिणवरपडिम जेह करावइ दव्वि ।
सग्गपवग्गहतणा सुह ते पामेसइ सव्वि ॥ ३१ ॥
झ हु चिंतंता विहवसिण कज्जु अनेरउं होइ ।
राउलि बलियउ दुब्बलउ देव न बलियउ कोइ ॥ ३२ ॥
टलइ मेरु नियठाणह जइ पच्छिम उग्गइ सूरु ।
पुव्व किवउं तो नवि चलइ कम्ममहाभरपूरु ॥ ३३ ॥
ठगियउ हिंडिसि जीव तुहुं धारिउ विसि मिच्छत्ति ।
सम्मत्तह रयणह रहिउ न लहसि सिवसंपत्ति ॥ ३४ ॥
डणउ जेम्व गलि संकलिउ भवि भवि कुणवउ जीव ।
नवि छुट्टिज्जइ तो वि तह जइ लंघिजइ दीवु ॥ ३५ ॥
ढणहणंति इंदिय तुरय पाडेसइ भवखोहि ।

देविणु वरसंजमिकविउ अरि जिय सग्गि निरोहि ॥ ३६ ॥
णवि हसंतु वि जोइयए निचन्दु झाणु धरेवि ।
ता दीसइ जिम जगतगुरु सहजाणंदु सु देउ ॥ ३७ ॥
तउं एकल्लउ सहसि जिय खाएसइ परिवारु ।
विहवु विहंचिउ लेइ जणु पाव न विहंचणहारु ॥ ३८ ॥
थक्केसइ धणु सयणु जणु कोइ न सरिसउ जाए ।
पावु पुन्नु तं अज्जियए तं परि अग्गइ थाइ ॥ ३९ ॥
देह देइ मन आलसु करि मन्नुरालाविहि दाणु ।
चलिय देह हिव विहवसिण करि सफलउ अप्पाणु ॥ ४० ॥
घर उप्पज्जइ केवि नर परउवयारसमत्थ ।
कइ देइ के कम्मवसि जणजण उडुइ हत्थ ॥ ४१ ॥
नइ वहमाणी सघणजल सुक्कइ इयर तलाय ।
दायर वड्ढइ रिद्धिडी मग्गण निधण थाइ ॥ ४२ ॥
पढिउ गुणिउ घणु तवु तविउ संजमु किउ चिरकालु ।
जइ कसाय नवि वसि करसि ता सहु इंदियजालु ॥ ४३ ॥
फलु दिक्खिउ तरवरतणउं दिट्ठि म घल्लिसि बाल ।
तं नवि पाविसि पुन्नविणु छड्डिसि पारी लाल ॥ ४४ ॥
वलि किज्जउं तह सुहगुरुह जा जगु मारगि लाइ ।
उम्मग्गह दंसणि गमणि जणु पुणु पुहवि न माइ ॥ ४५ ॥
भरहेसरि आयरिसघरे उप्पन्नउं वरनाणु ।
भावण सव्वहि अग्गलि थ तपु संजमु अपमाणु ॥ ४६ ॥
मयणु न खीणउ जाहतणि ते नवि बंभचारि ।
मयणविहूणह संजमि लुंचणि छारि न दोरि ॥ ४७ ॥
जसि धवलिउ जगु जेहि मुणि नाउं लिहाविउ चंदि ।
कम्म हणवि जे सिद्धि गय ताह चलण निलु वंदि ॥ ४८ ॥
रे वाहा मग्गेण वहि मा उम्मूलि पलास ।
कल्हे जलहरु थक्किसए कयण पराई आस ॥ ४९ ॥
लइ वयभरु परिहरवि घरु भंजिवि भवनियलाइं ।
जाव न पहुच्चइ तुज्झतणि जमरावस्स दलाइं ॥ ५० ॥
वयणु न जंपउ दीणु कसु जं भावइ तं थाउ ।

अथिरकडेवरकारिणिहि कहि किम खिज्जइ काउ ॥ ५१ ॥
सुमिणंतरि मेलावडउ अहनिसि पहर चियारि ।
पसरिय निय निय दिसि चलए अरि जिय सुमणु विचारि ॥ ५२ ॥
परकिसोर मत्तकरि दमइ करि करेविणु कड्ढु ।
निय जीवु कोवि न वसि करए थिउ गलियाऊ विवड्ढु ॥ ५३ ॥
संजमि नियमिहिं जे गया ते गणि सारा दीह ।
अवर जि पायारंभि गय ताह फुसिज्जउ लीह ॥ ५४ ॥
हिंडेविणु भवकोटिसइ लद्धउ माणुसजम्मु ।
तत्थ वि विसयह मोहियउ न करइ जिणयरधम्मु ॥ ५५ ॥
क्षणभंगुरु देहहतणउं अरि जिय कोइ विसासु ।
भाय न सुचइ जिणु मणह जाय फुरयइ सासु ॥ ५६ ॥
मंगलमहासिरिसरिसु सिवफलदायगु रम्मु ।
दूहामाई अरिज्जयइ पउमिहिं जिणयरधम्मु ॥ ५७ ॥

इति श्रीधर्मसारदूहा समाप्ता ।

चर्चरिका

जिण चउवीस नमेविणु सरसइपय पणमेवि ।
आराहउं गुरु अप्पणउ अविचलु भावु धरेवि ॥ १ ॥
कर जोडिउ मोलणु भणइ जीविउ सफलु करेसु ।
तुम्हि अवधारह धंमियउ चचरि हउं सासु ॥ २ ॥
मणि उंमाहउ अंमि सुहु मोकलिहि करिउ पसाउ ।
जिम्व जाइवि उज्जिनगिरि वंदउं निरुपणनाहु ॥ ३ ॥
नइ विसमी डुंगर घणा पूस दुहेलउ मग्गु ।
पूगटियइ सुणमि तुहुं दुयलि होसइ अंगु ॥ ४ ॥
बालइ जोयणि नं गिया अंमि जि नहि गिरिनारि ।
ते जंमंतरि दुत्थिया हिंडहिं परघरबारि ॥ ५ ॥
इंअ अमारी देहडी अंमि जि विदपइ साह ।
तिणि कारणि उज्जिनगिरि वंदउं नेमिकुंआह ॥ ६ ॥
करि करवली फूपडी सिरि पोटली ठवेवी ।

मिलिउ पम्मियसाणडउ उज्जिलमग्गि वहेई ॥ ७ ॥
इह पहवाणइ पउहडइ दीसइ सीहविमाणु ।
रैवतुगइ थोवाडी अंबुडाग्गेवाणि ॥ ८ ॥
इय पहवाणइ जि हइ हियडउं रइ न कोइ ।
दिनि दिनि पंडइ नेमिजिनु पहिउ गिरिमिहरेहिं ॥ ९ ॥
पाइ पहुहइ कामीउ उल्लालइ हु पाई ।
जे कायर ते पलिया जे साहसिय ते जाइं ॥ १० ॥
साहिलडा सरवरलिहिं उगिउ दवणाणंदु ।
उज्जिलि जंते धंमिए गुंथिउ नेमिहिं मउडु ॥ ११ ॥
सहजिगपुरि थोलेविणु गंगिलपुरहिं पहुत्तु ।
माटी कहिजि मंदिरडउ अंतु जिणेजे पुत्तु ॥ १२ ॥
जइ लग्गमोयरु थोलियं पेखिवि बहु य पलाम ।
तउ हियडउं निवरु थिउं मुक्क कुटुंबह आस ॥ १३ ॥
विसमिय दोत्तडि नइ घणिय डुंगर नन्थि च्छेऊ ।
हियडउं नेमि समप्पियउं जं भावइ तिव तेऊ ॥ १४ ॥
करयंदियालं थोलियउं अणंतपुरु जहिं ठाइं ।
दिसइ तहि आवासडउ हियउं विअडि थाइं ॥ १५ ॥
नालियरीडुंगरितडिहिं बहुथोराउलिठाइं ।
धम्मियडा थोलिउ गिया अमुलतणइ सहाइं ॥ १६ ॥
भालडागदुसुंनउ अवियडउं वसेइ ।
धम्मिय कियउ वीसावडउ सुरधारडीघरेहिं ॥ १७ ॥
ओ दीसइ उडुंघलउ सो डुंगरु गिरनार ।
जहिं अच्छइ आवासियउ सामिउ नेमिकुमारु ॥ १८ ॥
मंगूखंभि न मणु रहिउ अंतु वहडेउ दिट्ठु ।
खडहड अंतु पखालियं गोवाडलिहि पहुट्ठु ॥ १९ ॥
भाद्रवई जह थोलिउ नाचइ धंमिउ लोउ ।
उज्जिलि दीवउ वोहियउ सुरठडिय हउ जोउ ॥ २० ॥
खंडइ देउलि जउ गिया सांकलि थोलिवि ।
धंमिय कियउ आवासडउ वंचूसरितलि नेई ॥ २१ ॥
ऊजिलमग्गि वहंता रजु लागइ जसु अंगि ।

थलि किज्जउं तसु घमियइ इंदु पसंसइ सग्गि ॥ २२ ॥
जे मलि मइला पहियडा ते मइला म भणेजे ।
पावमली जे मइलिया ते मइला इ सुणेजे ॥ २३ ॥
एउ थाउइ लोडउं कोटउं तलि गिरिनारु ।
ओ दीसइ थवणथली धवलिपतुंगपपार ॥ २४ ॥
घर पुर देउल धवलिया धज धवली दीसंति ।
धंमी मा थवणथली ऊजिलितलि निवसंती ॥ २५ ॥
थउणथली मेलेविणु जउ लागउ गइमग्गि ।
तउ धंमिउ आणंदियउ हरिसु न माइउ अंगि ॥ २६ ॥
रिसहजिणेसरु वंदियउ गहि आवासु करेवी ।
नाचइ धंमिउ हरसियउ हियडइ नेमि धरेवी ॥ २७ ॥
गडु थोडी जउ चालीयउ तउ मणि पूरिय आस ।
थलि किज्जउ हुउं जंघडिय जोयण बूढ पंचास ॥ २८ ॥
टोलह उपरि मागडउ सो लंघणउ न जाइ ।
पाउ घिसियउ घिसमउ पडइ हियं विअडइं थाई ॥ २९ ॥
अंधणयाणी नइ वहइ दिट्ठु दमोदरु देउ ।
अंजणसिलहिं जि अंजिया धम्म ति नयणा वेउ ॥ ३० ॥
तरवरलणइ पलांघडे रूडउ मागु जंघेवि ।
कालमेघु जोहारियउ वन्नापदि जाणवी ॥ ३१ ॥
अंबाजंबूराइणिहिं बहु वणराइ विचित्त ।
अंबिलिए करयंदिएहिं वंमजालि सुपवित्त ॥ ३२ ॥
नीहरपाणिउ खलहलइ वानर करहिं पुकार ।
कोइलसद्दु सुहावणउ तहिं डुंगरि गिरिनारि ॥ ३३ ॥
जउ मइं दिट्ठी पाजली उंच दिट्ठु थडाऊ ।
तउ धंमिउ आणंदियउ लद्ध सिवपुरि ठाउ ॥ ३४ ॥
हियडा जंघउ जे पडइं ता ऊजिलि चडेजे ।
पाणिउ पीउ गइंदयइ दुग्ध जलंजलि देजे ॥ ३५ ॥
गिरिवाइं झंझोडियउ पाय थाहर न लहंति ।
कडि त्रोडइं कडि थक्की हियडउं सोसइ जंति ॥ ३६ ॥
जाव न धंधलि घल्लिया लखुपत्तीपाण ।

तांव कि लब्भहिं गिंतिया हिंगडा ऊणत्ताण ॥ ३७ ॥
डुंगरडा अथो फरिं लग्गउ सीयलि वाउ ।
हुय गुणं नवदेहडी अंमुलि किंगउ पमाऊ ॥ ३८ ॥

पर्यंतिका समाप्ता

मातृकाचउपइ

त्रिभुवनसरणु सुमरि जगनाहु जिम फिट्टइ भवदयं दुहदाहु ।
जिणि अरि आठ करम निर्दलीय नमो जिन जिम भवि नावऊ वलिय ॥ १ ॥
आंचली-सवि अरिहंत नमिवि सिद्ध सूरि उज्झायय साहू गुणभूरि ।
माईयवावनअक्षरसार चउपईयंधि पढिउं सुविचारु ॥ १ ॥
भले भणेविणु भणीअइ भलउं तिहुयणमाहि सारु एतलउं ।
जिनु जिनवचनु जगह आधारु इतीउ मूकिउ अवरु असारु ॥ २ ॥
मीडउं पडिउं भवनागमा जउ समिकत्ति लीणु आतमा ।
जिनह वयणि करिजे निहु ठाउ हृदय रहवि तिहुयणनाहु ॥ ३ ॥
लीह म लंघिसि जिणवरिभणी जो रिधि वंच्छह सिवसुहतणी ।
चहुंगति फीटइ फेरउ वडउ पाच्छइ जाइउ सिवगढि चडउ ॥ ४ ॥
लीहं बीजी वे उपरि करे देवु गुरु हीयडइ संभरे ।
क्षणु एकु मन करिसि प्रमादु जिम तुम्हि पामउ मुक्तिसवादु ॥ ५ ॥
ॐकारि सुमरि अरिहंतु जो अठकमहं कालु कियंतु ।
अनु सिवसुक्खतणउ दातारु मनह म मेल्हिसि तिहुयणसारु ॥ ६ ॥
नव निहाण ते पामइं तिम जीह जिणवयणु हियइ परिणमइ ।
सिवसंपत्ति तीहहकडी जीह जिणआण हियइंसउं जडी ॥ ७ ॥
मनु चंचलु जे अविचलु करइं जिणह आण सिरऊपरि धरइं ।
हणइं कसाय इंदीय संवरइं ते सिवनयरि सुखि संचरइं ॥ ८ ॥
सिद्धउं काजु सहू तीहतणउं जेहि जीवि कीधउं जिणवरभणिउं ।
छेदिउ आठकरमनी वेलि गया मुक्ति दुई पेलावेलि ॥ ९ ॥
बंधइं पडिया दीह मन भमउ अप्पारामि जिणवरिसउं रमउ ।
भयह तापु नवि लागई अंगि उदु वहुफलु पामउ सिवसंगि ॥ १० ॥

अनुव्रतु जिनह आण मनि धरे उपसमु विवेकु संवरु करे ।
अरिषडु अंतरंगु निग्रहे इणि परि जीव सुकृतु संग्रहे ॥ ११ ॥
आलिहि आलोउ म इंपिसि किमइ जे जिनुवयणु हियइं तू गमइ ।
करमुबंधु पडतउ थांभवे भापासमि वि सहजि अनुभवे ॥ १२ ॥
इणि संसारि दुपभंडारि लहइ जीव काय धम ऊगारि ।
वीतरागि जं आगमि कहीउ करे सह जि पणु भावनसहीउ ॥ १३ ॥
ईमइ म कारमि कूडउ सोसु मोचइ जिनह वयणि करि तोसु ।
जोइउ आगमनणउ विचारु पाछइ भरिन परतभंडारु ॥ १४ ॥
उप्पलदलउप्परि जिम नीरु ते सउं चंचलु जीव सरीरु ।
धणु कणु रहणु सहणु निम सहू दीसइ धम्मु एकु घर रहू ॥ १५ ॥
उपरि देखि देव न हु हाथु तेरहि तिहुयणि कोइ न सनाथु ।
नाणीउ पहसिजान जिनसरणि जिम न पामीअह जंमणमरणि ॥ १६ ॥
रिद्धिहितणउ लाभु इम लेजि सानिहि पेति थीतु थावेजि ।
उपर सिंचे भावनानीरि थगमरु नोही जिम लाहरइ सीरि ॥ १७ ॥
दीणु दीणु ते चहुगति भमइ जे जिन वीतरागु नवि नमइ ।
नोही काइ धरमयासना ते नही जाइं मुक्तिआसना ॥ १८ ॥
लिपावीइ सुतु सीकंतु तेह लाभ नवि लाभइ अंतु ।
ज्ञानतणउ गुण एवडु कोइ वीतराग तु ज्ञानलतु होइ ॥ १९ ॥
लीलअमल संसारु तरेसि जइ जीव जिनधमु पकडुणु लेसि ।
सुगुरनी जाम विलगीउ करी जान जीव भवसाइरु तरी ॥ २० ॥
एकह परि पामिसि भवपारु जइ समिकत कर अंगीकारु ।
वीरनाथु कहइ आगमि तोइ विणु समिकत सिद्धि नवि होइ ॥ २१ ॥
प अ वयनु जोइ जिणवरतणुं तहि ऊपमा किसी हउं भणउं ।
जिणहं वइण न ऊपम काइ त्रिभुवनतणी सुद्धि जेह माहि ॥ २२ ॥
ओघहं पडीउ पापु जे करिसि तउ संसारु अनंतउ फिरिसि ।
जोईउ पणु सिद्धंत विचारु करिसि धम्मु तउ पामिसि पारु ॥ २३ ॥
ओपपु करे जीव जिनि भणिउं अछइ दुपु अठकरमहतणउं ।
थाहिजि ओपदि कांई तु थाइ धरमोपधविणु दुपु न जाइ ॥ २४ ॥
अंतु न लाभई इह संसार कांइ तु जीव हीइ न विचार ।
एक जु धमु करे सपाइ लेउ मेलहइ सिवनअरीमाहि ॥ २५ ॥

अनुदिनु भत्ति करे जिनराय पूजि त्रिकाल तासु पहुपाय ।
मानपतु दोहिलइं पामेसि पाच्छइ जिनपति काहा नमेसि ॥ २६ ॥
कपटिहि मायां वंचइं लोकु ते नवि लहइं सिद्धिसंजोगु ।
भमडइं जीव चहुंगतिहि मज्झारि इणपरि भव पूरइं संसारि ॥ २७ ॥
खज्जइ जगु एउ कालकु अंति एह एतला नही काइ भ्रंति ।
जिणह वइणु विडिजा इकमणउ भउ फीटिसइ कितांतहतणउ ॥ २८ ॥
गब्भवासि जो दिलउं जाण तउ तउं माने जिनवरआण ।
फेडइ दुपु सहू जिनराउ तउ सिवनइरि अ पावइ ठाउ ॥ २९ ॥
घरिं घरु हिंडिसि जीव अणाहु जइ न नमिसि जिनु तिहूअणनाहु ।
जिनुधमविणु सुपु नहीं संसारि अवर टमालि दीस मन हारि ॥ ३० ॥
डब्भइं सरिसु धम्मु जइ करिसि तउ भंडोरु परत नउ भरिसि ।
जे पणु लागिसि लोकप्रवाहि रडभड हुइसइ चुहुंगतिमाहि ॥ ३१ ॥
चक्रवति पट्टपंडह धणी हंती रिद्धि तीहंनइ घणी ।
जो रिद्धिहिं परिताणु होउ त वंसु संभुसु निरगि नवि जंत ॥ ३२ ॥
छविह जीव करेजे रप जइ तुम्हि जिणसासणि छउ दप ।
आतमवत्तु जीव सवि गणे धम्मह तउं सारु इउ सुप्पे ॥ ३३ ॥
जगगुरु जगरपणु जगनाहु जगबंधवु जगसथवाहु ।
जगतारणु जिउ जगआधारु जिणविणु अवरि नही भवपारु ॥ ३४ ॥
जइह पापु जिम तरुअरि पनु जइ मनमाझि वसइ इकु जिनु ।
जापुलसेपुलि कांइ करेसि जिनि एकलइं मुकति पामेसि ॥ ३५ ॥
असिदिसु पंचप्रमिठि सुमरेजि इणपरि असुसुं करसु पपेजि ।
सुभउं करसु धापजे घणउं जिम सुपु लह सिवनगरीतणउं ॥ ३६ ॥
टलइ मेरु जो परवतराजु जो रवि पच्छिम ऊगई आजु ।
जो सायरु मिल्हइ मज्जाइ तोइ जिनभासिउं अलीउ न थाइ ॥ ३७ ॥
टगीसि रापे कुगुरि कुबोधि जिनकमवही लेजे सोधि ।
पूजइयानी आसनणी रिधि मंगहे सुकिननी घणी ॥ ३८ ॥
डसीइ कालमूअंगमि लोकु तेह नवि लागइ औषधजोगु ।
वीतराग मंत्रवादी य विणउं विसु पसरइ अठकरमहतणउं ॥ ३९ ॥
ढलिइ पामइ देजे दाउ घणकणजोयन करिसि म गाउ ।
जगमरणु देपे इंदीआलु करे पसु परहरीउ टमालु ॥ ४० ॥

णयणयपरि भन्नाऊ भवचाऊ मोंमीअ करिउ अम्हारी प सार ।
अमरणसरणु तुहुं जि जगनाहु भवि पइंत अम्हु देजे वाहु ॥ ४१ ॥
तनु धनु जीवीउ जोवनु जोइ रिद्धि समिद्धि सहअणु सहु कोइ ।
दिवस पांच मेल्लावउ होइ पाछइ थलीउ न दीसइ कोइ ॥ ४२ ॥
थरथर कंपइं काइरचित्त देवीउ मुनिवर माहासत्त ।
धीरा सपावंत जे जाण पालइं दीपमहीउ जिणआण ॥ ४३ ॥
इमि इंदिअ दुग्गइदुआर लूसीउ लिअइं सुमितु सविचार ।
जे न जिणिसि जिणवयणविचारि देसिइं दुपु बहुसंसारि ॥ ४४ ॥
परमप्पांनि करि निमलु चित्तु जिम हुइ जीव जनमु सुपवित्तु ।
पमिहि सिवह सोपसंपत्ति पमिहि थलीउ न भवि उत्तपत्ति ॥ ४५ ॥
नर नीतु नमो नीमि जिणनाहु आठकरम जिणि दिन्ही दाउ ।
मोहराउ रिणि भंजीउ करी लीलहं लई सामि सिवपुरी ॥ ४६ ॥
पढइ सुणइ परकाणइं सुतु पुणु बुझइं नही सोइ सतु ।
रागु द्वेषु मनभीतरि धरइं इमइ वेगविटंवउ करइं ॥ ४७ ॥
पालइ करमु परभवहतणउं जइ रिद्धिरहि जीउ हीडइ घणउं ।
दुपु सुपु सहु पइ लागम आवइ सिजिउं सरिसु आतमा ॥ ४८ ॥
थलि कीउ जीवीउ तीहं संसारि जे दिन गमइ पापव्यापारि ।
सफलु जनमु तीहं नरनारि जे जिनधमि द्रिढ चित्तमझारि ॥ ४९ ॥
भवि भवु धोलइं जीव अनंत जाणइं नही वइणु अरिहंत ।
न सुणइं अंतक पावइ पुपु तीहं सोकल कांइं सिरिज्या कांन ॥ ५० ॥
सइणु जि मारइं ते जगि सूर जे मारीयइं सइणि ते भूर ।
धीरा सुभट सतु उटवइ मारीउ मयणु नाउं नीठवइं ॥ ५१ ॥
प करइं तप्पु नीमु संजमु तीहं दुर्गतिनउ नही कोइ गंमु ।
जीहं न रोईउ हुइं जिनधंमु विलसइं मुकतिसोपु निरुपंमु ॥ ५२ ॥
रहिमिइं पूत पलत घरवाऊ रहिसिइ सहणु सहु परिवाऊ ।
रहिसिइ धणुकणुरइणुभंडाऊ जीउ एकलउ जाइ निवाऊ ॥ ५३ ॥
लइ जिनदीप मूकि संसाऊ आठकरम दहीउ करि छाऊ ।
निरुपमु सुपु सिवनइरीतणउं लहिसि जीव आगमि जिनभणिउ ॥५४॥
वचनव्यापु जोइ जिणवरतणउ अरथ गंभीऊ अच्छइ तहिं घणउ ।
जो साइरि जलबिंदहं पाऊ लभइ सिद्धंतविचाऊ ॥ ५५ ॥

शरउपरि मूढा मन पेलि जिनधमु लाघउ पाइ म ठेली ।
तिहुअणचिंतामणि जिनधम्मु करीन जीव भाजइ भवभ्रंमु ॥ ५६ ॥
पणि पणि आउ गलंतउ देषि भवि पडंतु अंगु म ऊलेषि ।
करि न धम्मु जं केवलिकहीउ जा सिवपुरि लेपउं विग्रहीउ ॥ ५७ ॥
सहजि जीउ भवगूनलि करइ कर्म्म वुहूरादाणी घणु घरइ ।
जे कर्म्मतणउ नही य ऊथारु भवगोनिहिं दुरतु महिसि अपारु ॥ ५८ ॥
हरिषु विषादु करिमि मन कोइ जइ जीव आपद संपदं होइ ।
अवशु फलीसइ पुवभवकिउं जं भोगवै कोइ अणकिउं ॥ ५९ ॥
जंवइ दीव पुहवि समुद्र गिरिकंदरा भमइ वहुरुद्र ।
रिद्धिकाजि इत्तोउ रहभडइ न करै धम्मु जिणि रिधि संपडइ ॥ ६० ॥
क्षुणुभंगुरु एउ सहइ जाणि म करिसि जीव धरमनी काणि ।
विणसइ सहु कहइ आगम्मु अविनसुरु एकु जिणधम्मु ॥ ६१ ॥
मंगल करउं सवि अरिहंत जे अच्छइं सिवलच्छीकंत ।
मंगल सिद्धि सूरि उवज्झाय मंगलं करउं साहुणा पाय ॥ ६२ ॥
मंगलमूलु सवहिं आगम्मु जो जगमाहि अच्छइ निरुपम्मु ।
जसु अतिसइ न लाभइ अंतु मंगलु करउ सोइ जि सिद्धंतु ॥ ६३ ॥
जा ससिसूरु भूयणु व्याप्पंति जा ग्रह नक्षत्र तारा हुंति ।
जा वरतइ वसुहव्यापारु तां सिवलच्छि करउ मंगलाचारु ॥ ६४ ॥

मातृकाचउपइ समाप्ता

सम्यकत्वमाईचउपइ

भले भणउं माईधुरि जोइ धम्मह मूलु जु समिकतु होइ ।
समकतुविणु जो क्रिया करेइ तातइ लोहि नीरु घालेइ ॥ १ ॥
ऊंकारि जिणु पणमेसु सतगुरुतणउं वयणुं पालेसु ।
आगम नवतत वूज्झिसि तिमई समिकतु रयणु होइ तसु तिमइ ॥ २ ॥
नर नवकारु सुमरि जगसारु चउदह पुव्वह जो समुद्धारु ।
समिकत जइ लाभइ संसारिं जाणे छुरी पडी भंडारि ॥ ३ ॥
मनु चंचलु अटझाणि पडेइ घडियमाहि सातमिय ह नेइ ।
मनु मयगलु शुभ ध्यानु करंति प्रसंनचंद जिम सिद्धिहिं जंति ॥ ४ ॥

तिक्खिगुरु जगि सहु को लहइ दृढसमिकतु जइ हियइ रहइ ।
दृढ समिकतु श्रेणिकराय होइ प्रथम तिर्थंकरु होसइ सोइ ॥ ५ ॥
धन जि गुरुपारपउ करंति गुरु विणु समिकतु किमइ न हुंति ।
मुहतु एकु समिकतु करसेइ पुद्गल अरधमाहि सिद्धि विनेइ ॥ ६ ॥
अच्छइ मोक्खरहु इणि समइ समिकतु रयणु न लाभइ किमइ ।
कुगुरु कुगुरु अंतरु न हु करइ इणि कारणि चउगति जिउ फिरइ ॥ ७ ॥
आगमवयणु पंचमइ अरइ केवलनाणु प्रभव हुइ परइ ।
इसइ काल समिकतदृढचित्त ते नर जाणे जगह पवित्त ॥ ८ ॥
इणि भवि परभवि सुगुरु लहेउ सतगुरुतणउं वयणु पालेहु ।
वीतराग जउ वंदिसि पाप ऊडइ पापु होइ निम्मल काय ॥ ९ ॥
इंदियाहु जगि दीसइ लोइ बालवृद्धु न हु छुटइ कोइ ।
परमसंबलु जइ सरिखउ लेइ पार गया सउ सुगुरु माणेइ ॥ १० ॥
उगमनइ जे नर दीसंति चउजणकंधि चडिया ते जंति ।
सुकिय दुकिय वे सरिखा चलइं सजनमीत बोलायी चलइं ॥ ११ ॥
ओसरि पाविवइ लाभु न हुंति सजणु होइ बीजइ पूकंति ।
सुपउं दानु मुनिहि जो देइ संगमणउ लाभु सो लेइ ॥ १२ ॥
रिद्धिहितणउ लाभु जगि लेहु दस खेत्रे तुम्हि धनु वावेहु ।
दीनादानह लाभु म छोइ सुपात्रि दीन्हइ बहुफलु होइ ॥ १३ ॥
रीतिहि दानह नथी विचार उचितु दानु दीजइ सविचार ।
कूलनभयमिउ जउ लहु वारंति पात्रविसेषिहि पीक स दिंति ॥ १४ ॥
लिहियं जगि लोटइ सउ कोइ कुपात्रु विमहरसादसु होइ ।
पीक आणि जउ मुनि घालियइ पात्रविसेषिहि लसु विसु थियइ॥१५॥
लोह न लंघउं सतगुरुतणी किया करउं जा आगमि भणी ।
विधिमारगु मानउं सविचार जाणउं जइ छुटउं संसार ॥ १६ ॥
गहु करेयउं नर संसारि त्रिन्नि वार जउ चडिउ विहारि ।
वीतराग जउ भणिउ करेसु दस आसातन नितु राखेसु ॥ १७ ॥
ए वार मेल्हिउ जिणु पूजेसु रयणिहिं रमणिगमणु वारेसु ।
नहवणु तं दिजहि निसिभरि रहई तं विहिमंदिरु सतगुरु कहइ ॥ १८ ॥
ओ दीसइ मंदिरु जगि साह धम्मरयणकेरउ भंडाह ।
चउरासी आसातन नितु राखेसु मंदिरि दिवसह बलि दीजेसु ॥ १९ ॥

ओया दीसइं बहुत गमार धंमहतणी न पूछइं सार ।
जिण गुरि दीठइ दूरिहि जंति दुलहु माणुसुजंमु आलि गमंति ॥ २०॥
अंतरु विधि अविधिहि जाणंति मंदिर पढ़ठ निसिहि न करंति ।
तालारासु रयणि न हु देइ लउडारसु मूलह वारेइ ॥ २१ ॥
अइसउ मंदिरु जगि प्रवहणु होइ घंमिउ लोउ चडइ सुह कोइ ।
पंचप्रमिट्ठिनी जापउ करउ संसारसमुद्दु जिम लीलइं तरउ ॥ २२ ॥
कहियइ थूलिभद्दु मुणिराउ मयण चरड भंजइ भडिवाउ ।
छ विगइ सो जनु चित्रसाली रहइ जगहमाहि थूलिभद्दु लीह लहइ ॥२३॥
खडभड रापि न इणि संसारि जुगप्रधान जोइ घंमु विचारि ।
सुद्धउ धरमु करिसि जइ किमइ जंमणमरणह छूटिसि तिमइ ॥ २४॥
गलइ आउ जिम अंजलिनीरु सीलु जु पालइ सो नर धीरु ।
कपिलनारि पेलइ विन्नाणि सीलु सुदरसणतणउं वखाणि ॥ २५ ॥
घडतउ फोडतउ वार न लाइ कर्म्मतणी विसमी गति काइ ।
जं जं करसु करइ तं होइ लपमणि दससिरु जीतउ जोइ ॥ २६ ॥
निच्छइ साहसिउ वज्रकुमारु इंदु पसंसइ जो दयसारु ।
सुर वे आविया जउ सत पडइ कुमरु पारेवासउं धडि चडइ ॥ २७॥
चल्लइ सवलवाहणु नरनाहु वीरवंदन हुउ अतिघणुं भाउ ।
दसाणभद्दु अतिगरवु करेइ इंदिहि जीतउ रिधि दाखेइ ॥ २८ ॥
छंडइ राजु रिद्धि पणमाहि इंदि जीतउ तं न सुहाइ ।
वीरपासि संजमुभरु लेइ इंदिहिं हारिउ चलण नमेइ ॥ २९ ॥
जनमु वयरसामिउ त्तिमसमइ छ मास रोयतउ रहइ न किमइ ।
घणगिरि विहरतु पहुतउ घरेइ साति पूतु हिव झोली धरेइ ॥ ३० ॥
झटकह तउ झोली घातियउ भारि गुरुह लेउ समपिउ ।
गुरु पभणइ पउ तिणि आपेहु कुमरह आवी सार करेहु ॥ ३१ ॥
निच्छइ जुगप्रधान जिउ होइ इह गुणवन्नणु सकइ न कोइ ।
पालणइ सुतउ श्रवणि सुणेइ इगारअंग तउ आणावेइ ॥ ३२ ॥
टलइ न पावज कुमरह किमइ मायडी झगडउ मांडियउ तिमइ ।
राज विदीतु पूतु हउं लेसु मंदिर नेतउ परिणावेसु ॥ ३३ ॥
ठक्कर मिलिया ऊगडउ करइं कुमरु अणावी तउ विचि धरइं ।
धणफल रमणा सा ढोएइ धणगिरि रजोहरणु दापेइ ॥ ३४ ॥

दाहगलउ मनु रहइ न किमइ मायडी भवि भवि लाभइ तिमइ ।
सुगुरुमेलावउ दुलहउ हुंति पंचमहाव्रत सीहगिरि दिंति ॥ ३५ ॥
दाहरु बीयउं बालकुमारि सीहगिरि तउ हालियउ विहारि ।
सीस भणइं अम्ह वयण कु देइ वयरड मुनि तुम्ह काजु करेइ ॥ ३६ ॥
न गणइं अवरसीस जयसीह सीहगिरितणा सीस हुइ लीह ।
अभिनवदीपितु वयण कु देइ सीहगिरितणउं वयणु मानेइ ॥ ३७ ॥
तपु संजमु किउ परिसहसहस्सु जीवदया पालिय गुणह निवासु ।
अंतपालि अट्टाणि पइंति कंडरीकु सातमियइं जंति ॥ ३८ ॥
पुंडरीकु परिसहसहसु कीउ रज्जु चिउ घडियइं तउ सारिउ कज्जु ।
पायज ले गुरु संमुहउ धाइ पंथविमाणे पुंडरीकु जाइ ॥ ३९ ॥
दस दिसि पसरिउ जगि जसवाउ नवअंगयित्तिकरणु गुरुराउ ।
थंभणि थप्पिउ पासजिणंदु पणमहु सुहगुरु अभयसुणिंदु ॥ ४० ॥
धनु सु जिणवल्लहु परताणि नाणरयणवेरी छइ खाणि ।
बहुलालीसहुहु पिहु विहरइ त्रिविधु मंदिरु जगि प्रगडु करेइ ॥ ४१ ॥
नर निसुणहु मनगुरु परताणु अंतस बूझउ थिउ सु जाणु ।
कुगुरयाणि तउ विसु उतरइ सुगुरयाणि जउ अमिउ झरेइ ॥ ४२ ॥
परिणइ अहु नारि करि लेइ वृद्धवणइ वइठउ कथा कहेइ ।
प्रभवु चोरु मंदिरि पइसेइ असुपणनिंद सपलजण देइ ॥ ४३ ॥
फहउ जंबुकुमरु इम भणइ विवाहुमहोच्छवु प्रभवु न गणइ ।
जंबुकुमरु जउ इमउ भणंति सवि थंभिया टगमग जोयंति ॥ ४४
बंधव अम्हसउं साटि करेज विहुं विद्यावटइ इक थंभणी देज ।
कुमरु भणइ विद्या किमउं करेसु रिद्धि परिहरी प्रहउं व्रतु लेसु ॥
भणइ प्रभवु नवजोवण नारि परणिय पुरवसिण संसारि ।
कामभोग भोगवि हणि समइ जोवण गइ व्रतु लेज तिमइ ॥ ४६
सपणु चरहु सो मइं धम्मि किउ मोहराउ पाडिउ नाथियउ ।
मधुबिंदमाहम इहु संसारु निसुणि प्रभव तुहु जोइ विचारु ॥ ४
जगु पिंडाणु सयलु धरनेइ तुह विणु पितरह पिंडु कु देइ ।
महेसरदत्तकथा जउ कहइ प्रभवुउ सांभलिउ मनमाहि रहइ ॥
रतिपति जाणउं तइं धम्मि किपउ नाथानणउं संबंधु किम थिप
अहाहह नाथाकथा कहंति प्रभवु सांभली तउ बूझंति ॥ ४९ ॥

लहणउ लाभइ इह जगमाहि जंबुसामिनरि रिद्धि न माइ ।
हुंती रिद्धि कुमरु परिहरइ प्रभवु पराई लेवा फिरइ ॥ ५० ॥
वयणु कहउ पुणु नीजइ वाह जंबुकुमर तुहु परिणिउं काइं ।
बालकुमारउ तउं व्रतु लियत निगनियमंदिरि अहुय रहत ॥ ५१ ॥
सांभलि प्रभव ज काइउं हुंत जइ घरि रहु त संसारि पडंत ।
कथा कहिउ प्रतिबोधेसु नारि वलिउ न आवइं इणि संसारि ॥ ५२ ॥
पडभड केही रिद्धिहितणी नवाणवइ कोडि सोना छइं घणी ।
जीमणइ हाथिहि तउ हउं देसु मणवंछिय मागण पूरेसु ॥ ५३ ॥
सा सिवकाजउ प्रगुणी करइ दानु दियंतउ तउं नीसरइ ।
माय बापु अहुनारि चडंति पंचसयसहितु प्रभवु वइसंति ॥ ५४ ॥
हल्लिय सिविका गाजे रली वज्जिय ढक्क वुक्क काहली ।
सिबिका उत्तरिउ चलण नमंति सुहमसामि सइं हथि व्रतु दिंति ॥ ५५ ॥
लंघिउ सायरु जउ व्रतु लिउ पंचमगतिप्रस्थानउ कियउ ।
जंबुसामिउच्छवु देखेइ बहुतु लोकु जाइउ व्रतु लेइ ॥ ५६ ॥
खयउं पापु जउ पावज लई घरसंसारचिंत तउ गई ।
मनि जीतइ इंद्रिय वसि थाइं करम जिणिय नर सिद्धिहि जाइं ॥५७॥
मंगलु पहिलउ सोहमसामि बीजउ मंगलु जंबूसामि ।
अगणिउ मंगलु प्रभव भणंति चउत्थउ मंगलु नारिहि हुंति ॥ ५८ ॥
गणियइ जुगवरु सोहमसामि बीजउउ जुगवरु जंबूसामि ।
त्रीजउ जुगवरु प्रभवु भणंति सिज्जंभवु चउथउ जाणंति ॥ ५९ ॥
लंछणि सीह गोयमु पुच्छंति जुगप्रधान जगि केता हुंति ।
विसहस चउं आगला कहेइ छेहिलउ दुपसहु तउ जाणेइ ॥ ६० ॥
मंनउं जुगवरु जिणेसरसूरि पाबु पणासइ दरिसण दूरि ।
संदेहु म करहु जिम समिकतु रहइ भवि भवि बोधिबीजु जिउ लहइ॥६१॥
हासामिसि थउपईबंधु कियउ माईतणउ छेहु मइ नियउ ।
ऊणउ आगलउ किंपि भणेउ जगइ भणइ संघु सयलु खमेउ ॥ ६२ ॥
श्रीनंदउ समुदाघरि रहइ नंदउ विहिमंदिरु कवि कहइ ।
नंदउ जिणेसरसूरि मुणिंदु जा रवि ऊगइ ऊगइ चंदु ॥ ६३ ॥
माईतणउ अवसरु धुरि कियउ चडसठिचउपइया बंधु थियउ ।
सुणइ मनि जे नर निसुणंति अणंतसुक्खु सिद्धिहि पावंति ॥ ६४ ॥

सम्यक्त्वमाईचउपइ सम्पूर्णा.

श्रीनेमिनाथफागु

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अहर पवाल निरेह कंठुराजलमर कडउ
जाणु मीणु रणरणइं जाणु कोइलहहकडलउ ॥ ९ ॥
मरलनरल मुणनाहुरिण मिहुण पीणथणतुंग ।
उदरवेमि संकाउली व मोहइ निवलतुरंगु ॥ १० ॥
अह कोमल विमल निरंतरिंव किरि गंगापुलिणा
करिकर ऊरि हरिण जंघ पहुव कलरणा ।
मलपति चालति मेलहीय हंसला हरायइ
संदारागु अकालि बालु नहकिरणि करायइ ॥ ११ ॥
सहजिहिं लहहीय रायमए सुलखण सुकमाला
घणउं घणेरउं गहगहए नवगुलवण बाला ।
भंभरभोली नेमिजिणयीवाह सुणेई
नेहगहिल्ली गोरडी हियडइ विहसेई ॥ १२ ॥
सावणसुकिलछट्ठि दिणि बावीसमउ जिणंदो
चहइ राजलपरिणयण कामिणिनयणाणंदो ॥ १३ ॥
अह सेयतुंगतरलतुरइ रहरहि चढइ कुमारो
कन्निहिं कुंडल सीसि मउड गलि नवसरहारो ।
चंदणि ऊगटि चंदधवलकापडि सिणगारो
केवडियालउ खंपु भरवि वंकुडउ अतिफारो ॥ १४ ॥
धरहि छत्तु वित्तु चमर चालहिं मृगनयणी
लूणु उत्तारिहिं वरवहिणी हरिसुप्पलवयणी ।
चहुपरि बइसइ दसारकोडि जादवभूपाला
हयगयरहपायक्कचक्कसीकिरिहिं झमाला ॥ १५ ॥
मंगल गायहिं गोरडीय भट्टह जयजयकारो
उग्गसेणघरनारि वरो पहुतउ नेमिकुमारो ॥ १६ ॥
अह सहिय पयंपय हल सहि ए तुह वल्लहउ आवइ
मालिअटालिहिं चडिउ लोउ मण नयणु सुहावइ ।
गउखि वइठी रायमए नेमिनाहु निरखइ
पसइपमाणिहिं चंचलिहिं लोअणिहिं कडखइं ॥ १७ ॥
किम किम राजलदेवितणउ सिणगारु भणेवउ ।
चंपइगोरी अइघोइ अंगि चंदनुलेवउ ।

खुंपु भराविउ जाइकुसमि कसतूरी सारी
सीमंतइ सिंदूररेह मोतीसरि सारि ॥ १८ ॥
नवरंगि कुंकुमि तिलय किय रयणतिलउ तसु भाले ।
मोतीकुंडल कन्नि थिय विंवालिय करजाले ॥ १९ ॥
अह निरतीय कज्जलरेह नयणि मुहकमलि तंबोलो
नगोदरकंठलउ कंठि अनु हार विरोलो ।
मरगदजादर कंचुयउ फुडफुल्लहं माला
करि कंकण मणियलपचूड चलकायइ बाला ॥ २० ॥
रुणुझुणु ए रुणुझुण ए रुणुझुणु ए कटि घघरियाली
रिमिझिमि रिमिझिमि रिमिझिमि ए पयनेउरजुयली ।
नहि आलत्तउ चलचलउ सेअंसुयकिमिसि
अंखडियाली रायमए मिउ जोअइ मनरसि ॥ २१ ॥
घाडउ भरिउ जीवडहं टलवलंत कुरलंत ।
अहूठकोटिहं उद्धसिय देपइ राजलकंतो ॥ २२ ॥
अह पूछइ राजलकंतु कांइ पसुबंधणु दीसइ
सारहि बोलइ सामिसाल तुह गोरसु हुस्पइ ।
जीव मेल्हावइ नेमिकुमरु सरणागइ पालइ
धिगु संसारु असारु इस्पउं इम भणि रहु वालइ ॥ २३ ॥
समुदविजय सिवदेवि रामु केसवु मनावइ
नइपयाह जिम गयउ नेमि भवभमणु न भावइ ।
धरणि धसकइ पडइ देवि राजल विहलंघल
रोअइ रिज्जइ वेसु रूपु बहु मसइ निप्फलु ॥ २४ ॥
उग्गसेणधूय इम भणइ दूयहिं दाहइ देहो
कां विरतउ कंत तुहं नयणिहि लाइवि नेहो ॥ २५ ॥
आसा पूरइ त्रिहुभुयण मू म करि हयासो
दय करि दय करि देव तुम्ह हउं अउउं दासो ।
सामि न पालइ पडियउं तउ कासु करीजइ
मयगलु उयट संचरण किंपि कानि गहीजइ ॥ २६ ॥
नेमि न मनइ नेहु देइ संवच्छरदाणूं
ऊजलगिरि संजम लियउ हुय केवलनाणूं ।

राजलदेविमउं मिलि गयउ सो देउ गुणीजा
मलहारिहिं रायसिहरसूरि किउ फागु रमीजइ ॥ २७ ॥
इति श्रीनेमिनाथफागु.

प्राचीनगद्यसङ्ग्रहः

आराधना

(संवत् १३३० मां लखेला ताडपत्रमांथी)

ज्ञानाचारि पुस्तकपुस्तिकासंपुटसंपुटिकाटीपणांकयलीऊनरीठव
दोरीप्रभृतिज्ञानोपकरणअवज्ञा, अकालिपठन अतिचार ...
अमरूपणु अश्रद्दधानप्रभृतिकु आलोयहु । दर्शनाचारि देवद्रव्यु
उपेक्षितु प्रज्ञाहीनत्वु जिनभुवनआशातना अवोयति देवपूजा
ग्रहणु गुरुनिंदा द्रव्यलिंगिएसउं संसर्गु चिंयआशातना स्थापनाचा
तना शंका आकांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रसंसा मिथ्यादृष्टिप
पांच अतिचार आलोयउं । चारि आचारि प्राणातिपात मृषावाद अ
मैथुनपरिग्रह ए पांच अणुव्रत दिगुविरति भोगपरिभोगविरति अ
विरति ए तिन्नि गुणव्रत । सामायिकु देसावकासिकु पौषधु अतिथिसं
ए च्यारि सिक्षाव्रत; ईहतणइ विषइ जु कोइ अतिचारु आसेवियउ
आलोयहं । तपाचारि अनशन ऊनोदरिता वृत्तिसंक्षेपु रसत्यागु क
संलीनता षट्विधबाह्यतपतणइ विषइ प्रायश्चित्तु विनउ वैयावृत्यु स्व
कायोत्सर्ग षड्विधआभ्यंतरतपतणइ विषइ जु अतीचारु सु हुं आलो
वीर्याचारि संतइ बलि संतइ वीर्यि जु धर्म्मानुष्ठानि उद्यमु नहीं कि
हुं आलोयहुं । सम्यक्त्वप्रतिपत्ति करहु, अरिहंतु देवता सुसाधु गुरु
णीत धर्म्मु सम्यक्त्वदंडकु ऊचरहु, सागारप्रत्याख्यानु ऊचरहु चऊहु
पइसरहु । परमेश्वरअरहंतसरणि सकलकर्मनिर्मुक्तसिद्धसरणि संस
वारसमुतरणयानपात्रमहासत्त्वसाधुसरणि सकलपापपटलकवलनकला
केवलिप्रणीतुधर्म्मुसरणि सिद्ध संघगण केवलि श्रुत आचार्य उप
सर्वसाधु व्रतिणी श्रावक श्राविका इह ज काइ आशातना की हुंती
मिच्छा मि दुक्कडं । पुढविकाइ जीव आउकाइ जीव तेउकाइ जीव वा
जीव वणस्पइकाइ जीव बेइंदिय त्रेंदिय चउरिंद्रिय जलचर स्थलचर

जि जंतु ताह मिच्छा मि दुक्कडं । पनर कर्मभूमि जि मनुष्य त्रीस अकर्मभूमि जि मनुष्य तीहिं मिच्छा मि दुक्कडं। छप्पनअंतरद्विपतणा मनुष्य तीहं मिच्छा मि दुक्कडं । सातनरकतणा नारकि दशविध भवनपति अष्टविध व्यंतर पंचविध जोइसी द्वैविध वैमानिकदेवा किं बहुना । दृष्ट अदृष्ट ज्ञात अज्ञात श्रुत अश्रुत स्वजन परजन मित्र शत्रु प्रत्यक्षि परोक्षि जे केइ जीव चतुरासी लक्षयोनि ऊपना चतुर्गतिकि संसारि भ्रमंता मइं हुमिया वंचिया तेहिया सोरीविया हसिया निंदिया किलामिया दामिया पाछिया चूकिया भवि भवांतरि भवसति भवसहस्रि भवलक्षि भवकोटि मनि वचनि काइं तीह सर्वहइं मिच्छा मि दुक्कडं। अठार पापस्थान वोसिरावइ इहुसर्व्वू प्राणातिपातू सर्व्वू मृषावादू सर्व्वू अदत्तादानू सर्व्वू मैथुनू सर्व्वू परिग्रहू सर्व्वू क्रोधू सर्व्वू मानू सर्वइ मायां सर्व्वू लोभू प्रेमु द्वेषु कलहु अभ्याख्यानु रति अरति पैशून्यु मिथ्यादर्शनशल्यु परपरिवादू अठार पापस्थान त्रिविधिहि मनि वचनि काइ करणि करावणि अनुमति परिहरउ । अतीतु निंदउ वर्तमानु संवरहु अनागतु पाचक्खउ । पंचपरमेष्ठिनमस्कारु जिनशासनिसारु चतुर्दशपूर्वसमुद्धारु संपादितसकलकल्याणसंभारु विहितदुरितापहारु क्षुद्रोपद्रवपर्वतवज्रप्रहारु लीलादलितसंसारु सु तुम्हि अनुसरहु, जिणि कारणि चतुर्दशपूर्वधर चतुर्दशपूर्वसंबंधिउ ध्यानु परित्यजिउ । पंचपरमेष्ठिनमस्कारु स्मरहि, तउ तुम्हि विशेषि स्मरेयउ, अनइ परमेश्वरि तीर्थकरदेवि इसउ अर्थु भणियउ अच्छइ, अनइं संसारतणउ प्रतिभउ म करिसउ, अनइ पंचनमस्कारु इहलोकि परलोकि संपादियइ ॥ आराधना समाप्तेति ॥

यदक्षरं परिभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
क्षन्तव्यं तद्भवैः सर्वं कस्य न स्खलते मनः ॥
संवत् १३३० वर्षे आश्विनसुदि ५ गुरावद्येह आशापल्लयाम् ॥

अतिचार

(संवत १३४० ना अरसामां लखायला जणाता ताडपत्रमांथी)

कालवेला पढ्यं, विनयहीणु बहुमानहीणु उपधानहीणु गुरुनिण्हव अनेकणहइं पढ्यं, अनेरइं कहइं व्यंजनकूडु अर्थकूडु तदुभयकूडु कूडउ अरकु कानइ मात्रि आगलउ ओछउ देवंदणवांदणइ पडिक्कमणइ सझाउ करतां,

पढतां गुणतां हुउ हुयइ, अर्थकूडु कहइं हुइ, सूत्र अर्थु वेउ कूडां कह्यां ज्ञानोपकरण पाटी पोथी कमली सांपुडं सांपुडी आशातन पगु लागउ लागउं पढतां प्रद्वेष मच्छरु अंतराइउ हउं कीधउ हुइं, तथा ज्ञानद्रव्यु उपेक्षितु प्रज्ञापराधि विणास्य विणासिनउं ऊवेख्यं हुंती सक्ति सारसं कीधियइ, अनेरइ ज्ञानाचारिउ कोइ अतीचारु हुउ सुक्ष्मवादरु मनि काइ पक्षदिवसमांहि तेह सवहि मिच्छा मि दुक्कडं ॥

सातमइ भोगोपभोगव्रति सचित्तद्रव्यविगइ खासहाइ पाणही फोफलि वइसणि आसणि सयणि न्हाणुअइ अंगोहलि फलि फूलि आच्छादनि जु कोइ अतिचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि

वारि भेदि तपु छहि भेदि वाह्य अणसण इत्यादि उपवास नीविय एकासणु पुरिमड्ढ व्यासणं यथाशक्ति तपु, तथा ऊनोदरितपु संखेवु । रसत्यागु कायकिलेसु, संलेखना कीधी नहि, तथा प्रत्याख्यान एकासणां विपुरिमड्ढ साढपोरिसि पोरिसिभंगु अतीचारु नीविय आंबिलि उपवासि कीधइ विरासइं सचित्त पाणीउ पीधउं हुयइ पक्षदिवसमांहि

प्रतिपिड्ढ जीवहिंसादिकतणइ करणि कृत्य देवपूजा धर्मानुष्ठानतणइ अकरणि जि जिनवचनतणइ अश्रद्धानि विपरीतपरूपणा एवं बहुप्रकारि जु कोइ अतीचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि ॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन

(संवत् १३५८ मां लखायेला कागळना पुस्तकमांथी)

पहिलउं त्रिकालु अतीत अनागत वर्त्तमान बहत्तरि तीर्थंकर सर्वपापक्षयंकर हउं नमस्करउं ।

तदनंतरु पांचे भरते पांचे ऐरवते पांच महाविदेहे सत्तरिसउ उत्कृष्टकालि विहरमाण हउं नमस्करउं ।

तउ पहिलइ सौधर्मि देवलोकि बत्रीस लाख, बीजइ ईसानि देवलोकि अट्ठावीस लाख, त्रीजइ सनत्कुमारि देवलोकि बारलाख, चउत्थइ माहेंद्रदेवलोकि आठ लाख, पांचमइ ब्रह्मदेवलोकि च्यारि लाख, छट्ठइ लांतकि

देवलोकि पंचास सहस, सातमइ शुक्रदेवलोकि चयालीस सहस, आठमइ सहस्रारि देवलोकि छ सहस, नवमइ आणति देवलोकि विसइ, दसमइ प्राणति देवलोकि विसइ, इग्यारमइ आरणि देवलोकि बारमइ अच्युतदेवलोकि विहू दउडु दउडु सउ, अनइ हेठिले त्रिहू ग्रैवेयके इग्यारोत्तर सउ, माहिले त्रिहू ग्रैवेयके सत्तोत्तर सउ, ऊपइले त्रिहू ग्रैवेयकि एकु सउ, पंच पंचोत्तरविमाने, एवंकारइ स्वर्गलोकि चउरासी लाख सत्ताणवइ सहस त्रेवीस आगला जिनभुवन वांदउं। अनंतरु भुवनपतिमज्झे असुरकुमारमज्झे चउसट्ठि लाख, नागकुमारमज्झे चउरासी लाख, सुवर्णकुमारमज्झे बहत्तरि लाख, वायुकुमारमज्झे छन्नवइ लाख, दीवकुमार दिसाकुमार अग्गिकुमार विज्जुकुमार थणियकुमार अग्गिकुमार छहं मध्यभागे छहत्तरि छहत्तरि लाख, एवंकारइ पाताललोकि सातकोडि बहत्तरिलाख जिनमंदिर स्तवउं। अथ मनुष्यलोकि नंदीसर बरि दीपि बावन्न, च्यारि कुंडलवलि, च्यारि रुचकि वलि, च्यारि मानुषोत्तरि पर्वति, च्यारि इक्षार पर्वति, पंच्यासी पांचे मेरु, वीस गजदंत पर्वति, दस कुरपर्वति, त्रीस वेलगिरि, अगीय क्षारवेलगिरि, सरिसउ वैताढ्यपर्वति, एवं च्यारि सइ त्रिसट्ठि जिणालइपडिमं, एवं आठ कोडि छप्पन्न लाख सत्ताणवइ सहस च्यारि सइ छियासिया त्रियलुके शाश्वतानि महामंदिर त्रिकाल तीह नमस्कार करउं ॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवनम्।

नवकारव्याख्यानम्

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ माहरउ नमस्कार अरिहंत हउ। किसा छि अरिहंत; रागद्वेषरूपिआ अरि वयरी जेहि हणिया, अथवा चतुर्दशि इंद्रसंबंधिनी पूजा महिमा अरिहइ; छि उत्पन्नदिव्यविमलकेवलज्ञान, चउत्रीस अतिशयि समन्वित, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभायमान महाविदेहि तेत्रि विहरमान तीह अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कार हउ ॥ १ ॥

नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ माहरउ नमस्कार सिद्ध हउ। किसा छि सिद्ध; दुष्टाष्टकर्मक्षउ करिउ, छि मोक्षि ज्या। आठ कर्म किसा भणिइ। ज्ञानावरणीउ १ दरिसणावरणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नामु ६ गोत्रु ७ अंतराउ ८ ईह आठकर्मक्षउ करिउ छि सिद्धि ज्या। किसी छ सिद्धि लोकतणइ अग्रविभागि पंचचत्वारिंश लक्षयोजनप्रमाणि जिनइं उपरानु

तिसइ आकारि ज सिद्धिसिला, अमलनिर्मल जलसंकाम जु अजगमस्थानु, तेह ऊपरि योजनसंबंधियइ चउवीसमइ य विभागि जि सिद्ध अनंत सुखलीण ति सिद्ध भणियइ । तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ । किसा ति आचार्य; पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ । किसउ पंचविधु आचारु । ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वीर्याचारु, यउ पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणिइ । तीह आचार्य माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ । किसा जि उपाध्याय; द्वादशांगी जि पढइ पढावइ । किसी ज द्वादशांगी; आचारांगु १ सुयगडु २ ठाणांगु ३ समवाउ ४ विवाहपन्नत्ति ५ ज्ञानाधर्मकथा ६ उवासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पण्हवागरणु १० विपाकश्रुतु ११ दृष्टिवादु १२ ए बार आंग जि पढइ पढावइ ति उपाध्याय भणियइ । तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ ईणि लोकि जि केई अछइ साधु । यउ लोकु च किसउ भणियइ । अढाई द्वीपसमुद्र पनर कर्म्मभूमि । जि किसी; पांच भरत पांच ऐरवत पांच महाविदेह खेत्र, ईह पनर कर्म्मभूमिमाहि जि केई अछइ साधु । किसा जि साधु; रत्नत्रउ जि साधइ । किसउ रत्नत्रउ; ज्ञानु दर्शनु चारित्रु यउ रत्नत्रउ जि साधइ ति साधु भणियइ । तीह साधु पंचमहाव्रतपरिपालक । पंचमहाव्रत किसा भणियइ । प्राणातिपातु १ मृषावादु २ अदत्तादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रहु ५ रात्रीभोजनु । जि विवर्ज्जइ ति साधु भणियइ । तीह साधु सर्वहीं माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंच परमेष्ठिनमस्कारु । पंचपरमेष्ठि किसा । जि पूर्वोक्तभणिया अरिहंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५ इह पंचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि क्रियमाणु हुंतउं किसउं करइ ॥ ६ ॥

सव्वपावपणासणो ॥ ७ ॥ सर्वपापप्रणासकारियउ हुइ । ईणि जीवि चतुर्गतिकि संसारि भवभ्रमणु करनइ हुंतइ जि असुभलेश्या उपायी पापु सु ईणि पंचपरमेष्ठिनमस्कारि महामंत्रि सुमरीनइ हुंतइ क्षउ हुयइ ॥ ७ ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥ ८ ॥ ईणि संसारि दधिचंदनदूर्वादिक मंगलीक भणियइ । तीह मंगलीक सर्वहीमांहि प्रथमु मंगलु एहु ।

ईणि कारणि सुभकार्यआदि पहिलउं सुमरेवउं, जिव ति कार्य एहतणा प्रभावइ वृद्धिमंता हुयइ। पउ नमस्कारु अतीतअनागतवर्त्तमानचउवीसी आदिजिनोक्तसारु, सु तुम्हे विसेषइ द्विवडातणइ प्रस्तावि अर्थयुक्तु ध्येयु ध्यानव्यु गुणेयउ पढेवउ। जु किसउ।

जिणसासणस्स सारो चउदसपुव्वाण जो समुद्धारो।
जस्स मणे नवकारो संसारो तस्स किं कुणइ॥
अनइ एहु नमस्कारु स्मरता इहलोकतणा भय नासइ।
यदुक्तं—अटविगिरिरन्नमज्झे भयं पणासेइ चिंतिओ संतो।
रक्खइ भवियसयाइं माया जह पुत्तभंडाइ॥
वाहिजलजलणनक्खरुरिकरिसंगामविसहरभएहिं।
नासंति तक्खणेणं जिणनवकारप्पभावेणं॥
हियइगुहाए नवकारकेसरी जाण संठिओ निच्चं।
कम्मट्ठगंठिदोघट्टघट्टयं ताण परिनट्ठं॥

नमस्कारस्य स्वरूपं भण्यते। ईणि नवकारि नव पद पांच अधिकार सत्तसट्ठि अक्षर, तीहमाहि छ भारी इकसठि लघु। इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु।

एसो मंगलनिलओ भयविलओ सयलसंतिसुहजणओ।
नवकारपरममंतो संतिपमित्तो सुहं देउ॥
अप्पुव्वो कप्पतरू एसो चिंतामणी य अप्पुव्वो।
जो झाइ सयलकालं सो पावइ सिवसुहं विउलं॥

नवकारव्याख्यानं समाप्तम्॥

अतिचार.

सम्वत् १३६९ मां लखेला ताडपत्रमांथी.

तउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिसणाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार पंचविधआचारविषइया अतीचार आलोउ। ज्ञानाचारि कालवेला पढिउ गुणिउ विनयहीनु बहुमानहीनु उपधानहीनु गुरुनिन्हवु अनेरीकन्हइ पढिउं अनेरउ कहिउ। व्यंजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देववंदणइ पडिक्कमणइ सज्झाओ करतां पढतां गुणतां हुओ हुइ, अर्थकूट तदुभयकूट; ज्ञानोपकरणि पाटी पोथी ठवणी कमली सांपडा सांपडी पति आसातना पगु लागउ थुकु लागउ पढतां गुणतां प्रदेषु मच्छरु अंतराइ हुउ कीधउं

हुइ भवसगलाइमांहि तेह मिच्छा मि दुक्कडं। मृषावादि सहसाकारि आलु अभ्याख्यानु दीधउं, रहसमंत्रभेदु कीधइ, मृषोपदेसु दीधउ, कूडउ लेखु लिखिउ, कुडी साखि थापणि मोसउ, कुणहइसउ राहि भेडि कलहु विद्याविदि, जु कोइ अतिचारु मृषावादि व्रति भवसगलाइमाहि हुउ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुक्कडं। अदत्तादानि विराहउं छानउं फीटुउं लीवउं दीधउं वावरिउं घरि बाहिरि खेत्रि खलइ पाडइ पाडोसि अणमोकलाविउ चोरीच्छाइं चोर-प्रति प्रयोगु कीधउ, नवउं पुराणउ रसु विरसु सजीवु निजीवु मेलिउं, कूडी तूल कूडइ थापि कूडउ कहिउ हुइ, अतीचारु अदत्तादानि व्रति भवसगलाइ-मांहि हुउ तेह सवहइ मिच्छा मि दुक्कडं। मैथुनव्रति लुहुडपणि आपणा विराधा सील खंडया सिउणइ सिउणांतरि, दृष्टिविपर्यासु, आठमि चउदसिनणा नी-मभंगु, अनंगक्रीडा परविवाहकरणु तिव्रभिलापु धरिउ हुइ, अनेरा जु कोइ अतिचारु मैथुनव्रति भवसगलाइमांहि हुअउ तेह सवहइ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुक्कडं। हव हियामाहि सम्यक्त्व धरउ। अरिहंत देवता, सुसाधु गुरु, जिणप्रणीतु धर्मु, सम्यक्त्वदंडकु ऊचरउ। हिव अठार पापस्थानक वो-सिरावउ। सर्वू प्राणातिपात, सर्वू मृषावाद, सर्वू अदत्तादान, सर्वू मैथुनु, सर्वू परिग्रहु, सर्वू क्रोधु, सर्वू मानु, सर्वू माया, सर्वू लोभु, रागु, द्वेषु, कलहु, अभ्या-ख्यानु, पैशुन्यु, रति, अरति, परपरिवादु, मायामृषावादु, मिथ्यात्वदरिसण-सल्यु ए अठारपापस्थान मोक्षमार्गसंसर्गविघनसमान त्रिविधि त्रिविधि वोसिरा-वउ, अतीतु निंदउ, अनागतु पचक्खउ, वर्तमानु संवरु। सागारप्रत्याख्यानुउ।

खमिउं खमाविउं मइं खमिउ छव्विह जीवनिकाय।
सिद्धह दिन्ना लोयणा नइ मह वइरु न पावु।

हिव दुक्कृतगरिहा करउं। जु अणादि संसारमाहि हींडनइ हूनइ ईणि जीवि मिथ्यात्वु प्रवर्तावि। कुतीर्थु संस्थापिउ, कुमार्गु प्ररूपिउ, सन्मार्गु अवलपिउ। हिवु ऊपार्जि मेल्हि सरीरु कुटुंबु जु पापि प्रवर्तिउ, जि अधि-करण हलऊ खल घरट घरटी खांडां कटारी अरहट पावटा कूप तलाव कीधां कराव्यां अनुमोद्या, ते सवे त्रिविधि त्रिविधि वोसिरावउ। देवस्थानि द्रवि वेवि पूजा महिमा प्रभावना कीधी, तीर्थजात्रा रथजात्रा कीधी, पुस्तक लिखाव्यां, साधर्मिकवात्सल्य कीधां, तप नीयम देववंदन वांदणांइ सज्याइ अनेराइधर्मानुष्ठानतणइ विषइ जु ऊजमु कीधउ सु अम्हारउ सफलु हुओ। इति भावनापूर्वकु अनुमोदउ

पृथ्वीचन्द्रचरित्र

(वाग्विलास)

या विश्वकल्पवल्लीवल्लीलया कल्पितप्रदा ।
प्रदत्तां वाग्विलासं मे सा नित्यं जैनभारती ॥ १ ॥
धर्मश्चिन्तामणिः श्रेष्ठो धर्मः कल्पद्रुमः परः ।
धर्मः कामदुघा धेनुर्धर्मः सर्वफलप्रदः ॥ २ ॥

पुण्यलगइ पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि, पुण्यलगइ मनवांछितसिद्धि; पुण्यलगइ निर्मलबुद्धि, पुण्यलगइ घरि ऋद्धिवृद्धि; पुण्यलगइ शरीर नीरोग, पुण्यलगइ अगुरभोग; पुण्यलगइ कुटुंबपरिवारतणा संयोग, पुण्यलगइ पलाणीयइं तुरंग, पुण्यलगइ नवनवा रंग; पुण्यलगइ घरि गजघटा, चालतां दीजइं चंदनछटा; पुण्यलगइ निरुपम रूप, अलक्ष्य स्वरूप; पुण्यलगइ वसिवा प्रधान आवास, तुरंगतणी लास, पूजइं मन चींतयो आस; पुण्यलगइ आनंददायिनी मूर्त्ति, अद्भुत स्फूर्त्ति; पुण्यलगइ भला आहार, अद्भुत शृंगार; पुण्यलगइ सर्वत्र बहुमान, घणुं किस्युं कहीयइ पामीयइ केवलज्ञान ।

एह पुण्यऊपरि राजाधिराज पृथ्वीचंद्रतणउ कथासंबंध भणीयइ । तेहइंणइं राजुप्रमाणि रत्नप्रभापृथ्वीपीठि असंख्याता द्वीप समुद्र वर्त्तइं । तींमाहि पहिलउ जंबूद्वीप लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पाषलि लवणसमुद्र द्विलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेहपरइं धातकीखंडद्वीप च्यारिलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पाषलि कालोदधि समुद्र आठलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेहपरइं पुष्करवरद्वीप सोललक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पाषलि पुष्करवरसमुद्र बत्रीसलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । आगलि वारुणिद्वीप ६४ लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पाषलि वारुणीसमुद्र एककोडि २८ लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । ईणिपरि ठाण विमणा द्वीप समुद्र जाणिवउ । कथण कथण । क्षीरद्वीप क्षीरसमुद्र घृतद्वीप घृतसमुद्र इक्षुद्वीप इक्षुसमुद्र नंदीसररद्वीप नंदीसरसमुद्र अरुणद्वीप अरुणसमुद्र अरुणवरद्वीप अरुणवरसमुद्र अरुणवरावभासद्वीप अरुणवरावभाससमुद्र इत्यादिक द्वीपसमुद्र असंख्यात । तेहमाहि पहिलु जे जंबूद्वीप, तेहनी नाभिइं मेरुपर्वत जिसिउ प्रदीप, तेहनुं दक्षिण उत्तरइं सातक्षेत्र चऊद महानदी छ वर्षधर पर्वत वर्त्तइं ।

किसा ते क्षेत्र। भरतक्षेत्र १ हैमवतक्षेत्र २ हरिवर्षक्षेत्र ३ महाविदेहक्षेत्र ४ रम्यकक्षेत्र ५ ऐरण्यवतक्षेत्र ६ ऐरवतक्षेत्र ७। किसी महानदी। गंगा १ सिंधु २ रोहिताशा नदी ३ रोहिता ४ हरिकांता नदी ५ हरिसलिला नदी ६ सीतोदा ७ सीतानदी ८ नारीकांता ९ नरकांता १० रूप्यकूला नदी ११ सुवर्णकूला नदी १२ रक्तवती १३ रक्तानदी १४। किस्या किस्या वर्षधर। हिमवंतपर्वत १ महाहिमवंत २ निषध ३ नीलवंत ४ रुक्मीपर्वत ५ शिखरीपर्वत ६। हिव जे कहिउं भरतक्षेत्र तेहमाहि २५ योजनप्रमाण वैताढ्यपर्वत ३२ सहस्र देश। ईहमाहि साढा पंचवीसदेश आर्य, थाकता अनार्य जाणिवा। ऋषभदेवतणां पुत्रतणें नाभिइं सयलदेश जाणिवा। ते कुण कुण काश्मीरदेश १ कीर २ काबेर ३ कांबोज ४ कमल ५ उत्कल ६ करहाट ७ कुरु ८ काण ९ क्रथ १० कौशक ११ कोसल १२ केशी १३ कास्त १४ कारूष १५ कछ १६ कर्णाट १७ कीकट १८ केकि १९ कौलगिरि २० कामरूप २१ कूंकण २२ कुंतल २३ कालिंग २४ करकूट २५ करकंठ २६ केरल २७ पस २८ पर्पर २९ रोट ३० गौड ३१ अंग ३२ गौप्य ३३ गांगक ३४ चौड ३५ चिल्लिर ३६ चैत्य ३७ जालंधर ३८ टंकण ३९ कोडियाण ४० डाहल ४१ तुंग ४२ ताजिक ४३ तोसल ४४ दशार्ण ४५ दंडक ४६ देवसभ ४७ नेपाल ४८ नर्त्तक ४९ पंचाल ५० पल्लव ५१ पुण्ड्र ५२ पांडु ५३ प्रत्यग्रथ ५४ अर्बुद ५५ बभ्रु ५६ बंभीर ५७ भट्टीय ५८ माहिष्मक ५९ महोदय ६० मुरुंड ६१ मुरल ६२ मेद ६३ मरु ६४ मुद्गर ६५ मंकन ६६ मल्लवर्त्त ६७ महाराष्ट्र ६८ यवन ६९ रोम ७० राटक ७१ लाट ७२ ब्रह्मोत्तर ७३ ब्रह्मावर्त्त ७४ ब्राह्मणवाहक ७५ विदेह ७६ वंग ७७ वैराट ७८ वनवास ७९ धनायुज ८० वाल्हीक ८१ वल्लव ८२ अवंति ८३ वह्नि ८४ शक ८५ सिंहल ८६ सुम्ह ८७ सूर्पर ८८ सौवीर ८९ सुराष्ट्र ९० सुहड ९१ अस्मक ९२ हूण ९३ हर्मोक ९४ हर्मोज ९५ हंस ९६ हुहुक ९७ हेरक ९८ एवं देश अट्ठाणू अनइ आदन हाबस मुगदिसुं धनगिरि सीकोत्तर चोलनाट पांड्य तालीउ त्रिहूति भोट महाभोट चीण महाचीण बंगाल पुरसाण मग्ध वच्छ गाजणाप्रमुख अनेक देश वर्त्तइं।

तीहमाहि वषाणीयइ मरहट्ठदेस। जीणइ देसि ग्राम, अत्यंत अभिराम भलां नगर, जिहां न मागीयइं कर। दुर्ग, जिस्यां हुइ स्वर्ग; धान्य, न नीपजइ सामान्य; आगर, सोनारूपातणा सागर। जेह देसमाहि नदी वहइं, लोक सुपइं निर्वहइं। इसिउ देश, पुण्यतणउ निवेश, गरूअउ प्रदेश। तीणि देसि पट्टणपुर पाटण वर्त्तइं; जिहां अन्याय न वर्त्तइं। जीणइं नगरि कउसीसे करी सदाकार पापलि पोडउ प्राकार; उदार, प्रतोली द्वार; पातालभणी घाई, महा

काय पाई, समुद्र जेहतु भाई; जे लिइ कैलासपर्वतसिउं वाद, इस्या सर्वज्ञदेवतणा प्रासाद; करइं उल्लास, लक्षेश्वरीकोटीध्वजतणा आवास; आनंदइं मन, गरुउं राजभवन; ऊपरि अपंड, सुवर्णमय दंड, ध्वजपटल लहलहइं प्रचंड। जेह पाटणमाहि अनेक आश्चर्य वापरइं, चउरासी चउहटां कलकलाट करइं। किस्यां ते चउहटां। सोनीहटी १ नाणावटहटी २ जवहरीहटी ३ सौगंधीयाहटी ४ फोफलिया ५ सूत्रिया ६ पटसूत्रिया ७ घीया ८ तेलहरा ९ दंतारा १० वलीयार ११ मणीयारहटी १२ दोसी १३ नेस्ती १४ गांधी १५ कपासी १६ फडीया १७ फडीहटी १८ एरंडिया १९ रसणीया २० प्रवालीया २१ त्रांबहटा २२ सांपहडा २३ पीतलगरा २४ सोनार २५ सीसाहडा २६ मोतीप्रोयां २७ सालवी २८ मीणारा २९ कुंआरा ३० चूनारा ३१ तूनारा ३२ कूटारा ३३ गुलीयारा ३४ परीयटा ३५ घांची ३६ मोची ३७ सुई ३८ लोहटिया ३९ लोहारा ४० चीत्राहरा ४१ सतूआरा ४२ कागलीया ४३ मचपहटी ४४ वेइया ४५ पणगोला ४६ गांछा ४७ भाडसुंजा ४८ वीवाहडा ४९ त्रांबडीया ५० महंसायत ५१ मलिन नापित ५२ चोपा नापित ५३ पाटीवणा ५४ त्रांगडीया ५५ वाहीत्रा ५६ काटवीठीया ५७ चोवावीठीया ५८ सूपडीया ५९ साथरीया ६० तेरमा ६१ वेगडीया ६२ वसाह ६३ सांधूआ ६४ वेरूआ ६५ आटीआ ६६ दालीया ६७ दडडीआ ६८ सुंजकूटा ६९ सरगरा ७० भरथारा ७१ पीतलहडा ७२ कंसारा ७३ पत्रसागीआ ७४ पासरीआ ७५ मंजीठीया ७६ साकरीया ७७ साबूगर ७८ लोहार ७९ सूत्रहार ८० वणकर ८१ तंबोली ८२ कंदोई ८३ पुडिहटी ८४ कुत्रिकापणहटी एवं चउरासी चउहटां जाणिया।

जीणइं नगरि अनेक पामीयइं रत्न, जीहतणां कीजइं यत्न। किस्यां ते रत्न। अश्वरत्न गजरत्न पुरुषरत्न स्त्रीरत्न अनइ पद्मराग पुष्पराग माणिक सींघलिया गुरुडोद्गारमणि मरकत कर्केतन वज्र वैडूर्य चन्द्रकांत सूर्यकांत जलकांत शिवकांत चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अपराजित गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ पुलिक सौगंधिक सुभग सौभाग्यकर विषहर धृतिकर पुष्टिकर शत्रुहर अंजन ज्योती रस शुभरुचि शलमणि अंशुकालि देवानंद रिष्टरत्न कीटपंखि कसाउला धूमराइ गोमूत्र गोमेद लसणीया नीला तृणचर खड्गइ वज्रधार षट्कोण कणो चापडी पिरोजा प्रवाला मौक्तिकप्रमुख रत्नेकरी दीसइं भरियां हाट, अनेकसुवर्णमय घाट; पिहुली घाट, चालइ घोडांतणां घाट, लोकनइं नहीं किसिउ ऊचाट। जिहां पुण्य विशाल, तीसी पोसाल-

जिहां छात्र पढइं चउसाल, तिसी नेसाल; जिहां अध्यात्मतणी वात दृढ, तिसां अनेक मढ; जिहां लोक जिमई अपार, तिसा सत्रूकार; जिहां पाणी पियइ सर्व, तिसी पर्व; जिहां रमलि कीजइं स्वभावि, तिसी वावि; जिहां आनंद हूआ, तिसा कूआ; पद्मवनखंडमंडित प्रवर, महाकाय सरोवर; जिहां रंगि कीजइं रयवाडी, तिसी वाडी; जिहां सीतल फुरकइ पवन, तिसां पापलियां वन; इसुं अन्यायरहइं दाटण, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध पुहिठाणपुर पाटण।

तीणि पाटणि राजाधिराज पृथ्वीचंद्र इसिइं नामिइं राज्य प्रतिपालइ, भुजबलिकरी वइरी वर्ग टालइं। जीणि राजा गौडदेशनउ राउ गांजिउ, भोटनउ भांजिउ; पंचालनउ राउ पालउ पुलइं, कानडादेसनउ कोठारि रूलइं, ढोरसमुद्रतउ ढोयणां ढोयइ, वावरउ वारि वइठउ टगमग जोयइ; चौडनउ दंडि चांपिउ, कास्मीरनउ कांपिउ; सोरठीयउ सेवइ, तुडि न करइं देवइं; अंगदेसनउ अंगि ओलगइ, जालंधरनउ जीवितव्यकारणि रिंगइ; घणुं किस्युं कहीयइ, रिपुकुलकालकेतु शरणागतवज्रपंजर पंचम लोकपाल। जीणं रिपु सर्वे निर्घाट्यां दुर्ग सर्वे आपणा कीधा, वयरीनइं देसवटा दीधा। इसिउं निःकंटक साम्राज्य प्रतिपालइ। तेह नरेश्वरनइं बुद्धिनिधान, परमहंसनामि प्रधान; जेउ सहि जिहं रूपिइं रूडउ, पाटरहिं नहीं कूडउ; राउलउ अर्थ सारइं, लोक ऊगारइ, वयरविग्रह वारइ; पालइ दीन दुस्थित निराधार, करइ साधुजन उपगार; शास्त्रि शास्त्रि कुशल अपार, गुहिर गंभीर, अतिहिं धीर; मुहि मींठउं भाषइं, काज कीधां जि दाषइ; चिहुं बुद्धितणउं निधान, सविहुं अमात्यमाहि मूलिगु प्रधान; रायतणउं प्रतिशरीर, इसिउं ते मंत्रीश्वर; नरेश्वररहइं, शिवमय सुषमय कल्याणमय दियस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजा रातितणइं प्रस्तावि स्वप्न एक दीठउ, जेहनउं फल छइ अत्यंत मींठउं। किसउं ते स्वप्न। इसिउं जाणइ नरेश्वर सुवर्णवर्णकांति, देयरहइं मन भ्रांति; पलकते नेउरि झलकते कुंडलि हाथि वरमाल, अर्द्धचंद्रसमभाल; रूपि विशाल, इसी बालदेवी देषइ भूपाल। जेतलइ तेहतणी वरमाला कंठिकंदलि लागी, तेतलइं रायनइं निद्रा भागी; जागिउ नरेश्वर, चींतवइ अलवेसर। किसिउ स्वप्नतणउ घटइ विचार, तेतलइ प्रभातावसरि हूउ मांगलिकशंख तणउ ओंकार हूआ नियलितणा दोंकार, मृदंगतणा धोंकार; भट्टतणा मांगलिकध्वनि, राजा आनंदिउ मनि; शुभहेतु स्वप्नतणउ मनि विचार धरी, पालंक परिहरी; क्षणु एक राजा महापाइइ आव्या। माहं

सिउ विनोद नीपजाव्या पछइ स्नानमज्जनादिक प्रभातकरणीय कीधुं, याचकर-
हइ दान दीधउं। ति वारें गणनायक दण्डनायक पायक वृत्तिनायक वहीवाहक
तलवर माडम्बिक कौटुंबिक इन्द्रजाली फूलमाली धातुर्वादी मन्त्रवादी तन्त्र-
वादी यन्त्रवादी कपटाइत चपटाइत अङ्गरक्षक अङ्गमर्दक मीठावोला सुहावो-
ला कथावोला साचावोला जूठावोला अनइ अनेक राजराजेश्वर मण्डलेश्वर सा-
मन्त तंत्रपाल तलवर्ग चउरासीया महामात्य मन्त्रीश्वर श्रीगरणा वयगरणा
मांधिगरणा सेनाधिपति आगरीया व्यवहारीया राजद्वारिक भण्डारी
कोठारी कापडभण्डारी पूगभण्डारी रसोईया पाणहरी श्रेष्ठि सार्थवाह पीठमर्द
रवधू वीणकार वंशकार उतिकार आउजी पखाउजी पटाउजी आलवणकार
क्षणिक तार्किक छान्दसिक मुखमाङ्गलिक वैद्य ज्योतिषी पाहरी पङ्गधर
न्नधर धनुर्धर छत्रधर बालकहार सेजपाल थईयात पण्डित कवि लेखक
य महायोध माल मसाहणी पाण्डव पउंतारप्रमुखसकललोकि करी सश्रीक
जा राजसभां बईठा।

राजसभा किसी छइ। जीणि राजसभां कुंकुमजलि छटा दीधी छइ,
विधमुक्ताफलि चतुष्क पूरिया छइं, कर्पूरतणा शंख आलिप्या छइं, कृष्णा-
जवाधिनणा परिमल महमहइं छइं, मोतीतणी सिरि लहलहइं छइं, फूलपगर
रिया छइं, कटीप्रमाणपायपीठसंयुक्त पुरुषप्रमाण सुवर्णमय सिंहासन
दिउं छइं। तीणि सिंहासणि राजा बइठा। किसउ राजा दीसइ छइ,
नकि श्वेतातपत्र छइ; पासइं ढलइं चामर पवित्र, वाजइं विचित्र वादित्र;
नकि मुगट, कानि कुण्डल, हृदयि हाराहार, महाउदार, धनदतणउ
भार, रूपतणु भण्डार। घणउं किसिउं कहीयइ। जिसउ पृथ्वीलोकतणउ
, जिसउ सोलकलासम्पूर्ण चन्द्र, इसउ दीसइ छइ पृथ्वीचन्द्र नरेन्द्र।
सइ अवसरि प्रतीहार आविउ प्रणाम नीपजाविउ। राजांसाम्ही दृष्टि
ी, ऊणि वीनती कीधी; जी अयोध्यानगरीहूंतउ दूत तम्हारइ द्वारांतरि
विउ मनितणइं उत्साहि, जइ हुइ आदेस तु मेलहउं माहि। इउ राजा-
उ आदेस, इति कीधउ सभामाहि प्रवेस। रायरहइ कीधउ जुहार, अलं-
उं योग्य आसण उदार। राजा दूतरहइ बहुमान दीधउं, कुशल प्रश्न
उं। आनन्द ऊपनउ अत्यन्त, हिय दूत वीनवइ कार्य विशेष चन्न।
ां लोकरहइं नहीं किसिउ क्लेश, जिहा नही पइरीतणउ प्रवेश, पुण्यतणउ
श; अनेक ग्रामनगर, सोनारूपातणा आगर; मनोहर छइ कोसलादेस

तिहां छइं नगरी अयोध्या । किसी ते नगरी । धनकनकसमृद्ध, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध; अत्यंत रमणीय, सकललोकस्पृहणीय; पूर्व्वाकृपिणीकामिनीरइं तिलकायमान, सर्वसौंदर्यनिधान; लक्ष्मीलीलानिवास, सरस्वतीतणउ आवास; अतुलदेवकुलि मंडित, परचक्रि अखंडित, सदा सुठाकुरि पालित, रमणीयराजमार्गि शोभित, उत्तंगप्राकारवेष्टित; सदा आश्चर्यतणउ निलय, वसुधानितावलय, निरुपमनागरिकतणउं ठाम, मनोभिराम; जनितदुर्जनक्षोभ, सज्जनोत्पादितशोभ; पुरुषरत्नोत्पत्तिरोहिणाचल, कुलवधूकल्पलतारत्नाचल। जीव्ह नगरी देवगृह मेरुशिखरोपमान, धवलगृह स्वर्गविमानसमान; अनेक गवाक्ष वेदिका चउकी चित्रसाली जाली त्रिकलसां तोरण धवलगृह भूमिगृह भांडागार कोष्ठागार सत्रागार गढ मढ मंदिर पडयां पटसाल अधहट्टां फडहट्टां दंडकलस आमलसार आंचली वंदरवाल पंचवर्ण पताका दीपइं । सर्वोसर मंत्रीस्वर मांजणहरां सप्तद्वारांतर प्रतोली रायंगण घोडाहट्टि अपाडउ गुणणी रंगमंडप सभामंडपसमूहि करी मनोहर एयंविध आवास । जेह नगरिमाहि दोसी नेस्ती साह वसाह पटउलीया पडसूत्रिया पजूरीआ बीजउरीआ कणसारा भणसारा मपारा नवकर भोजकर भला लामा अनेक लोक वसइ । पांचसइं व्यवसाईया व्यवसायविषइ उद्धसइ । जेह नगर पापलीया अनेकि कूपा वावि सरोवर नइ नीक निरुपम उद्यान आंब नींव जांबू जंबीर बीजपूरप्रमुख वृक्षावली करी प्रधान च्यारि पोलि, प्रधान कोसीसातणी ओलि; प्रभातसमइ सूर्यतणे किरणेकरी प्रासादतणे शिखिरि धजकलश झलकइ, धजऊड ललकइ । घणउं किसूं कहीइ, जिसी होइ अमरावती भोगावती अथवा अलका लंका इसी नगरी अयोध्या वषाणीइ । तीणि नगरी ईक्ष्वाकुवंशावतंस विहितवयरीकुलविध्वंस निजकुलकमलराजहंस अतुलवल पराक्रम त्रिविक्रमसमान राजा श्रीसोमदेव राज्य प्रतिपालइ, प्रजा संसालइ, अन्याय टालइ । जे राजा सत्यवाचा राजा श्रीहरिचंद प्रतिज्ञा राजाश्रीयुधिष्ठिर निर्भय भीम आपन्न जीमूतवाहन विद्या बृहस्पति लावण्य लवणार्णव रूपि कंदर्प प्रताप मार्त्तंड औदार्यि बलि राजा अद्भुतदानि चिंतामणि सेवकजनकल्पवृक्ष चतुरंगवाहिनीसमुद्र। घणउ किशिउ कहीइ महासासनु अरडकमल्ल जगझंपणउ प्रतापलंकेश्वर परराष्ट्रीरायहृदयशल्य इसिउ प्रतापीउ राजा राज्य प्रतिपालइ । तेह राजातणउ अंतःपुरिमाहि प्रधान गुणनिधान भर्त्तारतणी भक्तिविषय महासाधनि स्त्री कमललोचना इसिइं नामि पट्टराज्ञी वर्त्तइ । जेह राणी, सहिजि

५९ लोकव्यवहार ६० वशीकरण ६१ वारितरण ६२ प्रश्नप्रहेलिका
धर्मध्यान ६४ ए कहीयइं सर्वकलाविज्ञान, जाणइ सकल शास्त्र
चउसट्टि विज्ञान ।

इति श्रीमच्चलान्ते श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे
वाग्विलासे प्रथमोल्लासः ।

द्वितीयोल्लासः

दिव ते कुमरि, चढी यौवनिभरि; परिवरी परिकरि, कीध
नवनवी परि । इसिइं अवसरि आविउ आषाढ, इतरगुणि संवाह; क
लोह, पामलगउ निरोह; छाति पाटी, पाणी थीपाइ माटी; वि
वर्षावरण, जे पंथीलगउ काल, नाठउ दुकाल । जीणिइ वर्षाकालि मयु
मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षभूपति आवतां ज
वाजइ; चिहुं दिसि बीज झलहलइ, पंथी घरभणी तुलइ; विपरीत अ
चंद्रसूर्य पारियाग; रात्रि अंधारी, सयइं निमिरी; उत्तरनउ ऊनपण,
गरण; दिसि घोर, नाचइं मोर; गगर, वरसइ धाराधर; पाणीतणा
पलहलइं, वाहिकारि वेला वलइं, चीपलि चालतां शकट रुलइं, लो
मन धर्मकरणि वलइं; नदी महापूरि आवइं, पूर्वापीठ छावइं; नवां वि
लहलहइं, वृक्षविमान लहलहइं; कुटुंबीलोक आवइ, महाभला वहडा
वावइं; पर्वतनउ मोहरण विछुटइं, अरिषां सरोवर फूटइ । इसिइ वर
राजा सोमदेवतणइं कलाविइं सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणइं; वधा
पाणइ, राजाकन्नइ आणइ; राजा मनि महाहलउ, सरोवर जोइवा पु
दिनइं अरिइं सरोवर, उपनउ आनंदभर; जोगी तेही महोत्सववणुं
मेलइं, अमोट उपरइ मेलइं कीधइं; इसिइं कलां भाविउ भागो माग
कलहंस: कलहंस उल्लास, हंसतणु विलास; कादव सूकइं, मह निर्मा
सूकइं: दिसइं कुसुमकली, परमेश्वर सर्वज्ञ पूजतां पूजइ मनवली
[illegible] दिवसि मोटइ भाइंदवि सोमवार सरोव
[illegible] पूजण, [illegible] देवइ [illegible] ।

[illegible] । [illegible] । दुवे [illegible]
[illegible] देवइं [illegible] सूराइं चंद्राइं देवतासं [illegible]

सोमशर्म्म श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषोत्तमप्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानइं कारणि कलिकलिया; गले आगा, वेदध्वनि उचरिया लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणइ। ते किस्या पुराण। भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कंडेयपुराण ४ विष्णुपुराण ५ वाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९ ब्रह्मांडपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ लिंगपुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति। मानवीस्मृति १ आत्रेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३ हारीतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैश्चरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७ आपस्तंबीस्मृति ८ सांवर्त्तकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० बृहस्पतीस्मृति ११ पारासरीस्मृति १२ शंखीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दाक्षीस्मृति १५ गौतमीस्मृति १६ शातातपीस्मृति १७ वाशिष्ठीस्मृति १८।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंअरि राजारहइं वीनती करावी, तिहां कुलिग जोइवा आवी। जेहतणइ परिवारि, सखी अनेकप्रकारि; कस्तूरिका कर्पूरिका लीलावती पद्मावती चंद्रावती चंद्रउली चंपू हंसी सारसी वसुलीप्रमुख अनेक सखी वर्णइ। तीहं सहित तिहां आवी। पितारहइं प्रणाम नीपजावी उत्संगि बइठी, दिव्य रूप देवी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एहयोग्य कथण वर, किं नर, किं विद्याधर, इसीउं चींतवतइं नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीधी। तु निर्मल जलि, बइठा कमलि; हंस करइं रमलि, च्यारइ दिसि वासीइं परिमलि; कारंड कुरंज कलहंस कलगलइं, साप टलइं; मोर वासइं, सर्प नासइ; आदि पंखीआ तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीसतां प्रीति पमाडइं मन; देहुरी देहकलस झलहलइं, लहरि ऊछलइं। इम जोतां राजहंस एक सरोवरमंडइ उठी बइठउ राजातणइं लाधि, निहालिउ नरनाथि। तु रूपउ रूपवंत, कलीपामणउ, सोहामणउ; श्वेत, लावण्योपेत; जिसिउं लक्ष्मीदेवतातणउ चमर, जोएइं सोहीपइं अमर, कुंदकुसुमसलवकसमान प्रधान पक्षिकुलावतंस। इसिउ हंस कुलिगकरी कुमारी लीधउ, राजा दीधउ। जेनइं जोआइ कुमरी, तेनइं हंसि जिमणी पांख विस्तारी; कुमरि पांखमाहि पाली, अंगोपरि राखी। उडहिउ हंसु, तत्काल पडिउ ध्वंसु। धसमसतउ उठिउ राउ, काइ घाइ घाइ, वलिउ सीसाणि घाउ। राउतणाथक चलभलिया, वीर सवि मिलिया। पाइं लागा, ब्राह्मण

घरभणी ऊजाणा; दुवे नाठा, सवे त्रिवाडी त्राठा। वुंब पडी राउ घायउ हंस पूठिइं जेतलइं, हंस धाई पइठउ कमलमाहि तेतलइं। जे वारू, ते पइठा सरोवर माहि तारू; समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ। निश्वास मेल्ही राउ पाछउ वलिउ, परिघउ परिवार मिलिउ। राणी ते वात जाणी, मूकी पामी सप्राणी, सचेत कीधी छांटी छांटी पाणी; राजा आवासी आव्यउ कन्यातणुं दुःख धरता छ मास अतिक्रमाया।

तिसिइ आविउ वसंत, हूउ शीततणउ अंत, दक्षिणदिसितणउ शीतल वाउ वाइं, विहसइं वणराइं।

सव्वे भल्ला मासडा पण वइसाह न तुल्ल।
जे दवि दाधा रूंपडां तींह माथइ फुल्ल॥

मउरिया सहकार, चंपक उदार; वेउल वकुल, भ्रमरकुल संकुल, कल रव करइं कोकिलतणां कुल। प्रवर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, विकसित कमल; राता पलास, सेवंत्री वास; कुंद मुचकुंद महमहइं, नाग पुन्नाग गहगहइं सारसतणी श्रेणि, दिसि वासीइं कुसुमरेणि; लोकतणे हाथि वीणा, वस्त्राडंबर झीणा; धवल शृंगार सार, मुक्ताफलतणा हार; सर्वांगसुंदर, वनमाहि रमइ भोग पुरंदर। एकि गीत गवारइं, दान दिवारइं; विचित्र वादित्र वाजइं, रमणितणां रंग छाजइं। एकि वादिइं फूल चूटइं, वृक्षतणा पल्लव पूंटइं; हीडोलइं हींचइं झीलतां वादिइं जलिइं सींचइं; केलिहरां कउतिग जोअइं, प्रीतमंत होयइ। वनपालकि अवसर लही वसंत अवतरियातणी वार्त्ता कही। राजा सोमदेव आव्यउ वनमाहि, तेह जि सरोवर देषी कुंअरि सांभली मनमाहि। तेतलइं पुरुषि एकइं तेह सरोवरहुंतुं एक कमल लेइ रायरहइ दीधउं, राजा हाथि लीधउं तेतलइं तेह जि कमलमध्यहुंती नीसरी रत्नमंजरी कुमरि, दीठी नरेश्वरि दुःखतणां व्याप चूरियां, लोक आश्चर्य पूरिया। नगरमध्य वार्त्ता जणावी, राइं कमललोचना आवी। दीठी बेटी, हुइ परमानंदतणी पेटी, परिवरी नेटी। तिहां मांडिया वधामणां, महोत्सवि करी सुहामणां; विचित्र वादित्र वाजिया लागा ते कवण कवण। वीणा विपंची वल्लकी नकुलोष्ठी जया विचित्रिका हलिका करवादिनी कुब्जिका घोषवती सारंगी उदंबरी त्रिसरी छंपरी आलविणि छकना गयणहल्या माल कंमाल घंट जयघंट घालरि उंगरि कुरकचि कमर घाघरी ढाक ढाक ढाक धुंग नीसाण सांबकी कडुआलि सेहक कांसी पाठ

सांप मींगी मदन काहल भेरी धुंकार तरवरा। ईणिपरि मृदंगपटुपडहप्रमुप
ग वाज्यां, दुःख दूरि ताज्यां। इकवीस मूर्छना इगुणपंचास तान, इस्यां
गीत गान; पाचक योग्य प्रधान वस्त्रदान। किस्यां ते वस्त्र। सूधिला संग्रा-
दाडिमां मेघवनां पांडुरां जादरा कालां पीयलां पालेवीयां ताकसीनीयां
रीयां कस्तूरीयां फूदडीयां चउकडीयां सलवलीयां ललवलीयां हंसवडि
जवडि उडसाला नर्म पीठ अटाण कलाण झूना झामरतली भइरव सुरभइरव
लीवद्धप्रमुख वस्त्र जाणियां। ईणिपरि महोत्सवभरि, साथि कुमरि, नरेश्वर
हूना नगरि। मननणइ उल्लासि, आव्या आवासि। रायरहइ कुमरीतणउं
स्वरूप विमासतां ऊपनी आकाशवाणी, ए वार्त्ता कहिस्यइं केवलनाणी। राजा
तां आश्चर्य धरतइं हुंतइ प्रधान तेडाविउ, तिहां आविउ। ते प्रणाम करी वइ-
ठउ तउ राजां बोलाविउ। हे मंत्रीश्वर विचारि, पाणिग्रहणयोग्य हुई रत्नमंजरी
कुमारि। तु मंडावीयइ स्वयंवर, मेलीयइं सवे नरेश्वर, कन्या आपणी इच्छा
वरइ वर। इसिउ आलोच कीधउ, तु राजा सविहुं दूतरहइं आदेश दीधउ; जु
को पृथ्वीपीठि राय नइ राणउ, तम्हे जाणउ, ते समग्र ईणि स्थानकि आणउ।
तिवारपछिइं स्वयंवरमंडप सूत्रधारपाहिं करावियां मंडाविउ, हुं तुम्हकनइ
आविउ। हिव तुम्हे तिहां पाउ धारउ, ए वीनती अवधारउ, राजासोमदेवतणइ
मनि आनंद वधारउ।

इसी वार्त्ता सांभली दूतहुइं बहुमान देतु कटक लेइ राजा पृथ्वीचंद्र
स्वयंवरभणी चालिउ, कटकभारि पातालि शेष नाग हालिउ। हाथीया घोडा,
नहीं थोडा। किस्या ते हाथीया छइ। सिंहलद्वीपतणा, जाजनगरतणा, भद्रजातीय,
उछलितसुंडादंड, प्रचंड, पर्वतसमान, जलधरवान, चपलवान, मदजल झरता,
आलि करता, अतुलबल, उच्छृंखल, गलगर्जित करता गजेंद्र सांगरियां, तर-
लतेजी तरवरिया। किस्या ते। हयाणा भयाणा कूंकणा काश्मीरा हपठाणा पइ-
ठाणा सरसईया सींधउरा केकाइला जाइला उत्तरपंथा पार्णापंथा साजा तेजी
तोरका काच्छला कांबोजा भाडेजा आरट वाल्हीकज गांधार चांपेय तैलिंग
धैवर्त्त आर्जनेय कांदरेय दरद सौवीर क्षेत्रशुद्ध प्रमाणशुद्ध चपल सरल तरल
उंचासणा परीछणा। जोपउं मइं. वपूसारिया रहइं: वांकी ग्रीवी, सभर पृ
छोटे काने, सूधइ थानि: मइरनी ललवलाई, नीलटनी वलाई, पूंछतणी आ
ताई: पलाणतणी सामंताई: वांकी तुंडवालि, वहुली पेटवालि, मुहि स

आसणि सूधा; हसमंत हयहेषारवि अंबर वधिर करता। सूरवीर साहसिक काल्हआ किरडिया किहाडा नीलडा सेराहा कविला धूंसरा मांकडा दोरीया वोरीया द्वादशावर्त्तव्यंजनगुणि शोभित शालिहोत्रशास्त्रप्रणीतलक्षणलक्षित। ससइं घसइं, साटि पहसइं, जुडइं, दउडइं। जिस्या सूर्यतणा रथ छूटा हुइं तिस्या अनेक तुरंगम सांचरिया। तउ पायक पहटिया। किस्या ते पायक। सूरवीर विक्रांत दुर्दांत पड्ग पेडे लीधे अमइं, वयरीरहइं आक्रमइं; पवनवेगि पुलिइं, योधसुं जुडइं, सेल्ह कुंत तोमर ताकइं, वयरीरहइं हाकइं; वेला लामी, न मेल्हइं स्वामी; नवनवां आयुध लिइं, एक वार आकाश पडतां धाड दिइ। किहांई न दीसइ थाका, जींह लगइ हुइ जयपताका; जे धाइं पुलइं ऊच्छलइं। इस्या पायकनी मिली कोडि, जींह माहि नहीं पोडि। हिव रथ विस्तरिया। किस्या ते रथ। चपलतुरंगमजूता, सुखिइं सुभट चालइं माहि बइठा सूता; छत्रीसे दंडायुधे भरिया, वायुवेगि सांचरिया; धडहडाटि धरामंडल धंधोलइं, रजमाहि रविबिंब रोलइं; ऊपरि धज लहलहइं, जाणे देवसंबंधीयां विमान गहगहइं; पांट वाजइं, वयरी भाजइं; मूर्त्तिवंता जिस्या मनोरथ, इस्या अनेक सांचरिया रथ। इणिपरि चतुरंग दल चालतां हुतां नरेश्वररहइं वाटइं अनेक ग्राम नगर आवइं, लोक नयनयां भेटणां नीपजावइ। मार्गि जातां आवी एक अटवी।

हिव ते किसीपरि वर्णवियी। जेह अटवीमाहि तमाल ताल हंताल माहूर खर्जूर अर्जुन चंदन चंपक बकुल विचिकिल सहकार कांचनार जांबू जंबीर वानीर कणवीर कीर केलि कदंब निंब नारिंग नालीयरि द्राख दाडिमी देवदारु अंकुल्ल कंकिल्लि नाग पुन्नागवल्ली यूथिका मालती माधवी जाया मल्लक दमनक पारधि केतकी मुचकुंद कुंद मंदार तगर सेवंती रातगिरि सिरीयां सींवलि सिरिष सीसमि साग टींटसार आक आकमंदार कविठ बील बहिडां करण वरण धव खदिर पलाश वड वेडस पींपल पींपरि ऊंबर कठंबर वाहडी वासग पीच पेजड पीरणी कडर कांजड बाउल बीजुरी आमली आंबिली बोरि इंगोरि गोरडीयाप्रमुख वृक्षावली दीगइं, वीहंतां सूर्यतणां किरण अंदि न पडइं। अनइं किहांई सियालणा फेरकार, घूकतणा घूत्कार; व्याघ्रतणा घुरघराट, न लाभइं वाट नइ घाट; माहि वानरपंखा उछलइ, मदोन्मत्त हस्तिइं गुलगुलइं; सिंहनादभयभीत मृगगण धडधडइं। जिस्या दवि दाधा रूंख, जिस्या भीख। सूआर घुरघुरइं, चीत्रा घुरघुरइं; वेताल किलकिलइं, दावानल प्रजलइं; सिंह डगमगइं, विद्याधर मुख विचरइं। इसी महारौद्र अटवी।

तेहमाहि नरेश्वरतणां कटक न लहइं मार्ग, न लहइ नदीतणा लाग; न लहइ वाटी घोडा हाथी, न को जाणइ साथी। विषम पर्वतमाला, डावी जिमणी दुहतणी उत्ताला, जइं न लहइं चढिया नइ पाला, तेतलइं दीसिया लागा भील अत्यंत काला। तिवारइं राजापृथ्वीचंद्र चींतविउं आवी विषम वेला, जइं थाई भील भेला; तु विघ्न दुर्लीपइं, जइ परदल न वृत्तीपइं। जेतलइं राजा इसिउं चींतविउं तेतलइं ते कटक अडयोऊपरि हुई पारि पहुतुं, मनि गहगहतुं। आगलि नगर एक देखइ, ते हर्ष कुणतणइ लेखइ। सवे कटकीया लोक आश्चर्य धरइं, परस्परइं इसी वात करइं। कुणहिं काई जाणिउं, ए कटक इहां कुणि आणिउं; दैव कटक, पुणि देव दाणव कोइ मूकउ; जीणइं एवडुं सानिध्य कीधउं, हेलामात्र कटक इहां लीधउं। अथवा राजा पृथ्वीचंद्र धन्य, जेहनुं गरूउं पुण्य। जेह कारणि इम्युं कीइ। जे गया विदेसि, पडिया फेडिसि; ताणीया पाणीनइ पूरि, आवल्या कूरि; चांप्या समरि, टमिया विषधरि; धरिया राइ, भेल्या घणे घाइ; मुकिया मोगे, दूहविया रोगे; उपाडिया बंदि, पडिया विछंदि; तीहं सविहुंनइं धर्मनउ आधार, ए साचउ विचार। लोकतणइं इसी वात करतां राजाइं तिहां आंबापृक्षहेठलि आव्या, उजारा नीपजाव्या। तेतलइ धातु, पुलतु; पाछउ जोवउ, कायरपणइ रोवउ; पुरुष एक नरेश्वरतणइ शरणि पडउ। तेतलइ नरआरि लावला, हणिहणि भणी हाकला; केई पुरुष आव्या। तेहइ राजा बोलाव्या। आपु ए चोर, महाकठोर, जे पहनइं रापइ ते दोर। तिवारइं राजातणे सेवकि कहिउं अरे ए कहीइं राजा पृथ्वीचंद्र, पहस्युं पहुची न सकइं इंद्र। तिवारइं ते पुरुष कहिया लागा। नरेश्वर पहिलउं वात अवधारउ, तउ चोर उजारउं। अम्हे तलार, करउं नगरतणी मार। पुणि ए चोर, दुर्दान्त अपार; ए विविधवेसि हेरइ, बोलाविउ बोल फेरइ; चढइ मालि अटालि, पइसइ परनालि पालि; कमाट उघाडइ, पुणि सुतु कोइ न जगाडइ, अघोर निद्रा दिइ; कानकोटना आभरण लिइ; कटारी पायबंधन वाढइ, पर्वतमाय बेकाण काढइ; चहिउं चोर पवाटई, राउला भंडार फाडइ; दीसइ दिसि शांत, पुणि रात्रिइं साक्षात् कृतान्त; विणासीनउ न मानइं चोरी, बांधइउं वादी जाइ दोरी; लोह सांकल त्रोडइ, घडी न रहइं पोडइ; हाकिउ ऊजाइ, बंधिउ घसी धाइ, करि कीधइ करवालि, जाइ लोकलक्षविचालि; गढमंदिर फाडइं, धीजि अडइ। इम्यु ए चोर गढनइ परनालि पइसतउ लाधउ, पाडी बांधउ, दांते दोर त्रोडि

नाठउ, तुम्हनइं शरणइ पइठउ । पुणि ए पापी, जीणि प्रजा संतापी; ए तुम्ह म
थापउ, अम्हरहइं आपउ । नहींतु घायप्रहार देसिउं, प्राणिहिं लेसिउं । अम्हा-
रउ ठाकुर सपराणउ, तेह आगलि कोई राय नइ राणउ । सांभलउ ए वात,
ए आगलि दीसइ पद्मपुरनगर महाविख्यात । तिहां छइ राजा समरकेतु, अति-
सचेतु, वयरी प्रति साक्षात् केतु । जेनलइ तेउ ए वात जाणिसिइ, तेनलइं
ताहरा अहंकारतणउ अंत आणिसिइ । एह कारणि चोर आपी निर्दोष थाउ,
पछइ तुम्हे भावइ तिहां जाउ । इसी वार्त्ता सांभली आपणां सुभटसाम्हउं जोई
राजा पृथ्वीचंद्र हस्या, तउ ते सुभट उल्हस्या । ऊठिया ते वीर, ताकवा लागा
तोमर तीर । नाठा तलार, नासता पूठिइं वाजइ प्रहार; नीठ ते जइं नगरमा-
हि पइठा, तु नाभिइं सास वइठा । जइ वीनविउ समरकेतु राउ, देषाडइं आ-
पणउ घाउ । समरकेतु राजा कीधउ कोप, हूउ दलवइं निरोप; तत्काल साम-
हिउं दल, मिलइं सुभट सबल; वाजइं प्रयाणभेरी, वीहइं वयरी; पाइहलि गु-
डिउ, तेहऊपरि राजा चडिउ । रथ हथियारे भरिया, तुरंगम पाषरिया, पायक
सांचरिया; चतुरंग दल नीकलिउं, बाहिरि एकठउं मिलिउं; दीसइं छत्रध्वज,
ऊछलइं रज । तउ तेह दूत मोकलिउ तिहां रही, तीणें पृथ्वीचंद्रप्रतिइं इसी वात
कही । तुं पियारइ देसि पइस, अन्याय करी इहां वयस; तउ तुं अजाण, अजी मानि
स्वामीसमरकेतुतणी आण, नहींतु प्रकटि प्राण; चोरदंड तुझनइं होसिइं, लोक
कउतिग जोइसिइ । ईणइं वातइं दूत अपमानी बाहिरि काढी राजा पृथ्वीचंद्रि
दल सामहाविउं, ए आपणइ पर्य आविउं । चाल्यां वेउ दल, ऊपडइं धूलि-
हल; कोइ आप पर विभाग बूझवइ नहीं, पितापुत्र सूझइ नहीं । न जाणीइं आपणां
दल, न जाणीइ पिगयुं दल, न जाणीयइ भूतल, न जाणीइ नभोमंडल; न जाणीइ
पूर्व न जाणीइ पश्चिम एकाकार हुउं । बिहुं दल मिलते मादल वाजी, जयढक्क
वाजी, रणचढण काहली वाजी; रणतूर वाजिया । त्र्यंबकतणे त्रहत्रहाटि जाणे
त्रिन्हइ त्रिभुवन टलटलिया लागा, भेरीतणे भूंभूयाटि भुहि मिलिहि फाटी,
काहलतणे कोलाहले कायर कमकम्या, नीसाणतणे निनादि उर्ध्वः अधो ऊकलिउ,
लंगडा ऊमंडिउ, दिगगज हडहडिया, ढाकवूक वाजी, धुंधारव फाटी, बिहुं दलि
वाजते सेहनाग सलवलिउ, कूर्मावलयक चलिउ, कूर्म करोहि भाजइ, अंबर
काजइ; अकालि अकस्माति प्रलयकालनी शंका हुई । वाध्या कोप, हुआइं रोप; पाप
कूटवइं, दुर्योग देहापुय चालवइं । किस्यां ते । चक्र ? चक्र २ धनुष ३ अंकुश

५ छुरिका ६ तोमर ७ कुंत ८ त्रिशूल ९ भाला १० भिंडमाल ११ मु-
१२ मक्षिक १६ मुद्गर १४ अरल १५ हल १६ परशु १७ पट्टि १८ शावि-
९ कणय २० कंपन २१ कर्त्तरी २२ तरवारि २३ कुहाल २४ दुरकोट २५
२६ प्रलय २७ काल २८ नाराच २९ पाश ३० फल ३१ यंत्र ३२ द्रम
दंड ३४ लगड ३५ कटारी ३६ वहि। इस्यां हथीआर झलहलइं, कायर
लइं। रथ जूहंता दूरापाती लघुसंधानी शब्दवेधी धनुर्धर धाया, बाण मेल्हते
आकाश छाया। एकि घोडे चडइं, एकि ऊनावला पडइं; कायर रडइं, सुभट
भिडइं, योध जुडइं। घोटा मुह मूकी धाइं, भूटे पगि ऊजाइं; हस्तीतणा सुंडादंड
भूटइं, एकिना शिर फूटइं। इसिइ युद्धि प्रवर्त्तिइ हुंतइ राजा पृथ्वीचंद्रतणुं
दल वयरीए एकवार भागुं, नासिवा लागुं। समरकेत हुउ सानंद, पृथ्वीचंद्र
हुउ निरानंद; चींतवइ ए किसी वात, माहरा दलरहइं वाइं हुउ उपघात।
राजा चींतवतइ हुंतइ वीर एक आकाशमार्गि आविउ, तीणइं कउतिग मींपजा-
विउ। तीणं दीठइ वयरीना हाथतु हथियार पडियां, पृथ्वीचंद्रना पडवडइं
चढियां। राजासमरकेतु बांधी पृथ्वीचंद्रतणे पगतली आणिउ, पुण ते वीर
नियारपुठिइं कुणहीं न जाणिउ। तत्काल जयजयारव ऊछलिउ, राजापृथ्वी-
चंद्रतणउ वीरपणुं मिलिउ।

इति श्रीअचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुंदरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचंद्रचरित्रे
द्वितीयोल्लासः।

तृतीयोल्लासः

जइ मान मोडिउ, तउ समरकेतु बंधहुंतउ छोडिउ, पिहरायां बोलावीउ।
तुं मनि गर्व आणे, माहरी वात न जाणे। विचारइ सूर्य पूर्व छांडी पश्चिम उदय
मांडइ, समुद्र मर्यादा छांडइ; मेरु हलइ, आकाशतउ नक्षत्रराशि गलइं, पाषाणा-
दि धर्म्म पलइ, पाणीमांहि अग्नि प्रजलइ भूमडल थलभलइं, कूलाचलथल
चलइ; अमृतहुंतउ विष थाइ, पृथ्वी रसातलि जाइ; कृपणि दान दीजइ, पुणि
मुझकलइ प्राणि शरणागत चोरइ किम लीजइ। विचारइं जे आविउ एह
शरणि, ते लागु राजातणे चरणि, स्यामो तु धन्य जीणि नइ हु उजाडिउ,
नहींतु तलारे हुंतु माडिउ; पहलउ संसारि दोयल मनुष्यजन्मतणो सारि।
[illegible] हु किसिउ, जेहनुं मन इसिउ। विचारि ते बीजा लागु। अम

देशि श्रीपुरिनगर, तिहां श्रेष्ठि लक्ष्मीधर, श्रीलक्ष्मीइं सधर । तेहतणु पुत्र हुं श्रीपति, पणि विषम दैवगति; दसकोडि द्रव्य हूंती, पणि वापुजीसाथि पहुती। पिता परोक्ष हूआ पूठिइं जं वाहणमाहि घातिउं, तं समुद्र सातिउं; कांई वाणउत्रे ग्रसिउं,हाट चोरे मुसिउं; थलवटनउ थलवटइ रहिउं, कांई ठाकुरे ग्रहिउं; घर वलिउं, समग्र मंडाण टलिउं; समग्र द्रव्य निस्तरिउं, एकलक्ष द्रव्य ऊगरिउ। पछइ अवर काजकाम छांडिउं, प्रवहण पूरिवा मांडिउं । भलइ दिवसि प्रवहण पूरिउ, त्रिन्नि सइं साठि क्रियाणां चडाव्या, सप्तविध पकवान चडाव्यां; सप्तविध करंबा लिया,पोतां सपाणी भरिया, देवसमुद्र वायस पूजाव्या। पाभिल मादल वाजिवा लागां, वावरि कोलणि नाचेवा लागी, गलेला हेलाहेल करवा लागा; कूडपंभउ ऊभउ कीधउ, नागरउ पाडिउ, सिद्ध ताडिउ; धामणीउ धामतउ लीचइवा लागु, वाऊरीऊ तलि पइठउ, नीजामउ नालि वइठउ। आउला पडइं, सूकाणी सूकाण चालवइं, मालिम वाहण जालवइं; सुरवर लहलहा, वादित्रनादि समुद्र गाजी रह्या। हिव आगलि जातां हूंता चिली वाय वायां, आकाशि हूई मेघछाया; ऊडिउ पवन प्रबल, समुद्र हूउ उच्छृंखल; कल्लोल आकाशि ऊपडइं, वीहतां लोकरहइं डींवा चडइ; वेला लामी, वस्तु वामी; एक हा दैव करइ, एक देवध्यान धरइं । वाहणि पर्वत आफली भागउं, श्रीपतिइं हाथि पाटीउ लागउं। तेहनइ आधारि तरतउ तरतउ त्रिहु दिवसि पारि आविउ, वनमाहि सरोवरि जल पीउ, फलभक्षण नीपजाविउ । आगलि जाता दीठउ योगी एक, मइ साचविउ नमस्कारतणउ विवेक। जोगी कहिउं तूरहिइं एक देसु, बीजउ लेइसु। मइं कहिउं दिइ,पछइ मुज निर्डनकन्हइं जं देपइ तं लहिइं। जोगी बंधछोडणी विद्या देइ मस्तकि मागिउं । मइं चींतवइउं, वली पूर्वभवपातक जागिउं । जोगी धायु पूठि, मइ नासिया बांधी मूठि । नासतु इंणि नगरि आयी रात्रिइं गढतणइ पालि पयसी रहिउ, तलारके ग्रहिउ; तइ राषिउ, मोटउ उपगार दापिउ।

छामिइंवेरउ आफरु दासिइंवेरु नेह ।
कंवलकेरु मोलीउं पिसन न लागइ पेय ॥

माहरी लक्ष्मी इहमरीपी हूई, तउ कहीइ। आभानणी छांह, कुपरिसनणी वाह; आडनउ तूर, नदीनूं पूर; ठाकुरनउ प्रसाद, माकडनउ विषाद; वहीनउ पहीगणउं, गृपहानउ उठीगणउं; दीवानु तेज, माग्रेईनु हेज; दासीनु स्नेह, दार-

कालनु मेह; थोडा मेलनउ स्नेह, पहिलु आवइ छेह। लक्ष्मीतणउं त न्याय
जीवनउ, हिव वैराग्य ऊपनउ; तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदासिव।

हिव समरसेनु राजा ते वार्त्ता सांभली मनि वैराग्य पामिउं, राजा पृथ्वीचं-
द्रनिइं शिक्ष मामिउ। अनइ इसी वात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही। तूरहिइ
कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ। ताहरुं अद्भुत भाग्य, मुझ-
नइ ऊपनु वैराग्य। विमासी जोयुं तउ असार, संसार। जिशिउं पीपलनुं पान,
जिशिउं गजेंद्रनु कान; जिशिउ संध्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ
सांकडनु वैराग; जिशिउ वांजनु छायडु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणी-
नउ टयवडु; जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, तिसिउ सं-
सार चंचल। तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगीकरी। हउं तापसी दीक्षा
लेसु, तप करिसु, संसार तरिसु। पृथ्वीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं तुम्हे
कहयउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म। सांभलउ घन ते वर्णवीइ जे वृक्षवंत,
नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे
समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, वाट ते जे यूथवंत,
हाट ते जे वस्तुवंत. घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे वचनवंत, मठ ते जे
मुनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत. देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, वचन
ते जे सत्यवंत. शिष्य ते जे विनयवंत. मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे
तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत. प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे चाप-
वंत, राय ते जे न्यायवंत. व्यवहारीया ते जे सत्यवंत, धर्मी ते जे दयावंत।
अहो महाभागउ. हीयानें लोचनें जागउ। जेतलें अंतर राणी अनइ दासि,
जेतलें अंतर दहीं नइ छासि. जेतलें अंतर मधुरध्वनि नइ धासि; जेतलें
अंतर समुद्र नइ कूया. जेतलें अंतर सोनईया नइ रूपा. जेतलें अंतर बाप
नइ फूया; जेतलें अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतलें अंतर रूपा नइ कथीर
जेतलें अंतर सुवर्ण नइ माटी. जेतलें अंतर घाट भांति नइ घाटी; जेत
लें अंतर पटउला नइ छाटी; जेतलें अंतर पडसूत्र नइ सूतली, जेतलें अंतर जे
घना माणस नइ पूतली. जेतलें अंतर खड्ग नइ छुरी, जेतलें अंतर तंदूल
पुरी; जेतलें अंतर सूर्य नइ तारा. जेतलें अंतर साकर नइ पारा; जे
अंतर सींह नइ सीआल, जेतलें अंतर प्रभात नइ वीआल; जेतलें अंतर
नइ राग. जेतलें अंतर सींवलि नइ साग. जेतलें अंतर अलसला नइ

तेतलूं अंतर हंस नइ काग; जेतलइ लूण नइ कपूर, जेतलइ पजूया नइ सूर
तेतलइ डाकिली नइ तूर, जेतलइ खाल नइ गंगापूर; जेतलइ साधु नइ चोर
तलइ हार नइ दोर; जेतलइ गजेंद्र नइ ससा, जेतलइ गुरुड नइ मसा; जेत
इ कोडि नइ सवा विशा, जेतलइ काविला घाट नइ गोहीस; जेतलइ मोट
क्ष नइ रोहीस, जेतलइ व्यवसाय नइ कुठाकुर सेव; तेतलूं अंतर अपरदेव
नइ श्रीसर्वज्ञदेव।

एह कारणि इसउ मनि निश्चियु आणिवउ। जिम श्री सूर्यपापइ दिव
ही, पुण्यपापइ सौख्य नहीं, पुत्रपापइ कुल नही, गुरूपदेशपापइ विद्या नही
दयशुद्धिपापइ धर्म नही, भोजनपापिइ त्रिपति नही, साहसपापइ सिद्धि
ही, कुलस्त्रीपापइ घर नही, वृष्टिपापइ सुभिक्ष नही, तिम श्रीवीतरागपाप
गति नही। अनइ जिहां हिंसा, तिहां नही धर्मतणी प्रशंसा। जेह कारणि
सिउं कहिइं। जिम विलंब विणसइ काज, कुठकुरि विणसइ राज, मार्जा
प्रचारि विणसइ छाज, अणबोलिइं विणसइ व्याज; पडपि विणसइ दान,
संगति विणसइ संतान, स्वरपापइ विणसइ गान, लूइं विणसइ मइपान,
गाधिइं विणसइ थान, कुमरणि विणसइ अवसान; कुपंडित विणसइ छात्र,
यणि विणसइ गात्र; पीपलि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणसइ साद; आक
धि विणसइ नेत्र, तीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र; चीभडी विणसइ कणकनु थाक,
पइप्रयोगि विणसइ रसवर्मानगउ पाक; वरमालइ विणसइ शस्त्र, पगरी
णसइ वस्त्र; जिम कुव्यसनि विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसा विणसइ
र्म। राजा पृथ्वीचंद्र समरकेतु श्रीपतिप्रतिइ कहिइ छइ। सांभलु परमार्थ
य, टालिउ मिथ्यात्वतणी टेव; आदरु दयाधर्म नइ श्रीअरिहंत देव,
रउ सद्गुरनी सेव; जिम टलइ पापकर्मतणा लेव।

ए वार्त्ता सांभली तीह विहुंरहिइं मिथ्यात्वतणी भ्रांति टली, जैनदीक्षा
वा हुई मनि रली। तेतलइ भाग्ययोगि दैवसंयोगिइं चारण श्रमणमाहात्मा
क तिहां आविउ, तेहे सविहु तेहरलइं प्रणाम नीपजाविउ। पगि लागी, दीक्षा
गी; तीणि दीधी, वांछितवार्त्ता सीधी। निवारणठिइं तेहे प्रापीश्वरे राजा
रुलावी विहारक्रम कीधु, नरेश्वरि आवउ पीयाणउ दीधउ। पहिलुं पछुनु पत्र
रि, लोक हर्ष पमाडिया भलीपरि। तिहां परमहंस प्रधान स्थाविउ, कर्णयारनु
ार आविउ। हिव राजा पृथ्वीचंद्र तेह नगरहुंता साते पीयाणे अयोध्या नगरी

हुआ, स्वयंवरि आव्या दीठा राय सवे गहगहता। राजा सोमदेवि साम्हइं आवी महोत्सवि घरी माहि लिया, भला उतारा दिया। तेतलइं सूत्रहारे स्वयंवरमंडप नीपायु, पोयणिने पाने छायु। कर्पूर कस्तूरी महमहइं, ऊपरि धज लहलहइं; चंद्रुआतणी विचित्राइ, पूतलीतणी काविलाई; थंभकुंभीतणा मनोहर पाट, पटह भाट; रत्नमई तोरण नइ मोतीसरि, अलंकरिउ कुसुमतणे प्रकरि; वादित्र वाजइं, मांगलियगीत छाजइं; आरीसा झलकइं, चालतां बांना नेउर पलकइं। इसिइ मंडपि रायपोग्य मांड्यां नामांकित सिंहासण, मागणहारनइं पगि पगि दीजइ वासण। तु राजासोमदेवदूत सांचरिया, ऊतारे फिरिया; राय स्वयिहुं योग्य आकारण नीपजाव्या; मोटे आडंबरि समग्र नरेश्वर मंडपमाहि आव्या। जिस्या देवलोकसंबंधीया हुइं देव, तिस्या दीसइं सवि नरेश्वर सिंहासणि बइठा देव। तिसिइ अवसरि राजा पृथ्वीचंद्र, जिसिउ साक्षात् हुइ इंद्र। इसिउ आवी स्वयंवरि सभामाहि बइठउ, सविहुं रायतणे मनि इसिउ शंकाभाव पइठउ। जं एउ सही कन्या वरिसिइ, अम्हारउं आविवउं किसिइ करिसिइ। राजातणइ मस्तकि छत्र, अनइ चमर ढलइं पवित्र। राजा पृथ्वीचंद्र देवी सकललोक इसिउ विमासइं। जिम अक्षरमाहि ओंकार, मंत्रमाहि हींकार, गंधर्वमाहि तुंबरु; वृक्षमाहि सुरतरु, सुगंधवस्तुमाहि कपूर, यन्त्रमाहि पाटणनउं चीर, वीरमाहि शूद्रकवीर, गढमांहि कालिंजर, पाणिमाहि वज्रागरु; द्वीपमाहि जंबूद्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप; पर्वतमाहि मेरु, भूधर, जीवनहेतुमाहि जलधर; जिम हस्तीमाहि ऐरावण, मंडलेश्वरमाहि रावण; तुरंगममाहि उच्चःश्रवा तुरंग, हरिणमाहि कस्तूरीउ कुरंग; धवलमाहि वृषभ, प्रशस्यदिशिमाहि उत्तरकुरुभः अचलमाहि ध्रुमंडल, क्षमावंतमाहि भूमंडल; जिम नागमाहि शेषनाग, रागमाहि श्रीराग; जिम ध्यानमाहि शुक्ल ध्यान, दानमाहि अभयदान; मंत्रीश्वरमाहि अभयकुमार प्रधान, पानमाहि नागरवेलउ पान; ज्ञानमाहि केवलज्ञान, विमानमाहि सर्वार्थसिद्धि विमान; गरुआमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन, दर्शनमाहि जैनदर्शन; जिम देवमाहि इंद्र, ग्रहगणिमाहि चंद्र; तिसिउ सविहुं रायमाहि दीसइ पृथ्वीचंद्र नरेंद्र।

तिवारपछिइं राजा सोमदेवि प्रतीहारपाहि कन्यारहइं तेडउ दिवराविउ, तउ सधव स्त्रीए धवलमंगलपूर्व कन्याहुइं मांगलिक स्नान कराविउं। अंगरुक्षण अनंतर कन्या सदृश श्वेत कपड पहिरियां, आभरणे अंग उपांग अलं-

करिया। किरयां किरयां ते आभरण। हार अर्द्धहार त्रिसर प्रालंब प्रलंब कटीसूत्र कांची कलाप रसना किरीट मुकुट पट्ट शेखर चूडामणि मुद्रिका नक्क दशमुद्रिका केयूर कटक कंकण ग्रैवेयक अंगुलीयक अंगुल्यल हेमजाल मणिजाल रत्नजाल गोपुच्छक उरस्त्रिक चित्रक तिलक कुंडल अग्रमेलक कर्णपीठ हस्तसंकली नूपुरप्रमुख आभरण जाणिवां। ईहमाहि स्त्री योग्याभरणि कन्या हुई अलंकृतगात्र, हुई रूपतणउ पात्र, मस्तकि धरियां मौक्तिकतणां छात्र। कन्यातणइ सिरि सिंदूरि भरिउ माग, मुखि तांबूलराग; आविउं नरविमान, तोणि चढी ते चाली देवांगनासमान। आगलि हुइ वादित्रध्वनि अनइ गीत गान। ईणिइं परिइं सकललोकहुइं आश्चर्य करती, हाथि वरमाला धरती; महोत्सवसहित कुमरि, पहुती मंडपतणइ द्वारि। ते देषी नरेश्वर सवे मकरध्वजइ मनाविया हारि, चींतवइ ए रंभा कि तिलोत्तमातणइ अवतारि। तेहतणा पाणिग्रहणतणी वांछा धरइं, विविध चेष्टा करइं। एकि राय आपणा हीयानउ हार हलावइं, एकि बांहतणा बहिरषा चलावइं; एकि रत्नमय दंडा ऊलालइं, एकि छुरी ऊछालइं; एकि मित्रसिउं वार्त्तालाप मांडइं, एकि दृष्टिरहइं विनोद ऊपजावइं, क्षणु एक पांडइं, एकि संभालइं कानि कुंडल, ईणिपरि विविध चेष्टा करइं राजमंडल। तिसि समइ जि जोइवा आव्या आकाश देव अनइ दानव, पृथ्वीपीठि संख्या नही मानव; मिलिया सिद्ध अनइ किंनर, संख्या नहीं विद्याधर। हिव कन्या आभरणितेजि उल्लसती, रंभारहइं हसती; स्वयंवरमंडपमाहि आवी, तु यशोधरा इसिइं नामिइं प्रतीहारीइं बोलावी। अहे कुमरि, अद्भुत गुण ताहरा संसारि, जेहे आकर्षिया हुंता आसमुद्रांतपृथ्वीतणा राय मिलिया, इसिउं जाणिउं जेहरइं तुं वरसि तेहना मनोवांछित पासा ढलिया, मनोरथ फलिया।

हिव जोइ तुझ आगलि दसलक्षमगधदेसतणउ नरेश्वर, सहिजिइं अलघेश्वर; राजगृहनगरतणउ राजा मकरध्वज इसिइ नामि दीसइ। जेह राजातणइं कृपाणि राज्यलक्ष्मी वसइ, मुखि सरस्वती उल्लसइ; तूठउ दारिद्र्य हरइ, दीठउ आनंद करइ; रणांगणि गयवरतणी गुडि गांजइ, शत्रुभट भांजइ; इसु भूपाल, एहतणइ कंठि घाति वरमाल। अथवा ए जोइ वाणारसीतणउ राउ, भांजइ वयरीतणउ भडिवाउ; ए सरागदृष्टि अवलोकी, जेहतणउ प्रताप प्रसिद्धउ त्रिहुं लोकि; जेहतणइ गजदलि चालतइ हुंतइ इंद्रहुंइ सपक्षपर्वततणी

शंका नीपजइ । जेहतणइ तरलतुरंगमि प्रसरइ हुंतइ वइरीरहतइ प्रलयकालोद्भ-
तसमुद्रकल्लोलतणी शंका नीपजइ । इसिउ प्रचंडबल, अखंडभुजबल; अकल,
सकल; कर्मचंद्रनामा नरेश्वर घरि, माहुं कहिउं करि । अथवा विदर्भदेस कुं-
डिनपुरनगरीतणउ नरपति निहालि, जे विषमकालि; वहइ कर्णदानेश्वरतणउ
भवतार, धनुर्धरपणइं हरइ अर्जुनतणउ कीर्तिप्राग्भार; जेहतणइ अतुल भंडार,
प्रबलकोठार, शूरातणउ नही पार; करइ शत्रुसंहार, करइ भट्ट कइयार; म-
हावार, महाउदार, कंठि परमाल घाती ए मकरध्वज राजा अंगीकरि भर्त्तार ।
तथा गौडदेस हंसपुरपाटणनु स्वामी सिंहरथ राजा जोइ, जीणि दीठइ
आणंद होइ । जेह राजासंबंधीयइ कुंदमचकुंदकुमुदकेतकीकर्पूरधवलि कीर्त्ति मं-
डलि प्रसरतइ हुंतइं नवी सृष्टि स्थापी, तं अंजनाचलपर्वतरहइ कैलासपर्वततणी
पदवी आपी; यमुनातणइ स्थानकि कीधउ गंगाप्रवाहु, मित्र कीधा चंद्र नइ राहु;
सरीषा कीधा हार नइ नाग, अंतर टालिउं बग नइ काग; ईश्वरहुइं नीलकंठपणउं
टालिउं, विष्णुहुइं कृष्णपणउं पाडालिउं; बलदेव बांधवपणउं उजुआलिउं ।
इणिपरि जीणि ब्रह्मातणी सृष्टि केरी, तेहनी किसी बात बपाणीयइ अनेरी ।
इसिउ अलवेश्वर, सिंहरथ नरेश्वर, करि तुं आपणउ जीवितेश्वर । इणिपरि
तीणइं प्रतीहारीयइं राजा हरिकेतु सिंहकेतु मकरकेतु धूमकेतु पद्मरथ वीर्यबाहु
सुवर्णबाहु शंखध्वज पद्मदेव पद्मानंद क्षेमंकर पृथ्वीधर सुबाहु रत्नांगद हेमां-
गद हेमरथ मणिरथ मणिशेखर रत्नशेखर चंद्रसोम सोमप्रभ सूरप्रभप्रमुख
नरेश्वर वर्णव्या बपाण्या, पणि रत्नमंजरी कुंअरि मनइमाहि ना आण्या ।

हिव आगलि दीठउ राजा पृथ्वीचंद्र, निहालिउ तेहतणउ सुपचंद्र,
उलटिउ आनंदसागर, मनि चींतवइ एउ सही गुणतणउ आगर । तिवारइं
प्रतीहारीयइं कहिउं हे कुमरि सांभलि, पुरा पूर्वइं सगर चक्रवर्ति हुउ वि-
ख्यात वसुधातलि । जेह सगरचक्रवर्त्तितणइ चउरासी लाख हस्ती, जीहतणि
गति महाप्रशस्ती; चउरासी लाख तुरंग, उछलता जिस्या हुइं कुरंग, चउरासी
लाख रथ सहिजिइं सुरंग; चउरासी लाख नींसाण वाजइं, वयरीना भडवाउ
भाजइ; अत्यंत अभिराम, छन्नू कोडि ग्राम; ग्राम घोडउं पाडतां छन्नू कोडि
साहण मिलइं, छन्नू कोडि पायक कलकलइं; चऊद सहस्र संवाध, चऊद सहस्र
अमात्य अत्यंत साधु; जेहनइ चऊदरत्न, देवता करइ यत्न; नवनिधान, बहुत्तरि
सहस्र नगर प्रधान; [illegible] दाटण, अडतालीस सहस्र पाटण; जेहे वस

अनेक कुटंब, इस्या चउवीस सहस्र मटंब; जीहना वर्णननणी कीजइ जेट, इस्या सोलसहस्र पेट; जेह चक्रवर्तिनणइ सवाकोडि व्यापारी, रिद्धि अत्यंत सारी; चरणि रुणझुणइ नेउर, इस्या चउसट्ठि सहस्र अंतेउर; विहितोल्लास, अट्ठावीस-उ लाप पिंडविलास; बत्तीससहस्र राय, प्रभानि प्रणमइं पाय; प्रत्यक्ष, पंचवी-ससहस्र यक्ष; वीससहस्र सोनारूपानणा आगर, नवकोडि ध्वजाधर, छत्रीस लाप दीवटीया उदार, त्रिन्निसइं साठि सूआर। एवंविध प्रचंडभुजदंड, साधित भरतक्षेत्रपट्टखंड; निरुपमस्फूर्त्ति, अद्भुतमूर्त्ति, इसिउ हुउ सगरचक्रवर्त्ति। हिव भगीरथ राजा हुउ सगरतणउ पुत्र, जीणइं गंगा समुद्रि घालि रापिउ आप-णउं चरित्र। तीणइं राज्य पालिउ अनेक कोडिवरस, तेहनइ पुत्र हुआ दस। तेहमाहिइ एकरहइं कुंतल इसिउं नाम, तेह कुंतलरहइं दीधउं मरहठदेसि ठाम। तेह कुंतलतणइ वंसि जयवंत जयध्वज देवचंद्र देवानीकप्रमुख राय हुआ, तेहना प्रबंध कुणइ वर्णवाइं जूजुया। देवानीकतणउ पुत्र हुउ राजा पृथ्वीचं-पर। जीणि पुहिठाणपुर पाटण थापिउं, स्वर्गतणउ दर्शन प्रत्यक्ष आपिउ। हिव मधुरवाणि, तेहतणउ राजा पृथ्वीचंद्र जाणि। एउ नरेश्वर, ऐश्वर्यगुणि सा-क्षात् सुरेश्वर, धैर्यगुणि मेरु महीधरु, दानिगुणि नवीन जलधर, गांभीर्यगुणि क्षीरसागर; निर्मलपणइं गंगाजल, सौम्यपणइं शशिमंडल; रूपिगुणि अश्वि-नीकुमार, परकलत्रपरिहरणगुणि गांगेयतणउ अवतार; विवेकगुणि राजहंस, चातुर्यगुणि बृहस्पतितणीपरि लब्धप्रशंस; पृथ्वीभारवहणि शेषनाग, एहऊपरि धरि तु अनुराग, इहां छइं ताहरउ लाग। घणउं किसिउं कहीई। एह राजा विक्रमाक्रांतक्षोणीमंडल, शौर्यश्रीवदनारविंदप्रद्योतन, सकलमहीपाललीला-ललितशासन, पालितश्रीजिनशासन, तुज वरिवा योग्य छइ। ते रत्नमंजरी कुमारि प्रतीहारितणां इस्यां वचन सांभली अंगि रोमांच धरती, नेउरतणा झमझमकार करती; हर्षभर वहती, राजाढूकडी पुहती। लाज ठेली, कंठकंदलि वरमाल मेल्ही; तत्काल जयजयारव ऊछलिया, लोक कलकल्या; विद्याधर पुष्पवृष्टि करइं, भट्ट जयजयशब्द उचरइं; गंधर्व गीत गाइं, वादित्रीया वादित्र वाइं; वापरइ धवलमंगल, हुइं महामहोत्सव विपुल।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे तृतीय उल्लासः।

चतुर्थ उल्लासः

हिव निमिइ अवसरि तेह राजालोकमाहि जे धूमकेतु राजा कहिउ तेह-
रहइं धूमकेतुदेवतणउ मंत्र स्फुरइ, तीणइं जं चींतवइ तं करइ। धूमकेतुदेव
अठ्यासीग्रहमाहिलउ जांणिवउ। कवण कवण। अंगारक १ विकालिक २
लोहितांक ३ शनैश्चर ४ आधुनिक ५ प्राधुनिक ६ कण ७ कणकणक ८ कणक ९
वितानक १० कणसंतानक ११ सोम १२ सहित १३ अश्वासन १४ हत १५
कार्योपग १६ कर्बुरक १७ अजकरक १८ दुंदुभक १९ शंख २० शंखनाभ २१
शंखवर्णाभ २२ कंस २३ कंसनाभ २४ कंसवर्णाभ २५ नील २६ नीलाव-
भास २७ रूप्य २८ रूप्यावभास २९ भस्मक ३० भस्मराशि ३१ तिल ३२
तिलपुष्पवर्ण ३३ दक ३४ दकवर्ण ३५ काय ३६ वंध्य ३७ इंद्राग्नि ३८ धूम-
केतु ३९ हरि ४० पिंगल ४१ बुध ४२ शुक्र ४३ बृहस्पति ४४ राहु ४५
अगस्ति ४६ माणव ४७ कामस्पर्श ४८ धुर ४९ प्रमुख ५० विकट ५१ विसं-
धिकल्प ५२ प्रकल्प ५३ जटाल ५४ अरुण ५५ अग्नि ५६ काल ५७ महा-
काल ५८ स्वस्तिक ५९ मांवस्तिक ६० वर्द्धमान ६१ प्रलंब ६२ नित्यालोक
६३ नित्योद्योत ६४ स्वयंप्रभु ६५ अवभास ६६ श्रेयस्कर ६७ क्षेमंकर ६८
आरंभकर ६९ प्रभंकर ७० अरजा ७१ विरजा ७२ अशोक ७३ वीतशोक
७४ विनस ७५ विवस्त्र ७६ विशाल ७७ शाल ७८ सुव्रत ७९ अनिवृत्ति ८०
एकजटी ८१ द्विजटी ८२ कर ८३ करिक ८४ राजा ८५ अर्गल ८६ पुष्प ८७
भावकेतु ८८। इह अठ्यासीग्रहमाहि धूमकेतु जांणिवउ।

जिवारइ पूर्णचंद्रराजातणइ कंठि वरमाला पडी, तेतलइ धूमकेतुराजा-
हुइं रीस चढी। रोसि हुउ विकराल, धूमकेतुदेवतातणउ मंत्र स्मरीनइ ऊछालिउं
करवाल। ते खड्ग फीटी हुउ वेताल, जे उंचउ नयनाल; कंठाविलंबितकंड-
माल, करतलि कपाल; बुभुक्षाभिभूत, जिमिउ यमदूत; कान टापरा, पग छापरा;
आंखि ऊंडी, पेटि कूंडी; आंखि रातीं, हाथि कातीं; विकराल वेश, मोकला केश;
हडहडाटि हसइ, धरामंडलि धसइ; मस्तकि अंगीठउ बलइ, भैरवा जिम
कलकलइ। इसिउं रुद्र रूप, केतलुं वपाणीयइ तेहनुं स्वरूप। इसिउ वेताल
देषी सहू भयभ्रांत हुउ। तेतलइं धूमकेतुराजा ऊठी कन्या उपाडी रथि घातिव
लागउ। तेतलइं राय राणा धसमसिवा लागा। तेतलइं तेह जि वेतालहूंतउ अं

पूजतां पडई, कायर रडई। इम पूजि विछूटी, पछइ सभाविचालि पृथ्वी फूटी। विवर नीपनुं। तेह ज माहि तेज प्रगट हुउं। जोतां हुतां तेह विवरमाहि दिव्यरूपधारिणी सिंहासणि बइठी स्त्री एकि दीसिवा लागी। तेह स्त्रीनणइ उत्संगि शोभमान तेजभारि, दीठी रत्नमंजरी कुमारि। सहू आश्चर्यपूरित हुउं। तीणें ओहं विहूं हाथि कुंअरि ऊपाडी बाहिरि मेल्ही, आपणपइं माहि गई, पृथ्वी वली निसोइ जि हुई। असमाधि फेटी, राजा कुंअरि आवी तेडी।

निवार लोकनणा मेला, वान पूछिवानणी नहीं वेला। दिव हर्षिइ लोक कलकलिया, विद्योपनु उच्छव ऊकलिया। राजा कुमारि अनइ पृथ्वीचंद्र सहित आवासि पहुता। राय ऊतारें हुया। भोजन मंडपऊपरि धज लहलहिया, विवाहमहोत्सव गहगहिया। हुई धवलगान, नीपनां पकवान; वेलवीयइं वान, स्वजनहुइं बहुमान; वापराइं पान, जिमाडीयइं जान। कामकाजना वणी पलवटि बांधी हींडइ आकुला, मेलइं चाउरी चाकुला। मेलइं आहणी, दिव भोजननणी मांडणी। बइठी पांति, जिमणहार परीरवहार विहूरहुइं पांति। पहिलउं परीरवा फलावली खंडखाद्य पकवान, पछइ परीरवा उष्ण अन्न। तां विद्यालयालि, परीरवी जालिदालि; पूलनणी नालि, वापलि शाकनणी पालि; ऊपरि पूर पूरंबा दहीं वापराइं, ईणिपरि लोक भोजन करइं। आचमनअनंतर दीधां कपूरमिश्र बीडां, लक्ष्मीपंतनणे गर्व परु संपजइ बीडां। दिव वेलाऊपरि राजापृथ्वीचंद्रहुइं करावियउं मंगलस्नान, विवाहयोग्य परिधिवां वस्त्र प्रधान। सर्वांग शृंगार धरिउ, जाणे इंद्र अवतरिउ। गरुड गजेंद्र आविउ, उत्तिम स्त्री पधाविउ। गजेंद्रहुंतउं उतरी दायइ पगि सिरावसंपुट चांपनउं माहि पहुतु। आचारविचार हुआ, चउरीसमाहि च्यारि मांगलिक वर्ण, हाथमेलावणइं दान प्रवर्त्यां। राजारांमदेवि वहुइं गजरथ तुरंगमदान दीधइं, राजापृथ्वीचंद्रि महोत्सवसहित रत्नमंजरीनणउं पाणिग्रहण कीधउं। पछइ दिनोदयंत उत्सवसंयुक्त उत्साहनणी चालिउ, सकलसंघ ओहला मिलिउ। एकि वधाणइ पृथ्वीचंद्र भूप, एकि वधाणइ रत्नमंजरीनणउं रूप; एकि वधाणइ भाग्य, एकि वधाणइ सौभाग्य; एकि वधाणइ दारीनणा शृंगार, एकि वधाणइ परिवार; एकि वधाणइ उज्जवलां कुल, एकि वधाणइ दिहूंवलां शील निर्मल, एकि वधाणइ लावण्य, एकि वधाणइ पुण्य। इसांपरि वधावंतु वधावंतु आविउ, विश्वहुइं आनंद उपजाविउ। राजारांमदेवि सहिहूं वापहूं आवइंब

कीधी। कुण हुइं घोडउं, कुण हुइं हाथिउ; कुण हुइं आभरण, कुण हुइं पटकूल। ईणिपरि भक्ति कीधी। राय सवे आपणे आपणे नगरि पहुता। राजापृथ्वीचंद्रहुइं सोमदेवनरेश्वरतणइ आवासि नितु नवनवे गौरवि शिवमय सुखमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजापृथ्वीचंद्र अनइ राजासोमदेव राजसभां एकत्र मिलता। किसी ते राजसभा। जीणि सभा पात्र नाचइं, विप्रांस वहता पुस्तक वांचइं; माल मद्दलिया मांदिया माचइं, रागश रायहुइं रंग राखाविया राचइं; सुरतोला शुभ बोली स्वामीकन्ने पसाउ याचइं, कूडा लागहू चिरकाल विवाद कीधा स्वयमेव पाचइ। इसी सभा, बिहुं नरेश्वरि करि वली बाधी सभा। तिसिइ अवसरि हर्षप्रसरि पहुतउ वनपाल, तीणि वीनविउ श्रीसोमदेव नृपाल। स्वामिन् आपणइ उद्यानवनि श्रीधर्मनाथ तीर्थंकरदेव पाउ पारिया, तीणि परमेश्वरि त्रिभुवन आनंद वधारिया। हिव अवसरि आविउं, श्रीपर्वतनाथनाउं कहिवउं, चरित्र, महापवित्र। ईणि भरतक्षेत्रि प्रवरगुणि करी मनोहर, रत्नपुर नामिइं नगर। तिहां ऐश्वर्यनिर्जितसुरेश्वर भानुनामा नरेश्वर। तेह नगर पहुतउं, सुखना इसिइं नामिइं जाणी। अन्यदा प्रस्तावि तीणि राजा आवास आवासि, मनवणइ उल्लासि, पल्यंकि पडवा हुंती विपहुर रात्रिसमइं निद्रावशि वर्तमान इसाउ पडइ महास्वप्न दीठा। किसा ते महास्वप्ना। गज १ वृषभ २ सिंह ३ लक्ष्मी ४ पुष्पमाला ५ चंद्र ६ सूर्य ७ ध्वज ८ पूर्णकलश ९ सरोवर १० समुद्र ११ विमान १२ रत्नराशि १३ निर्धूम धिश्वानर १४। ईह चतुर्दशमहास्वप्नफलाइं [illegible] वर्णन [illegible]। राणी प्रथम दीठउ गजेंद्र। किसिउ गजेंद्र। चतुर्दंत विनयवंत सलांगप्रतिष्ठित, सप्तहस्तुणि प्रमाणित; विस्तीर्णकुंभस्थल विशालकर्णोपल उदग्रशुंडादंड, तेणि करी प्रचंड, महाबलि [illegible] प्रभुत्वगुण [illegible] पर्वतप्रमाण; [illegible] दीठउ इसउं ? । सर दीठउ वृषभ। किसिउ ते वृषभ। [illegible] विशालिन [illegible] [illegible] [illegible]

धवललोचन; जिसिउ चालतउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतस्युं लिइ वाद। इसिउ अत्यंत शुभ, दीठउ पभ २। तउ राणीयइ दीठउ सीहु। किसिउ ते सीह। रूप्यपिंडपांडुर, अद्भुतप्रभाडंबर, रक्तोत्पलसुकुमालताल, तालइ लागी आरक्त जिह्वा जिसिउं हुइ अशोकप्रवाल। विस्तीर्णकेशरसटाशोभितस्कंध, वज्रसारशरीरबंध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ, कमलदल रक्तोष्ठ, तीक्ष्णदाढाविडंबितवदन, पराक्रमतणउं सदन; पुच्छच्छटां पृथ्वी आस्फालतउ, पीतलोचनि भृकुटिकांति निहालतउ, मूषागतसुवर्णसमान फिरतां पिंजरनेत्र, शौर्यवृत्तितणउं क्षेत्र; अकल अगंजित, सबल अपराजित; अबीह, एवंविध दीठउ सीह ३। तु दीठी देवी लक्ष्मी। ते किसी। हिमवंतपर्वततणइ शिखरि, महाप्रखरि; पद्मद्रहमाहि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चंद्रसमानवदन, कमलसमानलोचन, निर्जितसूर्यमंडल, देदीप्यमानकुंडल; उदारप्रलंबितहार, अद्भुतशृंगार; दिग्गजेंद्रे अमृतकलसि करी अभिषिच्यमान, पगतलि चांपी रही नयनिधान; एवंविध सकलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी दीठी ४। तदनंतर अशोक चंपक नाग पुन्नाग प्रियंग पाडल सेवंती जाइ जूही बेउल बउल श्रीदमणा मरुआ मंदार मुचकुंद केतकीप्रमुखवनस्पतीतणे कुसुमि निष्पन्न भ्रमरभरमुज्यमानपरिमल एवं विध दीठउ मालायुग्म ५। तउ दीठउ चंद्रमा। ते किसीउ चंद्रमा। रात्रितणइ समयि उदयि करी, सकल ताप हरी; रोहिणीरमण यामिनीजीवितेश्वर अमृतमयमूर्त्ति उज्ज्वलधवल, प्रीणितचकोरकुल, एवंविध चंद्रमंडल ६। तउ दीठउ श्रीसूर्य। किसिउ ते सूर्य। प्रभाततणइ समइ जेह श्रीसूर्यतणइ उदइ प्रासादतणां द्वार ऊघडइं, देवहुइं पूजा चडइ; पंथ सवे चडइं, मुनीश्वर धर्मकथा कहइं, लोक वाटविशेष लहइं, मेघ मल्हार गाइइ। मांहि अनेक छत्रपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी कोमल विकसइं, चक्रवाक उल्लसइं; एवंविध प्रखरकिरणनिकर, दीठउ सहस्रकर ७। तउ दीठउ ध्वज। किसिउ ते ध्वज। कृताह्लाद, कोई एक गरुड प्रासाद; प्रखरि, मेहतणइ शिखरि; अखंड, सुवर्णमयदंड; तेजि करी अंकुश, कनकमय कलश; भली, रत्नमय पाटली; तिहां जिसी स्वर्गमउ ऊदाली, इसी फाली; निरुपम स्वरूप, निहां सौभतणउं रूप। इसिउ घंटारणि गहगहतउ वाद लहलहतु निर्मल नीरज, राणीइं ध्वज ८। तउ दीठउ पूर्णकलस। किसिउ ते पूर्णकलस। सुवर्णघटित रत्न- [illegible] कंठि पुष्पमाला व्यापित; माहि अमृतपूरित ५८-

कीधी। कुण हुइं घोडउं, कुण हुइं हाथिउ; कुण हुइं आभरण, कुण हुइं पटकूल। ईणिपरि भक्ति कीधी। राय सवे आपणे आपणे नगरि पहुता। राजापृथ्वीचंद्रहुइं सोमदेवनरेश्वरतणइ आवासि नितु नवनवे गौरवि शिवमय सुखमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजापृथ्वीचंद्र अनइ राजासोमदेव राजसभां एकठा बइठा। किसी ते राजसभा। जीणि सभा पात्र नाचइं, विद्वांस बइठा पुस्तक वांचइं; माल मल्लविद्या मांडिवा माचइं, रागज्ञ रायहुइं रंग रहाविवा राचइं; सुहावोला शुभ बोली स्वामीकन्हे पसाउ याचइं, कूडा झागडू चिरकाल विवाद करी स्वयमेव पाचइ। इंसी सभा, विहुं नरेश्वरि करि थली थाथी प्रभा। तिसिइ अवसरि हर्षप्रसरि पहुतउ धनपाल, तीणि वीनविउ श्रीसोमदेव भूपाल। स्वामिन् आपणइ उद्यानवनि श्रीधर्मनाथ तीर्थंकरदेव पाउ धारिया, जीणि परमेश्वरि त्रिभुवन आनंद वधारिया। हिव अवसरि आविउं, श्रीधर्मनाथनणउं कहिवउं, चरित्र, महापवित्र। ईणि भरतक्षेत्रि प्रवरगुणि करी मनोहर, रत्नपुर नामिइं नगर। तिहां ऐश्वर्यनिर्जितसुरेश्वर भानुनामा नरेश्वर। तेहतणइ पटराणी, सुव्रता इसिइं नामिइं जाणी। अन्यदा प्रस्तावि तीणि राणी आपणइ आवासि, मनतणइ उल्लासि, पल्यंकि पउढी हुंती विपहुर रात्रिसमइं निद्राभरि वर्त्तमान हुंतीइं चऊद महास्वप्न दीठां। किस्यां ते महास्वप्न। गज १ वृषभ २ सिंह ३ लक्ष्मी ४ पुष्पमाला ५ चंद्र ६ सूर्य ७ ध्वज ८ पूर्णकलस ९ सरोवर १० समुद्र ११ विमान १२ रत्नराशि १३ निर्धूम वैश्वानर १४। ईह चतुर्दशमहास्वप्नतणउं सांभलउं जूजूउं वर्णन व्यतिकर। राणी प्रथम दीठउ गजेंद्र। किसिउ गजेंद्र। चतुर्दंत, विनयवंत, सप्तांगप्रतिष्ठित, गजेंद्रगुणि अधिष्ठित; विशालकुंभस्थल, विलोलकर्णांचल; उद्दंडशुंडादंड, तेजि करी प्रचंड, मदजलधारित कपोलमूल, भ्रमरकुल अनुकूल; परित्यक्तसकलदोष, उत्पादितसकलजननयनसंतोष, प्रधान, ऐरावणगजसमान; महाकाय, पर्वतप्राय; भद्रजातीय, अहितीय; जेहतणी गति प्रशस्ती, एवंविध दीठउ हस्ती १। बीउ दीठउ वृषभ। किसिउ ते वृषभ। निर्जलधाराधरधवल, विकसित काशकुसुमसमुज्ज्वल, विशालककुद, चंद्रकिरणतणीपरि विशद; सूक्ष्मसुकुमालरोमराजिविराजमान, स्निग्धकांतिदेदीप्यमान; प्रभगटयामलशृंग, सुंदरसमस्तअंगोपांग; दृढ़ंत, पंक्तिशोभित प्रमुखप्रदेश, भारधरणसंनिवेश; प्रसन्नवदन,

[illegible]लोचन; जिसिउ थाटलउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतसुं लिइ याद। [illegible]उ अत्यंत शुभ, दीठउ पभ २। तउ राणीयइ दीठउ सोहु। जिसिउ [illegible]सोह। रूप्यपिंडपांडुर, अद्भुतप्रभाडंबर, रक्तोत्पलसुकुमालताल, लाहुइ [illegible]णी आरक्त जिह्वा जिसिउं हुइ अशोकप्रवाल। विस्तीर्णपेजारसटाशोभित-[illegible]कंध, वज्रसारशरीरबंध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ, कमलदल रक्तोष्ठ, तीक्ष्णदाढाविइं-[illegible]विलवदन, पराक्रमलणउं सदन; पुच्छलाटां पृथ्वी आक्रालउ, पीवलोचनि [illegible]भृकुटि निहालउ, सुवर्णसमान पिंगलां विजयनेत्र, दीर्घपूलि-[illegible]लणउं क्षेत्र; अचल अजीत, सचल अपराजित; अवीह, एवंविध दीठउ सीह ३। [illegible]तु दीठी देवी लक्ष्मी। ते किसी। हिमवंतपर्वतलणाइ शिखरि, महाप्रवृत्ति: पद्म-[illegible]ह्मादि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चंद्रसमानवदन, कमलसमान-[illegible]लोचन, निर्जितसूर्यमंडल, देदीप्यमानकुंडल; उदारमालिनाथ, अद्भुतशृंगार; [illegible]दिग्गजेंद्रे अमृतकलशि करी अभिषिच्यमान, पद्मलि बांधी करी अवनिपाल; [illegible]एवंविध सकलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी दीठी ४। तदनंतर शाहोद [illegible]संपक नाग पुन्नाग प्रियंगु पाटल सेवती जाइ जूई केतक बकुल श्रीपर्ण। [illegible]ल्ला मंदार सुवर्णकेतकीप्रमुखवनस्पतीनां कुसुमि निरंतर प्रसारभूत-[illegible]मानपरिमल एवं विध दीठउ आलाकुसुम ५। तउ दीठउ चंद्र-[illegible]मा। रात्रिलणाइ समयि उदयि करी, सकल तारा रात्रिनायक [illegible] [illegible]तेश्वर अमृतमयमूर्ति उज्ज्वलाकार, [illegible] एवंविध चंद्रमा ६। [illegible]तउ दीठउ श्रीसूर्य। जिसिउ ते सूर्य। प्रभातलणाइ समयि उदयि [illegible] [illegible]उदइ प्रासादलणां द्वार [illegible]। [illegible] [illegible]धर्मकथा [illegible]। [illegible] [illegible]दानपत्र [illegible] [illegible]उलसइं: एवंविध [illegible] [illegible] [illegible] ७। [illegible] [illegible]जिसिउ ते [illegible]। [illegible] [illegible]आलंद, सुवर्णमयदंड [illegible] [illegible]पाटली; [illegible] [illegible]हलवडं रूप। [illegible] [illegible]दीठउ [illegible] ८। [illegible] [illegible]

विराजमान, आम्रफलप्रधान; मांगलिक लक्ष्मीप्रदानतणइ विषइ अनलस, दीठउ पूर्णकलस ९। तउ दीठउं सरोवर, वृक्षतणउ परिकर; पालिउन विस्तर, देहरीनउ समहर, पाणीनउ आकर। चउकी चउपंडी झलहलइं, परइ वाइ लहरि ऊछलइं, ऊपर जाण भरीयइं, षड कूइ तरीयइ। अमृतोपम नीर, दीठइं ठरइ शरीर; सारस कुरल कपिंजल कलहंस कलगलइं, तापतणा व्याप टलइं; राजहंस रमइं, भ्रमर भमइं; चकोर चक्रवाक कूजइं, जलकेलिनां कोड पूजइं; मोर वासइं, सर्प नासइं; आडि पंखीया तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; आस्तिक लोक नित्य सारइं, कश्मल निवारइ; संध्याविधि साधइं, अघमर्षणमंत्र आराधइं; धोतीयां धोयइं, कमंडल ढोयइं। सिसिरगुणतणउ सहवास, जलदेवतातणउ निवास। देहरी दंडकलस आमलसारा झलकइ, जलहारिणीकुलवधूतणां नूपुर पलकइं; तडि कीर्त्तिस्तंभ दीसइ, हीयउं विहसइ। वग थलइ जाइइ, मेघ मल्हार गाइइ। माहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी सोमवंशी कमलवन विकाश पामइं, देवता जिहां क्रीडा कामइं। एवंविध उदार, वृत्ताकार; अत्यंतसार; महामनोहर; दीठउं पद्मवनखंडमंडित सरोवर १०। तउ दीठउ समुद्र। किसिउ ते समुद्र! अनंतजलु, अनंतकल्लोलकोटीसंकुल। माहि मत्स्य महामत्स्य नक्र चक्र पाठीन पीठ तिमिंगिलितणां कुल पडइ, एकि ऊपडइ। लहरि वाजइं, पाणी गाजइं; दक्षिणावर्त्तशंखतणां यूथ फिरइं, माहि अनेक प्रवहण सांचरइं। एकि पूरीइं, एकि नांगरीयइं, वाहण वाहणरहइं एकि मिलितां आफलइं। मोतीप्रवाला आगरथकां लीजइ, किहां एकइ मेघिइं पाणी पीजइं। इमिउ आश्चर्यतणउ निलय, पृथ्वीपीठहुइ वलय; गुहिर गंभीर, अनंतनीर; समुद्र, राणीयइ दीठउ समुद्र ११। तउ दीठउं विमान। किसिउं विमान! सुवर्णमयभित्ति, रत्नमयविच्छित्ति; प्रशस्यकलशि करी शोभमान, गगनलग्न धर्माहुइं कुंडलसमान; जेहमाहि अनेक देव देवी रमलि करइं, एकि श्रुति धरइं; एकि गीत गायइं, एकि वादित्र वाइं; हीयइं हर्ष न माइं। अनेकपुष्पतणा प्रकर, चंद्रआतणा निकर; मोतीतणी सरि लहकइं, कपूरकस्तूरीतणा परिमल महकइं; ध्वजा लहलहइं, मन गहगहइं। एवंविध विबुधवधूजनक्रीडास्थान, तेजःपटलि निर्जितभानुप्रधान, दीठउं विमान १२। तउ दीठउ रत्नराशि। किसिउ ते रत्नराशि। अनेक वज्र वैडूर्य चंद्रकांत जलकांत पुष्पराग पद्मराग मरकत कर्केतन चंद्रप्रभ सागरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अप-

राजित मंगोदक, अवारणाइ हंसगर्भ लोहिताक्षप्रमुखरत्नतणउ राशि विर-
चितविश्वप्रकाश देखइ राणी मनतणइ उल्लासि १३। तउ दीठउ निर्धूम धिश्वा-
नर। विस्तरिउ ते हिश्वानर। कांतिभरकमनीय, प्रदक्षिणावर्त्तज्वाला करीय रम-
णीय; अपुरुषमनवरिधिविद्यमान, कूर्मरहितदेवतामुखसमान; धूमरहित, तेज-
सहित; मांगल्यसमूह, विश्वानुकूल; प्रवर, एवंविध दीठउ हिश्वानर ४१।

ए चतुर्दश स्वप्न देखी राणी जागी, निद्रा भागी, मनि विमासिवा लागी।
मइं ज्यां ए चउद सुमिणां दीठां, ईहलणां फल हुसिइ अत्यंतमीठां। तउ स्वा-
मीकलइ जाइसु, निःसंदेह थाइसु। इसिउं विमासी कइ न बोलायी दासी; सखी
महिली सधि पाली, राणी स्वयमेव चाली। हंसगति हरषिइं गहगहती, जिहां
राजा तिहां पहुती जयविजय करती। रायहुइं निद्रा टाली राजातणइ आदेसि
सइसनि बइठी। स्वप्नवार्त्ता सांभली राजा फलु कहिउं; राणी हृदयि ग्रहिउं।
निवार पूछिइं आपणइ स्वस्थानकि आवी, पल्यंक बइसी सखीसहित धर्मजाग-
रिका नींपजावी। प्रभाति नरेश्वरि स्नानादि स्वप्नपाठकपाहिइं विचार कहा-
विउ, दान देउ निमित्तीयनं आदरिइ नींपजाविउ। संपूर्ण दिवस अतिक्रमे हुंते
परमेश्वरतणउ हुउ अवतार, देवता करइं जयजयकार।

इति श्रीजयचन्द्रकेवलिचरित्रे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे
वाग्विलासे चतुर्थोल्लासः।

पञ्चमोल्लासः

तत्काल मनतणी रली, छप्पन्न दिक्कुमारिका मिली। ते कवण कवण। भोगं-
करा १ भोगवती २ सुभोगा ३ भोगमालिनी ४ तोयधारा ५ विचित्रा ६ पुष्प-
माला ७ आनंदिता ८ मेघंकरा ९ मेघवती १० सुमेघा ११ मेघमालिनी १२
सुवत्सा १३ वत्समित्रा १४ वारिषेणा १५ बलाहका १६ नंदोत्तरा १७ नंदा
१८ आनंदा १९ नंदवर्द्धिनी २० विजया २१ वैजयन्ती २२ जयंती २३ अप-
राजिता २४ समाहारा २५ सुप्रदत्ता २६ सुप्रबुद्धा २७ यशोधरा २८ लक्ष्मी-
वती २९ शेषवती ३० चित्रगुप्ता ३१ वसुंधरा ३२ इलादेवी ३३ सुरादेवी ३४
पृथ्वी ३५ पद्मावती ३६ एकनाशा ३७ नवमिका ३८ भद्रा ३९ सीता ४०
अलंबुसा ४१ मिश्रकेशा ४२ पुंडरीका ४३ वारुणी ४४ हासा ४५ सर्वप्रभा ४६

श्री ४७ ह्री ४८ सुतारा ४९ चित्रकनका ५० चित्रा ५१ सौत्रामणी ५२ रूप ५३ रूपांसिका ५४ सुरूपा ५५ रूपवती ५६ एवं अधोलोकनिवासिनी ८ ऊर्ध्वलोकनिवासिनी ८ रुचकपर्वतचतुर्दिशिनिवासिनी प्रत्येक ८, ८, विदिसिनिवासिनी ४ मध्यरुचकनिवासिनी ४ ईणिपरि छप्पन्नदिक्कुमारिका आवी। तेहे सूतिकर्मतणी समग्ररीति नींपजावी। तदनंतर सौधर्मादिकदेवलोकइंद्ररहइं आसनप्रकंप नीपनउ। पहिलउं इंद्रहुइं कोप ऊपनउ। वज्र ऊलालिउं, ज्ञानदृष्टि निहालिउं। जाणिउं परमेश्वरतणउ अवतार, ऊलटिउ भक्तिभार। इंद्र मनि गहगहिउ, आसण छांडी उत्तरासंग करी गूडे थइ मस्तकि हाथ जोडी शक्रस्तव कहिउ। इंद्रि आसणि बइसी हरिणगमेसी देव बोलाविउ, तत्काल आविउ। इंद्रतणइ आदेसि सुघोषा घंटा आस्फालीनइ देवलोकि जणाविउं। इंद्र लक्षयोजनप्रमाणि पालंकि विमाने चडी पंचरूपि परमेश्वर लेउं मेरुपर्वति आविउ। चउसठि इंद्र मिलिया, देवसमूह हर्षि कलकलिया। आठ सहस्र चउसट्ठि आगला कलसि करी निर्मलजलि भरी स्नान कीधउं। तदनंतर अंगरक्षण करी विलेपन २ वस्त्रयुगल ३ वासपूजा ४ पुष्पारोहण ५ माल्यारोहण ६ वर्णारोहण ७ चूर्णारोहण ८ ध्वजारोहण ९ आभरणारोहण १० पुष्पग्रह ११ पुष्पप्रकर १२ अष्टमंगलकरण १३ धूपोत्क्षेप १४ गीत १५ नृत्य १६ वादित्र १७ सत्तरभेदपूजातणउं करणीय सीधुं।

तीणि अवसरि गगन गाजियां, इगुणपंचासभेदि वाजित्र वाजियां। कवणकवणपरिइं। उडमंताणं शंखाणं संगीयाणं खरमुहीयाणं परिपरियाणं अहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं अप्फालिज्जंताणं भंभाणं हारंभाणं तालिज्जंताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुभीणं आलिप्पंताणं मुखाणं मुत्तिगाणं नदीमुत्तिगाणं घटिज्जंताणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं आमोडिज्जंताणं झुंकाणं नउलाणं छिप्पंताणं तुंदुक्कीणं चिंपाणं वाइज्जंताणं करडाणं डिंडिमकाणं उत्तालिज्जंताणं तलाणं तोलाणं कंसतालाणं घट्टिज्जंताणं रिक्खिसिकाणं सुंसरिकाणं दुंदुक्कीणं फुमिज्जंताणं वंसाणं वेणूणं एवमाईणं एगूणवन्नाए पवाइज्जंताणं। ईणि युक्तिइं, भावभक्तिइं, आत्मशक्तिइं, परमेश्वरहुइं स्नानमहोत्सव करी पुनरपि पंचरूपिइं इंद्र होई देव मातातणइं समीपि मुंकिउं। बत्रीस बत्रीस स्थाल सिंहासनादिक बत्रीसकोडि सुवर्णरत्नतणी वृष्टि करी, स्वामीतणइ दक्षिणहस्तांगुष्ठि करी अमृत संचारी, वस्त्रयुगल कुंडल श्रीदाम मेल्ही इंद्र स्वस्थानकि पहुतु।

हिव प्रभाति दासीमहिलीए राउ वधाविउ, स्वामी तम्हारे पुत्र आविउ। राजा वधामणी दीधी, नगरमाहि सर्व महोत्सवनणी पद्धति कीधी। अलंकरिउ प्राकार, शृंगारियां प्रतोलीद्वार। मंच अतिमंचतणी रचना हुई, स्वर्गपुरीनणी शोभा लई। ध्वजपताका लहकई, पुष्पपरिमल वहकई। नाचई पात्र, राजाभवनि आवई अक्षतपात्र। सोमाई भणतां आवई छात्र, लोक अलंकरई आभरणि गात्र, उत्सव करिया एहइ ज वात। तीणि वेलां न ऊऊई कोरण, बांधीयई तोरण; बांधीयई पंदरयाल, उत्सव विशाल; गुलधीउ लाहीयई, मन ऊमाहीयइ। ईणि युक्ति जन्ममहोत्सव हुआ। नामगरणतणइ अवसरि माताहुई दोहलइ धर्म युक्ति हुई। एहमणी धर्म इसिउं नाम दीधउं, परमेश्वरि रमलि करतां बालपणुं लीधउं, यौवनवयि राजकन्यातणउ पाणिग्रहण कीधउं। अढई लाख वरस कुमारपणउं पाली पंचासवरस राज्यलक्ष्मी पामी, पछइ विरक्तियुक्त हुउ स्वामी। नवविधलोकांतिकदेवतणी वीनतीलगइ सांवत्सरिकदान दीधउं, पछइ महोत्सवि सहित चारित्र लीधउं। बि वरस छद्मस्थ काल अतिक्रमी, केवललक्ष्मी पामी; विहारक्रम करई, भव्यलोक तारई।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र अनइ सोमदेव उद्यानपालकरहइं साढाबारलाख सुवर्णदान देई समस्तपरिवारसाथिइं लेई परमेश्वर नमस्करिया सांचरिया, सकललोक ऊलटि धरिया। पृथ्वीरहइं अलंकरण, दीठउं स्वामीतणउं समोसरण। किसिउं ते। समग्र देव आवई, समोसरण नींपजावई। तां पहिलुं वायुकुमारदेवतानिर्मित संवर्तक वायु विस्तरई, ते तृण काष्ठ कचवर हरई, आकाशि मेघपटल पसरई, गंधोदकि वृष्टि करई, फूलपगर भरई। गरूअउं रत्नमय पीठ वाथीं ऊपरि जानुप्रमाण पंचवर्ण कुसुम परसई, चिहुं दिसि दिव्य परिमल विलसई। रत्नमय सुवर्णमय रूप्यमय त्रिसि प्रकार रूपि करी उदार, अनेक प्रकार; मणिरत्नसुवर्णमय कउसीसां सदाकार, च्यारि प्रतोलीद्वार। तिहां विहु पासे उधैस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुंभ; इंद्रधनुपमानमूरण, रत्नमय तोरण; प्रत्यक्ष जिसी मांगलिकयनी पालि, इसी पंदरयालि। अनेकि विचित्र, विशाल छत्र; उदारस्वरूप, कनकमय पूतलीनजां रूप; जेहे लिपिन सिंह शार्दूल गज, इसां निर्मल नीरज, पंचवर्ण ध्वज। इसा समोसरणविशालि, मणिबद्धपीठि विशालि: सकलमांगलिकयमुख्य, गरूउ अशोकवृक्ष; जिसिउ प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष, इसिउ वारगुण चैत्यवृक्ष। तेहमणी छायां रत्नमय

सिंहासण, जगन्नाथहुइं बइसण। तेजिइं जोई सकीयइ नीठ, इसिउं रत्नमय
ादपीठ; जिस्यां विकसित सहस्रपत्र, तिस्यां पनर छत्रातिछत्र; अमर, देवहुइं
ालइं चमर; अधरीकृतआदित्यमंडल, तीर्थंकरलक्ष्मीकर्णकुंडल; पूठइं झलकइं
ामंडल। जेहतणइ दर्शनि मिथ्यात्वपटल टलइं, इसिउ आगलि धर्मचक्र
ालहलइं; दिव्य दुंदुभि वाजइ, तीणि निर्घोष गगनांगणि गाजइं, परतीर्थिक-
णउ भडवाउ भाजइ। सहस्रप्रमाणयोजन इंद्रधज लहलहइं, धूपतणा परिमल
ाहमहइं, वादित्रतणी कोडि हुहहुहइं। मनुष्यतणी कोडि आवइं, मनि रहरहइ।
णि इसिइ समोसरणि परमेश्वर जगदीश्वर नवसुवर्णकमलि पाय स्थाप-
उ, पूछिया उत्तर आपतु; प्रभाइं दसइ दिसि व्यापतउ, भविकलोकहुइं
ाप मूंकावतउ, पूर्वदिसितणइ द्वारि पइसइ, पूर्वाभिमुख सिंहासनि बइसइ
ातुर्मुख होइ, भविकसंमुख जोई। संपूरी, बारपरिषदपूरी; मिथ्यात्वमानभूरी,
ापपटलचूरी, सर्वसत्त्वसाधारिणी, अमृतानुकारिणी, मधुरवाणी; लाभ जाणी;
खाण करइ, धर्म मार्ग विस्तरइ।

हिव बेउ नरेश्वर मनि गहगहता, समोसरणिमाहि पहुता। श्रीधर्मनाथ-
इं प्रदक्षिणा देउ, आगलि बइठा नरेश्वर बेउ। तिवारे राजापृथ्वीचंद्रि आप-
इं विशेषवंतइं रूपि लावण्ये करी देवदानवइंद्रहुइं आश्चर्य कीधुं, श्रीधर्मनाथि
ीर्थंकरि उपदेश दीधउ। किस्यु ते।

सद्वंशजन्म गृहिणी स्पृहणीयशीला लीलायितं वपुषि पौरुषभूषणा श्रीः।
पुत्राः पवित्रचरिताः सुहृदोऽपदोषाः स्युर्धर्मतः खलु फलानि पचेलिमानि॥१॥

अहो भव्य जीव ए इस्यां धर्मनां फल जाणिवां। कवण कवण। पहिलुं
ां उत्तिमकुलि अवतार, ए धर्मतणां फल सार। जइ जीव नीचकुलि अवत-
इ, तु किसिउ पुण्य करइ। एह विश्वमाहि एक माछीतणां कुल, भीलतणां
ुल, कोलीतणां कुल। ईणिपरि धोहरी आहेडी वागुरी पाटकी मद्यप धांची
ोर वेश्या चावरी मेष हुंय पाणपेरणीयांतणां पापतणां कुल जाणिवां। जीव
हे कुले अवतरी पाप करी नरकि जाइ, लाधु मनुष्यजन्म निरर्थक थाइ।
णि जीवहुइं उत्तिम कुल दुर्लभ। कुण तेउ उत्तम कुल।

वंसाणं जिणवंसो सव्वकुलाणं च सावयकुलाइं।
सिद्धिगई य गईणं मुत्तिसुहं सव्वसुक्खाणं॥ २॥

वंश ते प्रसंगि लेखे जिणतणउ अवतार, वंशतणउ कवण विचार। इक्ष्वाकुवंश सूर्यवंश चंद्रवंश चाहुआण सोलंकीवंश पालावंश पावेला पाधरो-हारवंश गुप्तवंश गुप्तवरवंश सोभटा भाटीया सोदा पांदा दाहिणमा कछवाह कमवाला कुशवंश हरीयट डाहट सिलार धान्यपालवंश अनंगपाल राजपाल दुधिपाल कलाप परमार मोरीवंश यादव सैंधव निकुंभ गुहिलउत्त डोडीवंश दोहीयावंश संकुआणा राहरवंश सोलणवंश बोहाणवंश दहीयावंश प्रमुख वंशावंश प्रमुखवंश जाणिया। अनइ ब्राह्मणादिक कुलविशेष ज्ञातिविशेष जाणिया। जिम पत्तिकाल प्रवर्त्तमानि चउरासी ज्ञाति बोलीयइं। किसी ते ज्ञाति। श्रीश्रीमाली उसवाल पावेरवाल टींडू पुष्करवाल डीसावाल मेडत-वाल भाभू खरणा छत्रवाल दोहिल सोनी पटवड पंडेरवाल पोरूआड गूजर मोढ नागर डालडरा पहाडना हरोल जांबू पावडा पाव दसउरा करहीया नागडरा मेपाडा भटेउरा कथरा नरसिंहउरा हारल पंचमवंश सिरपंडला कमोद रोमवी अगरवाल जिणाणी बांभ बांध पालहाउत उथित वगडू अंहिछ-त्रवाल श्रीगउड पाल्मीकि टाकी तेलटा तिसउरा अठवग्री लाडीसाखा वयन-उरा सुहडपाल पीपू पद्मावती मीमा जेहराणा माथुर धाकड पल्लीवाल हरसउरा चित्रउडा गोला गहियरिया लोहाणा भाटीया नागउरा आणंदउरा सतला कड-कोलापुरी रायकवाल पेर्मीया पेरूया गोमिश्री नारायणा टींडू गजउडा गोपरूआ अजयमेरा बंडोलीया कायस्थ सगउडा सोहउरा जेसवाल नादेवा जाइलवाल-पावेल। एणि सचिहुं ज्ञातिकुलवंशमाहि वपाणीइ सुश्रावककुल। जीणि सुश्रावकतणइ कुलि जीववधु टालीयइ, जीवदया पालीयइ; मिथ्यात्व परिहरी, यइ, सम्यक्त्व अंगीकरीयइ; पाणी भलीपरि गालीयइ, इंधण सोधी ज्वालीयइ; अधाणूं न रापीइ, अणंतकाई न चापीई; चोरी न कीजइ, सुपात्रि दान दीजइ-सुनीयि वित्त थावी लाभ लीजइ; आलोअण लेई पाप धोईइ, परिग्रहप्रमाणि पुण्यवंत होईइ; उभयकाल सामायक त्रिकाल देवपूजा समाचरीइ, पुण्यभंडार भरीइ; वार्षास अभक्ष वर्जीस अणंत काय टालीयइ, आठमि चउदसि पूनिम अमावास चउमासी पजूसण पर्व पालीयइं, पुण्यमार्ग उजूआलीयइ। इसु श्रा-वकतणउ कुल, तउ पामीयइ जइ पोनइ पुण्य हुइ विपुल। उत्तिमकुलि लाधइ हुंनइ गृहस्थरहइं जय हुइ। कुकलत्रतणउ संयोग, तु हुइ पुण्यतणउ वियोग।

किसी ते कुकलत्र। जे चालती कउयछि, साची अलछि; आत्मकुटुंबभं-जवि, परचित्तरंजकि; कपटविषइ पटिष्ट, अतिहिं अनिष्ट; बोलति छउट उतार इ, रांगइं छोरू मारइ; जीभइं जव छोलइ, अलविइं असंबद्ध बोलइं, बगाई करती

गोदडु गिलइ, परि विद्रोड करी माहिरि मिलइ, मोलानी मिसइं हाथ उलइ; फूफूनी मापिणी, चालनी चीत्रिणी; पुण्यकारणणी आगल, नगरनणी भागल। घणूं किसिउं कहीयइ। जिसी मिरीनणी ऊगटि, जिमिउं चालनउं पलेवगउं; जिसी दावज्वरनणी वहिनि, इसी संतापकारि तु संपजइ नारी, जउ जीव पापकर्मि भारी। अनइ ॥ हुइ सुकलत्र, जइ पोनइ हुइ पुण्यपवित्र। किसी ते। सुशील सुलील सदाचार सत्यवंती विनयवंती विवेकवंती पुत्रवंती बोलवंती सुजाणि मधुरवाणि देवगुरुनणइ विषइ भक्त, पुण्यतणइ विषइ आसक्त; सहजि सलावण्य, इसी सुकलत्र तु संपजइ जइ पोनइ पुण्य। अनइ जं शरीरि संपजइ लीलावंतपणूं, तं पुण्यतणउं प्रमाण। जं मधुरगति चालइ, पापबुद्धि पालइ; सहजि विचक्षण, शरीरि बत्रीसलक्षण; अलिकुलकज्जलश्यामल केशपाश, अष्टमीचंद्रसमान भालस्थल, कामदेवकोदंडाकार भ्रूभंग, पूर्णचंद्रसमान वदनमंडल, आदर्शतलसमान कपोलयुगल; मौक्तिकश्रेणिसमान दशनमाल, वक्षस्थल विशाल; प्रचंड भुजदंड, इसी रूपलक्ष्मी अखंड, तु संपजइ जइ पोनइ प्रचुरपुण्यपिंड। अनइ जे द्रव्य ऊपार्जिवातणइ कारणि एकि लोक देवदेवता आराधइं, मंत्रविद्या सधरपणइं साधइं; राजसभा बुद्धिवंत भणी वइसइं, रणक्षेत्रि पहिलां पइसइ; व्यापारकला केलवइं, धूर्त्तपणइं भलारहइं भोलवइं; जलमार्ग स्थलमार्ग आदरि आक्रमइं, भूमंडलि भूजाबलि भमइं; जोगीपूठिइं लोभि लुबधा लागइं, एकि मोटा ठाकुर मागइं; एकि पाला पुलता पंथि चालइं, एकि हा दैव भणी वइरागरि घाउ घालइं; एकि हल पेडइं, उलग करइं लागा ठाकुरकेडइं; रसकारणि रसकूपिका पडइं, एकि कलकलतइं समुद्रि चडइं; एकि त्रिंशिसइं साठि क्रियाण वहुरइं, पिरायां कवित्व वहरइं; कष्ट सहइं विपुल, पुणि लक्ष्मी तु पामइं जइ पोतई हुइ पुण्य परिघल; घरि सुवर्ण मणिरत्न प्रवाल, प्रधान मुक्ताफल, गजरथतुरंगमादिक जाणिवा लक्ष्मीतणा विलास सकल।

हिव जं संपजइ सत्पुत्र, एहू पुण्यतणउं चरित्र। एकइं तणइ एकि कुपुत्र हुइं जे बालपणि पालीइं लालीइं पणि जेतलइं यौवनभरि जाइं, तेतलइं मावीत्रसाम्हा थाइं; कृत्य अकृत्य न गिणइं, वडांतणां वचन निहणइं; मावीत्रसाम्हां नीठुर बोल भणइं, अहंकारि हणहणइं; लक्ष्मीमदि कुपात्रि वरसइं, कुस्थानकि विलसइं, पिराई भूमि ग्रसइं; चाटूए वचनि उल्लसइं, रूडी वात कहतां साम्हां धसइं; स्वाननी परि भसइं, अपरहुइं हसइं; पापकरी ऊससइं, धर्मवार्ता हियइ न वसइं; इस्यां जं पुत्र अभक्त अजाण, ए पापतणूं

। अनइ जं पुत्र विवेकीया विचारवंत, सहजिइं संत सौभाग्यवंत, गरु-
ति भक्तिवंत गुणवंत; देवगुरुधर्मतणइ विषइ तत्पर, सुपुत्र पामीयइ जइ
इ पुण्यतणउ भर।

हिव तु पामीयइ सुमित्र उत्तम, जइ पोतइ पुण्य हुइ निरुपम। एक
व सहजइं दुर्जनप्रकृति, पापतणइ विषइ मोटी आकृति; मुहि मींठउ, चित्ति
णठउ; पिरायां छलछिद्र जोइ, विणास विण विगोई; उपगारि केतलइं न लीजइं,
प्रशंसा मनमाहि पीजइ; आपणपउं घणुं देषइ, अवर नहीं किसिइं लेषइ;
जन संकटि पाडइ, परदोष ऊघाडइ; राउलइ वानइ, देवगुरु अवमानइं; मूर्खि-
त अधर्म, बोलइ पिराया मर्म। जिसिउं विषवृक्षनउं वन, इसिउ जाणियउं
दुर्जन। एकि जीव, सहजिइं उत्तमस्वभाव, पुण्यऊपरि भाव; उपगार करइं,
परमर्म हीयडइं धरइं; परदोष न प्रकासइं, असत्य न बोलइं हासइं; उन्मार्गि न
चालइं, पापवार्त्ता टालइं, गुरूपदेश झालइं, धर्मनउ न हालइं; नवे क्षेत्रे वेषइं धन,
जिसिउ यावतुं चंदनु; इस्यां जीहनां सीतल मन, इस्या कहीयइ सज्जन। संपजइ
सुमित्र सज्जन सुजाण, तं पुण्यतणउ प्रमाण। इस्यां धर्मफल देषी, प्रमाद ऊषेषी;
आलस परिहरी, आदर करी; पुण्यतणइ विषइ भावनासहित लाभ लेषउ।
जेह कारणि इसिउं कहीइ। जिम प्रासाद शोभइ ध्वजाधारि, जिम हृदय
शोभइ हारि; जिम गृह शोभइं उत्तिम नारि; जिम मस्तक शोभइ वेशाग्रा-
भारि; जिम कर्ण शोभइ स्वर्णालंकारि, जिम शरीरि शोभइ शीलशृंगारि;
सरोवरि शोभइ कमलि, मुष शोभइ परिमलि; मुष शोभइ निर्मलि नेत्रयुगलि,
रात्रि शोभइ चंद्रमंडलि; विवाह शोभइ पूरि, उत्सव शोभइ तूरि, नदी
शोभइ पूरि; जिम सम्यक्त्व शोभइ प्रभावना, तिम धर्म शोभइ भावना।
एह कारणि भावनासहित पुण्यवंति लाभ लेषउ। जिसिइं पुण्यप्रभावि सर्व-
लक्षेपकल्याण संपजइं।

इसिउ उपदेश सांभली, अनतणी वली, परमेश्वरप्रतिइं विहुं नरेश्वरि
वीनती कीधी वली। हे जगनाथ! संदेह भांजिवानइं ऊभउ हाथ; तुम टाली
अपरि संदेह न भाजइं, संदेहभंजन विरुद तूंहइं छाजइं। जेहि कारणि
इसिउं कहीइं। समुद्रि उलंघीयइ भारंडि न मरइ, गजेंद्र विदारीयइ सींहि न
मरइं; विषधरतणां विष जीरविषइं गुरुडि न फूकइं, वृक्षसिखरतणां फल
लीजइं तडपडइं न ढंकइं; संग्रामभूमिइं भिडीयइ राउलि न दयामणां, भंडा-
रीतणा भार झालियइ अभीष्टि न अलपामणां; पर्वततणां टोड लांघीयइं

नदीतणइ पूरि न वाहलइं, रायतणइ मनि रंगि रहावीयइं प्रभुतणि न पालइं; समुद्रि सेतुबंध बांधीइ पर्वते न फाडइं; इंद्रगढतणी पोलि भांजियइ गजेंद्रि न नाकरइं, याचकजननां दरिद्र टालीयइं दातारि लक्ष्मीवंति न आजन्मदुखि; सकलसंदेह भांजीइ केवलीए न छद्मस्थि। तेह कारणि तउं हूं स्वामिन् अम्हारा संदेह टालि, एक संदेह ऊपनउ सरोवरतणि पालि; एक ऊपनउ अटवीटालि, एक संग्रामि; एक स्वयंवरि, ए मनि संदेह आहरि। इमी वीनती सांभली जगन्नाथ कहइ छइ अहो नरेश्वर सांभलउ। हिव कहीइ छइ पूर्वभव, जिसिउ हुउं अनुभव। इणइ क्षेत्रि भृगुकच्छनामिइं नगर, जिहां नर्मदा नदी प्रवर; प्रौढ धवलगृह, लोक पुण्यविषइ मसूह; जीणि नगरि महावर मंडलीक मेन्द्रत्थ वरवीर राउत दयइत भाथाइत ऊडणाइत फलहकार छुरीकार नलीकार कुंभकार सींगडीया सावलीया जेठी यंत्रवाहा भंडारी कोठारीप्रभृति राजलोक वसइं, सर्वज्ञभवन देवी मन उल्लसइ। जिहां पद्मश्रीनामि सरोवर, महामनोहर, जिहां राज्य पालइं द्रोणनामा नरेश्वर। तेहतणइ सागर अनइ पूरण इसिइ नामि पवित्रचरित्र, त्रि पुत्र। ते वेउ नर्मदानदीमाहि वेडी चडी मत्स्य विणासि वाप्रवर्त्तिया। तिसिइ अवसरि मत्स्य एक साम्हउ जोई तीहम तिइं बोलिउ। रे दुराचारउ म करउ पाप, नरकि इस्यां हुसिइ संताप, नहीं छूटउ करताइ विलाप; जइ न मानउ तउ पूछउ आपणउ बाप। ए वात सांभली वेउ कुमर भयभ्रांत हुआ। तिसिइ नदीतइ कंठि एक दीठउ मुनीश्वर। तेहे वेडीतउ ऊतरी नमस्करिउ। वच्छउ तुम्हे म्हारा पौत्र, हूं पालउं चारित्र; तुम्हे करउ अक्षत्र। तीणइं सोनइं किसिउं कीजइं जीणइं त्रूटइं कान, तीणइं उपाध्यायि किसिउं कीजइं जीणइं चूकइं ज्ञान, तीणइं ठाकुरि किसिउं कीजइं जीणइं पामीइ पगि पगि अपमान; तीणइं धर्मि किसिउं कीजइ जीणइं वाधइ मिथ्यात्ववाद, तीणइं वयरइं किसिउं कीजइं जीणि पाछइ ऊपजइ विषवाद, तीणि मित्रि किसिउं कीजइं जीणिइं थाइं प्रमाद; तीणिइं घरि किसिउं कीजइं जेहमाहि फूफइ साप, तीणइं स्त्रीइं किसिउं कीजइं जेहतु नितु संताप, तीणइं रामतिइं किसिउं कीजइं जीणि कराइ पाप। वत्स मुझ भक्त व्यंतरि, मत्स्यमुखि अवतरी; तुम्हे जगाडिया, पुण्यमार्गि लगाडिया। हिव पाप परिहरउ, पुण्य करउ। तीणइं ऋषीश्वरि पुण्यतणी परठ कही, तेहे विहुं ग्रही। आव्या आपणइ घरि, करइं पुण्य नवनवीपरि; दिइं दान, धरइं अरिहंततणउं ध्यान; करइ सुगुरुभक्ति, जाणइं विवेकयुक्ति; करावइं प्रासाद,

पडावइं सत्रूकारि रवाद; पालइ सम्यक्त्व, जाणइ नवतत्त्व; करइं सामायक सार, स्मरइ पंचपरमेष्ठि नमस्कार, वे कुमार इसीपरि भरइं पुण्यभंडार। अन्यदा प्रस्तावि द्रोणि राजां नीह विहुंहुइं राज्य दीधउं, आपणपइं राज्ञी-सहित चारित्र लीधउं। निर्मल चारित्र पाली भावविशेषि पातालि बलीन्द्र अवतरिउ, राणीइं इंद्राणि थईनइ तेह जि अणसरिउ। हिव पूरणतणइ पद्मश्री इसिइ नामि हुई कलत्र, जे महासुचरित्र। ते सागर पूरण पद्मश्री पुण्य करी पहुता देवलोकि, सौख्य भोगवी अवतरिया मनुष्यलोकि। सगरतणउ जीव हुउ तु सोमदेव नरेन्द्र, पूरणतणउ जीव हुउ पृथ्वीचंद्र। पद्मश्री इहां रत्नमंजरी अवतरी। पूर्वतणउं धर्म फलिउ, सर्वसंयोग मिलिउ।

विहुं नरेश्वरि इणिपरि उपदेश सांभलिउ, श्रीधर्मनाथतीर्थंकरि वली कहिउं। हिव सांभलउ जे पूछिया संदेह, तेहनु कीजइ छेह। जिसिइ समइ रत्नमंजरी सरोवरतणी पालिइं पिनातणइ उत्संगि बइठी, कुणरहइं देवातणी चिंता पइठी; तिसिइ अवसरि, बलींद्रदानवेश्वरि; ज्ञानिप्रमाणि, पूर्व जाणी, पुत्रपृथ्वीचंद्रनिमित्त राखिवा रत्नमंजरी हंसरूपिइं अपहरी आपणइ कन्हइ आणी। छमास पातालि स्थापी, पछइ अवसरि पाछी आपी। राजा पृथ्वीचंद्रहुइं स्वप्न दीधउं, अटवी अनइ संग्रामांगणि महासान्निध्य कीधउं। अनइ स्वयंवरि जेतलइ धूमकेतु राजां वेतालांधकार विस्तारीनइ रत्नमंजरी रथि घाली, तेतलइं बलींद्रतणी इंद्राणी ते मेल्हिउ निपाली। छ प्रहर पातालि राखी, प्रभाति प्रकट करी दाखी; उहे दिपाडिउ पूर्वभवस्नेह, एतलइं टलियां सवे संदेह। अहो पृथ्वीचंद्र ताहरुं विशेषवंत छइ भाग्य, अद्भुत सौभाग्य। जेह कारणि गृहस्थवेषि हाथियइं चढतां इणइ जि भवि ऊपजिसिइ केवलज्ञान, एह भणी ए भाग्य प्रधान। सोमदेवहुइं श्रीजइ भवि मुक्ति, इसी छइ युक्ति। ए वार्त्ता मनि धरी, श्रावकयोग्य धर्म आदरी, परमेश्वर नमस्करी; वे नरेश्वर सपरिवारि स्वस्थानकि आव्या, परमेश्वरि विहारक्रम दीपजाव्या।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र सुमरउराउ मोकलावी रत्नमंजरीसहित आपणइ पुहिठाणपुरि पाटणि आव्या, प्रधानि प्रवेश महोत्सव कराव्या। सकल लोक हाट पाटण काज काम परिहरी आभरण छूटते, वेणीदंड छूटते; पटउले फाटते, घाटडे विणसते; घसमसाटि जोडवा धाइउ राजा महोत्सवसहित आपणइ आवासि आइउ। रत्नमंजरी पटराणी स्थापी, कीर्त्तिइं जगत्रयी व्यापी। राज्यसौभाग्य भोगवतां अवसरि रत्नमंजरी महीधर इसिइं नामिइं

पुत्र जन्मिउ। ते सर्वांगसुंदर, रूपिइं पुरंदर विवेकबंधुर राज्यधुरंधर सत्पुरुष-सिंधुर नामि महीधर प्रवर्द्धमान हूउ। राजापृथ्वीचंद्ररहइं राज्य करतां नव-लाप नवाणवइ सहस्र नवसइं नवोत्तर वरस अतिक्रम्यां। तिसिइ अवसरि कानडदेसनउ राउ सिंहकेतु इसिइं नामिइं अकस्मात् पुहठाणपुरि पाटणि-ऊपरि चडी आविउ, लोकरहइं आतंक ऊपजाविउ। तत्काल चरपुरुषि पृथ्वी-चंद्ररहइं जणाविउ। ते सांभली राजापृथ्वीचंद्र कोपि करी करवाल ऊलालतु सामहिउ, सुभटवर्ग गहगहिउ; भंभा वाजी, गगनांगण रहिउ गाजी। राजा आप जेतलइं हाथि चडिउ, तेतलइं मनि विमासण पडिउ। रे आत्मन् हुं बाह्यवइरी पूठिइं धाउं, अंतरंगवइरी पूठि न धाउं। कुण ए बुद्धि, किसी शुद्धि, जीतउ जोईयइ क्रोध, जेहतउ चालइ विरोध; जीतु जोईयइ मान, जेह-हुइं पर्वतनउं उपमान; जीती जोईयइ माया, जेहतु पामीयइ स्त्रीतणी काया; जीतु जोईयइ लोभ, जेहतु संसारि समयक्षोभ; जीतु जोईयइ काम, जेहतु फेडइं पुण्यतणउं ठाम। ईणिपरि नरेश्वरहुइं चींतवतां ऊपनउं शुक्लध्यान, तत्काल ऊपनउं केवलज्ञान। आव्या देव, करइं सेव; वइरी समिउ, आवी नमिउ; वाजइं वादित्र, महोत्सव विचित्र। देवे वेष दीधउ, राजऋषि लीधउ; हंसजमलि, बइठउ सुवर्णकमलि; दिइ उपदेश, हूउ पुण्यतणउ निवेश। एके आदरिउं सम्यक्त्व, एके श्रावकत्व; एके संयम, एके नियम। ईणिपरि लोक-हुइं लाभ देई पृथ्वीमंडलि विहारक्रम करी पृथ्वीचंद्रि राजा सिद्धिसाम्राज्य लीधउं, तेहतणइ पुत्रि महीधरि पहुठाणपुरि अखंडप्रतापि राज्य कीधउं। पृथ्वीचंद्रनरेश्वरतणउं चरित्र सांभली, मनतणी रली, घली; घली, विवेकवंति पुण्यवंत लाभ लेयउ। जिसिइं पुण्यतणा प्रभावनउ सकल श्रीसंघहुइं श्रेय-कल्याण ऋद्धिवृद्धिपरंपरा संपजइं।

श्रीमदञ्चलगच्छे श्रीगुरुमाणिक्यसूरिणा।
पृथ्वीचन्द्रनरेन्द्रस्य चरित्रं चारु निर्मितम्॥

संवत् १४७८ वर्षे श्रावण सुदि ५ रवौ पृथ्वीचन्द्रचरित्रं पवित्रं पुरुषपत्तने निर्मितं समर्थितम्।

यावन्मेरुर्मही यावत् यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
वाच्यमानो जनैस्तावद्ग्रन्थोऽयं भुवि नन्दतात्॥

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे पञ्चम उल्लासः।

खरतरपट्टावलीपट्टपदानि

जिण दिट्ठइ आनंदु चढइ अइरहसु चउग्गुणु ।
जिण दिट्ठइ फडाडइ पाउ मणु निम्मलु हुइ पुणु ।
जिण दिट्ठइ खुडइ रोउ कडु पुव्वुक्खिउ नासइ ।
जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दालिद्दु पणासइ ।
जिण दिट्ठइ खुडइ पम्मसद अवुहहु कांइ उइक्खहु ।
पहु नयकणमंडिउ पासजिणु अजयमेरि किं न विक्खहु ॥ १ ॥
मयण म करि धरि धणुहु बाण पुणि पंचम पयडहि ।
रूविण पिम्मपयासि थंभहरिहरु मन विणडहि ।
रूउ पिम्मु ता बाण मयण नायरिसहि धणहरु ।
नयकणमंडिउसीस जाव न हु विक्खिउ जिणवरु ।
जइ पडिहसि पासजिणिंदयसि नाणवंत णिम्मलरयण ।
मणु धणुहरु बाण न रूप नहि न सुयप्पिम्मु हुइ हइमयण ॥ २ ॥
नयकणिपासजिणिंदु गहिउ अग्गलि जु दिट्ठउ ।
अजयमेरि थंभरिनरिंदु ता नियमनि तुट्ठउ ।
कंचणमउ अह कलसु सिहरि साणउ रइयियउ ।
जणु सुतरणि नउ नवइ तिव्वु आयासिसउग्गउ ।
जा गुज्जुमिसिण हकारविण कर उज्झवि फरहरइ धर ।
जिणदत्तसूरि धर धयलि जसि ता पसिद्धि सुरभयणि कय ॥ ३ ॥
देवसूरिपट्टु नेमिचंदु बहुगुणिहि पसिद्धउ ।
उज्जोयणु तह वद्धमाणु खरतरयर लद्धउ ।
सुगुरु जिणेसरसूरि नियमि जिणचंदु सुसंजमि ।
अभयदेव सव्वंगु नाणि जिणवल्लह आगमि ।
जिणदत्तसूरि ठिउ पट्टि तहि जिण उज्जोइउ जिणवलणु ।
सावइहि परिक्खिवि परिचरिउ मुहि महरयउ जिम रयणु ॥ ४ ॥
धणुहर धयवड धरिय सार सिंगार सुसज्जिय ।
सोहग्गिण गुडगुडिय पंच वर पडिम निमज्जिय ।
निगड अ तेअ अग्गलिय पिम्मपडिकारनिरुत्तिय ।
रहरणारहसुवलिय गरुयमाणिण मइ अत्तिय ।
करि कडयइ मुणिमहियइहि रहिअ रूअ संपुन्नभय ।
जिणदत्तसूरिसोहइ भयण मयणकरडिघट विहडि गय ॥ ५ ॥
[illegible] धम्मधोरिमसुविसालह ।

संजमसिरभासुरह दुसहवयदाढकरालह ।
नाणनयणदारुणह नियमनिसनहरसमिद्धह ।
कम्मकोवणिट्ठुरह विमलपुच्छपसिद्धह ।
उपसमणउपरधरदुव्विसह गुणगुंजारवजीहह ।
जिणदत्तसूरि अणुसरह पय पापकरडिघडसीहह ॥ ६ ॥
जरजलवहलरउद्द लोहलहरिहिं गज्जंतउ ।
मोहमच्छउच्छल्लिउ कोवकल्लोल वहंतउ ।
मयमयरिहि परिवरिउ वंचवहुवेलदुसंचरु ।
गंथगरुयगंभीरु असुहआवत्तभयंकरु ।
संसारसमुद्दु जु एरिसउ जसु पुणु पिक्खवि सुदरियइ ।
जिणदत्तसूरिउवएसु सुणि त परतरंडइ सुतरियइ ॥ ७ ॥
सावय किवि कोयलिय केवि खरहरिय पसिद्धिय ।
ठाइ ठाइ लक्खिज्जयहि मूढ नियवित्तिविरुद्धिय ।
दरहि न किंपि परत्त वेवि सुपरुप्पर जुज्झहि ।
सुगुरु कुगुरु मणि सुणिवि न किवि पट्टंतरु बुज्झहि ।
जिणदत्तसूरि जिन नमहि पयपउम सच्चु नियमणि वहहि ।
संसारउयहि दुत्तरि पडिय जि न हु तरंडइ चडि तरहि ॥ ८ ॥
तवसंजमसयनियमि धम्मकम्मिण वावरियउ ।
लोहकोहमयमोह तह व सप्पिहि परिहरियउ ।
विसमछंदलक्खणिण सत्थअत्थत्थविसालह ।
जिणवल्लहगुरुभत्तिवंतु पयडउ कलिकालह ।
अप्पिहिवि गुणिहि संपुन्नतणु दीणदुहियउद्धरणु धर ।
जिणदत्तसूरि पर पल्ह भणु तत्तवंत सलहियइ धर ॥ ९ ॥
वक्खाणियइ परमतत्तु जिण पाउ पणासइ ।
आराहियइ त वीरनाह कइपल्हु पयासइ ।
धम्मु त दयसंजुत्तु जेण वरगइ पाविज्जइ ।
पाउ त अणखंडियउ जु वंदिण सलहिज्जइ ।
जइ ठाइ त उत्तिममुणिवरह पवरवसहिहो चउर नर ।
तिम सुगुरुसिरोमणि सूरिवर खरतरसिरिजिणदत्त वर ॥ १० ॥

इति श्रीगुर्वावलीपद्यानि । संवत् ११७० वर्षे अश्वयुगशुक्ले ११ तिथौ श्रीमद्वागडगच्छे विधिमार्गप्रकाशितपतिश्रीमिश्रीजिनदत्तसूरीणां शिष्येण जिनशिखसाधुना लिखितानि ।

APPENDIX 1

श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रावर्णनम्

भयं क्षुब्धक्षीरार्णवनवसुधासन्निभचिता-
नुपाकर्ण्याकर्णानुपदमुपदेशानिति गुरोः ।
समस्तध्वस्तैना जनितजिनयात्रापरिकरो
ऽकरोत्सुस्थं प्रास्थानिकविधिमधीशो मतिमताम् ॥ १ ॥
शाप्योऽतिसङ्घसहितः स हितः प्रजानां श्रीमानथ प्रथमतीर्थकृदेकचित्तः ।
सम्भावणाद्भुतसुधाभवचाश्चचार वाचालचारिदपथो रथचक्रनादैः ॥ २ ॥
सान्द्रैरुपर्युपरिवाहपदाग्रजाग्रद्धूलीपटैर्भटिति कुट्टिमतामटद्भिः ।
मार्गे निरुद्धखरदीधितिधामसङ्घे सङ्घस्तदा भवनगर्भ इवाबभासे ॥ ३ ॥
नाभेयप्रभुभक्तिभासुरमनाः कीर्त्तिप्रभाशुभ्रिमा-
काशः काशहृदाभिधेऽथ विदधे तीर्थे निवासानसौ ।
चक्रे चारुमना जिनार्चनविधिं सङ्घाग्रपूजाग्रता-
रम्भस्तम्भितविष्टपत्रयजयश्रीधामकामस्मयः ॥ ४ ॥
पुष्टिभक्तिभरतुष्टया रयादम्बया हृततमःकदम्बया ।
एत्य दृक्पथमथ प्रतिश्रुतं स्वस्निधिं समभिगम्य सोऽचलत् ॥ ५ ॥
ग्रामे ग्रामे पुरि पुरि पुरंध्रीभिर्मङ्गलैः
पल्लसप्रावेशिकविधितया व्योम्नि पद्मपन्नाकाः ।
मूर्त्ताः कीर्त्तीरयममनुत प्रौढतुङ्गप्रपञ्च-
व्यापद्वीलाद्भुतभुजलतायर्णनीयाः स्वकीयाः ॥ ६ ॥
अध्यायास्य नमस्यकीर्त्तिविभवः श्रीमद्भुमंस्तमः-
स्तोमादित्यमुपत्यकापरिसरे श्रीमद्भुदेवानुजः ।
श्रीनाभेयजिनेशदर्शनसमुत्कण्ठोद्भुतन्मानस-
स्त्रस्यन्मोहमहाग्रहं विमलक्षीर्णाधरं धीरधीः ॥ ७ ॥
तत्र स्नानमहोत्सवव्यसनिनं मार्त्तण्डखण्डद्युति-
क्रान्तं सङ्घजनं निरीक्ष्य निखिलं सान्द्रीभवन्मानसः ।
सद्यो माद्यदमन्दमेदुरतरश्चक्रानिधिः शुद्धधीः
मन्त्रीन्द्रः स्वयमिन्द्रमण्डपमयं प्रारम्भयामासिवान् ॥ ८ ॥

मन्त्री मौलौ किल जिनपतेश्चित्रचारित्रपात्रं
स्नानं कृत्वा कलशशतुष्टिनैः स्मेरकाश्मीरनीरैः ।
धर्मे धन्यन्मृगमदमगालेपनस्वर्णभूषा-
वर्ण्यैः पूजाकुसुमवसनैस्तं स कल्पद्रुकल्पम् ॥ ९ ॥
मन्त्रीशेन जिनेश्वरस्य पुरतः कर्पूरपूरागुरु-
स्तोपमेद्विनधूपधूमपटलैः सा कापि तेने मुदा ।
यावद्ब्रह्ममहाध्वजप्रणयिनी स्वर्लोककल्लोलिनी
मिश्रेयं रविकन्यकेति वियति प्रत्यक्षमुत्प्रेक्ष्यते ॥ १० ॥
इत्थं तत्र विधाय निर्मलमनाः सन्मानदानक्रियां
सानन्दप्रमदाकुलां कुलनभोमाणिक्यमष्टाह्निकाम् ।
विप्रोन्मर्दिकपर्दियक्षविहितप्रत्यक्षमाविष्यनः
श्रद्धावर्द्धितसम्मदादुदतरन्मन्त्रीश्वरो भूपरात् ॥ ११ ॥
अजाहराख्ये नगरे च पार्श्वपादानजापालनृपालपूज्यान् ।
अभ्यर्चयन्नेष पुरे च कोडीनारे स्फुरत्कीर्त्तिकदम्बमम्बाम् ॥ १२ ॥
देवपत्तनपुरे पुरन्दरस्तूयमानममृतांशुलाञ्छनम् ।
अर्चयन्नुचितचातुरीचितः कामनिर्मथननिर्मलश्रुतिम् ॥ १३ ॥
प्रीतस्फीतरुचिश्चिराय नयनैर्वामभ्रुवां वामन-
स्थल्यामेष मनोविनोदजननं क्लृप्तप्रवेशं पुरि ।
धीमान्निर्मलधर्मनिर्मितिमसुल्लासेन विस्मापयन्
दैवं रैवतकाधिरोहमकरोत्सङ्घेन सङ्घेश्वरम् ॥ १४ ॥ (विशेषकम्)
गजेन्द्रपदकुण्डस्य तत्र पीयूषहारिभिः ।
चकार मज्जनं मन्त्री वारिभिः पापहारिभिः ॥ १५ ॥
जिनमज्जनसज्जसज्जनं कलशन्यस्तदम्बुकुङ्कुमम् ।
अथ सङ्घमवेक्ष्य सङ्कटे विदधे वासवमण्डपाद्यमम् ॥ १६ ॥
संरम्भसङ्घटितसङ्घजनौघदृष्टामष्टाह्निकामयमिहापि कृती वितेने ।
सद्भूतभावभरभासुरचित्तवृत्तिरुद्वृत्तकीर्त्तिचयचुम्बितदिक्कदम्बः ॥ १७ ॥
लुम्पन् रजो विजयसेनमुनीशपाणिवासप्रवासितकुवासनभासमानः ।
सम्यक्त्वरोपणकृते विततान नन्दिमानन्दमेदुरमयं रमयन्मनांसि ॥ १८ ॥
दानैरानन्द्य वन्दिव्रजमसृजदनिर्वारमाहारदानं
मानी सम्मान्य साधूनपुपदपि मुखोद्घाटकर्मादिकानि ।

मन्त्री सत्कृत्य देवार्चनरचनपरानर्चयित्वाप्रमुचै-
रम्बाप्रद्युम्नशाम्बानिति कृतसुकृतः पर्वताद्दुत्ततार ॥ १९ ॥
असाधि साधर्मिकमानदानैरनेन नानाविधधर्मकर्म ।
अबाधि सा धिक्करणेन माया निर्माय निर्मायमनः सुपूजाम् ॥२०॥
पुरः पुरः पूरयता पयांसि घनेन साक्षिध्यकृता कृतीन्दुः ।
स्वकीर्त्तिवन्न्यनदोर्ददर्श ग्रीष्मेऽतिभीष्मेऽपि पदे पदेऽसौ ॥२१॥
इति प्रतिज्ञामिव नव्यकीर्त्तिप्रियः प्रयाणैरतिवाह्य वीथीम् ।
आनन्दनिस्यन्दविधिर्विधिज्ञः पुरं प्रपेदे धवलक्कं सः ॥ २२ ॥
समं तेजःपालान्वितपुरजनैर्वीरधवल-
प्रभुः प्रत्युद्यानस्तदनु सदनं प्राप्य सुकृती ।
पुनः सङ्घेनासौ जिनपतिमथोत्तार्य रथत-
स्ततः सङ्घस्यार्चामशनवसनाद्यैर्व्यरचयत् ॥ २३ ॥
अथ प्रसादाद्भूभर्तुः प्राप्य वैभवमद्भुतम् ।
मन्त्रीशः सफलीचक्रे स्वमनोरथपादपम् ॥ २४ ॥
भक्त्याखण्डलमण्डपं नवनवश्रीकेलिपर्यङ्किका-
पर्यं कारयति स्म विस्मयमयं मन्त्री स शत्रुञ्जये ।
यत्र स्तम्भनरैवतप्रभुजिनौ शाम्बाम्बिकालोकन-
प्रद्युम्नप्रभृतीनि किञ्च शिखराण्यारोपयामासिवान् ॥ २५ ॥
गुरुपूर्वजसम्बन्धिमित्रमूर्त्तिकदम्बकम् ।
तुरङ्गसङ्गतं मूर्त्तिद्वयं स्वस्यानुजस्य च ॥ २६ ॥
शातकुम्भमयान् कुम्भान्यत्र तत्र न्यवेशयत् ।
पञ्चधा भोगसौख्यश्रीनिधानकलशानिव ॥ २७ ॥
सौवर्णं दण्डयुग्मं च प्रासादद्वितये न्यधात् ।
श्रीकीर्त्तिचन्द्रयोरुच्चस्तनाङ्कुरसोदरम् ॥ २८ ॥
कुन्देन्दुसुन्दरग्रावपावनं तोरणद्वयम् ।
इहैव श्रीसरस्वत्योः प्रवेशार्थं च निर्ममे ॥ २९ ॥
अर्कपालितकं ग्राममिह पूजाकृते कृती ।
श्रीवीरधवलक्ष्मापादापयामास शासने ॥ ३० ॥
श्रीपालिताख्ये नगरे गरीयस्तरङ्गशालादलितार्कतापम् ।
तडागमागःक्षयहेतुरत्यकार मन्त्री सलिताभिधानम् ॥ ३१ ॥

हर्षोत्कर्षं न केषां मधुरयति सुधासाधुमाधुर्यगर्ज-
त्तोयः सोऽयं तडागः पथि मथितमिलत्पान्थसन्तापपापः ।
साक्षादम्भोजदम्भोदितमुदितसुखं लोलरोलम्बशब्दै-
रब्देभ्यो दुग्धमुग्धां त्रिजगति जगदुर्यत्र मन्त्रीशकीर्त्तिम् ॥ ३२ ॥
पृष्ठपत्रं च सौवर्णं श्रीयुगादिजिनेशितुः ।
स्वकीयतेजःसर्वस्वकोशन्यासमिवार्पयत् ॥ ३३ ॥
प्रासादे निदधे काम्यकाञ्चनं कलशत्रयम् ।
ज्ञानदर्शनचारित्रमहारत्ननिधानवत् ॥ ३४ ॥
किञ्चैतन्मन्दिरद्वारि तोरणं तत्र पोरणम् ।
शिलाभिर्विदधे ज्योत्स्नागर्वसर्वस्वदस्युभिः ॥ ३५ ॥
लोकैः पाञ्चालिकावृत्तसंरम्भस्तम्भितेक्षणैः ।
इहाभिनीयते दिव्यनाट्यप्रेक्षाक्षणः क्षणम् ॥ ३६ ॥
प्रासादः स्फुटमच्युतैकमहिमा श्रीनाभिसूनुप्रभो-
स्तस्याग्रस्थितिरेककुण्डलकुलां धत्तेतरां तोरणः ।
श्रीमन्त्रीश्वर वस्तुपाल कलयन्नीलाम्बरालम्बिता-
मत्युच्चैर्जगतोऽपि कौतुकमसौ नन्दी तवास्तु श्रिये ॥ ३७ ॥
अत्र यात्रिकलोकानां विशतां व्रजतामपि ।
सर्वथा सम्मुखैवास्ति लक्ष्मीरुपरिवर्त्तिनी ॥ ३८ ॥
यत्पूर्वैर्न निराकृतं सुकृतिभिः साम्मुख्यवैमुख्ययो-
र्यैतं तन्मम वस्तुपालसचिवेनोन्मूलितं दुर्यशः ।
आशास्तेऽद्भुततोरणोभयमुखी लक्ष्मीस्तदस्मै मुदा
श्रीनाभेयविभुप्रसादवशतः साम्मुख्यमेवाऽधुना ॥ ३९ ॥
तस्यानुजश्च जगति प्रथितः पृथिव्यामव्याजपौरुषगुणप्रगुणीकृतश्रीः ।
श्रीतेजपाल इति पालयति क्षितीन्दुमुद्रां समुद्ररसनावधिगीतकीर्त्तिः ॥ ४० ॥
समुद्रत्वं श्लाघेमहि महिमधाम्नोऽस्य बहुधा
यतो भीष्मग्रीष्मोपमविषमकालेप्यजनि यः ।
क्षणेन क्षीणायामितरजनदानोदकततौ
दयावेलाहेलाद्विगुणितगुणत्यागलहरिः ॥ ४१ ॥
यद्व्यापयस्य पन्थास्तपस्विनां ग्रामशासनोद्धारात् ।
येनापनीय नवकरमनवकरः कारयाञ्चक्रे ॥ ४२ ॥

पुण्योद्गमविलासलालसधिया येनात्र शत्रुञ्जये
श्रीनन्दीश्वरतीर्थमर्पितजगत्पावित्र्यमाद्रियितम् ।
एतद्वानुपमाम्बरः परिसरोद्देशो शिलासञ्चय-
व्यानकोकनवन्धमुकुरपयःकल्लोलसङ्गमम् ॥ ४३ ॥
स्फुटस्फटिकदर्पणप्रतिमतामिदं गाहते
सुधाकृतसुधाकरच्छविपवित्रनीरं सरः ।
दिवाकरसरोरुहप्रकरलक्ष्यतो लक्ष्यते
यदत्र सरिदालवादनविम्बताडम्बरः ॥ ४४ ॥
शत्रुञ्जये यः सरसीं निवेश्य श्रीरैवताद्रौ च जडाधराणाम् ।
ग्रामस्य दानेन करं निवार्य महस्य सन्तापमपाचकार ॥ ४५ ॥
क्षोणीपीठमिवद्रजःकणमिवत्पानीयबिन्दुः पतिः
सिन्धूनामिवदद्रुलं विवदियत्शाला च कालस्थितिः ।
इत्थं तथ्यमयैति यस्त्रिभुवने श्रीवस्तुपालस्य तां
धर्मस्थानपरम्परां गणयितुं शङ्के न सोऽपि क्षमः ॥ ४६ ॥
एतत्सुवर्णरचितं विश्वालङ्करणमनणुगुणरत्नम् ।
महाधीश्वरचरितं हृतदुरितं कुरुत हृदि संतः ॥ ४७ ॥
श्रीनागेन्द्रमुनीन्द्रगच्छतरणिः श्रीमान्महेन्द्रप्रभु-
र्जज्ञे क्षान्तिसुधानिधानकलशः पुण्याब्धिचन्द्रोदयः ।
सम्मोहोपनिपातकातरतरे विश्वेऽत्र तीर्थेशितुः
सिद्धान्तोऽप्यविभेद्यतर्कविषमं यं दुर्गमाशिश्रिये ॥ ४८ ॥
तत्सिंहासनपूर्वपर्वतशिरःप्रान्तोदयः कोऽप्यभू-
द्भास्यानल्पसमस्तदुस्तमतमाः श्रीशान्तिसूरिप्रभुः ।
प्रत्युज्जीवितदर्शनश्रुतिलसद्व्योमपद्माकरं
तेजश्छन्नदिगम्बरं विजयते तथस्य लोकोत्तरम् ॥ ४९ ॥
आनन्दसूरिरिति तस्य बभूव शिष्यः
पूर्वापरः शमधनोऽमरचन्द्रसूरिः ।
धर्मद्विपस्य दशनाविव पापवृक्ष-
क्षोदक्षमौ जगति यौ विशदौ विभातः ॥ ५० ॥
अस्ताघवाङ्मयपयोनिधिमन्दराद्रि-
मुद्रापुषोः किमनयोः स्तुमहे महिम्नः ।

बाल्येऽपि निर्दलितवादिगजौ जगाद
यौ व्याघ्रसिंहशिशुकाविति सिद्धराजः ॥ ५१ ॥
सिद्धान्तोपनिषन्निपण्णहृदयो धीजन्मसूस्तत्पदे
पूज्यः श्रीहरिभद्रसूरिरभवच्चारित्रिणामग्रणीः ।
भ्रान्त्या शून्यमनाश्रयैरिव चिराद्यस्मिन्नवस्थानतः
सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति ख्यातिर्वितेने गुणैः ॥ ५२ ॥
श्रीविजयसेनसूरिस्तत्पट्टे जयति जलधरध्वानः ।
यस्य गिरो धारा इव भवदवभवदवयुविभवभिदः ॥ ५३ ॥
पद्मासराह्वनराजविहारतीर्थे
प्रालेयभूमिधरभूतिधुरन्धरेऽस्मिन् ।
साक्षादधःकृतभवा तटिनीव यस्य
व्याख्येयमच्युतगुरुक्रमजा विभाति ॥ ५४ ॥
भवोद्भटवनावनीविकटकर्मवंशावलि-
च्छिदोच्छलितमौक्तिकप्रतिमकीर्तिकर्णाम्बरम् ।
असिश्रियमशिश्रियद्वितनभीव्रतं यद्व्रतं
क्षितौ विजयतामयं विजयसेनसूरिर्गुरुः ॥ ५५ ॥
शिष्यं तस्य प्रशस्यप्रशमगुणनिधिं रम्यदारण्यदाव-
ज्वालाजिह्वालदीप्तिर्भविकजनविपद्वह्नियादः कपर्दी ।
देवी चाम्बा निशीथे समसमयमुपागत्य हर्षाश्रुवर्षा-
मेघश्रेयःसुभिक्षाविति निजगदतुर्गद्गदोद्दामनादम् ॥ ५६ ॥
नाभूवन्कति नाम सन्ति कति नो नो वा भविष्यन्ति के
किं न क्वापि कदापि सद्गुरुकः श्रीवस्तुपालोपमः ।
यत्रैवं प्रहरप्रहर्निशमहो सर्वोभिमारोऽतुरो
येनायं विजितः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवम् ॥ ५७ ॥
तस्मादस्य यशस्विनः सुचरितं श्रीवस्तुपालस्य य-
द्वाचास्माकममोघया किल यथाप्यश्रीकृतं सर्वथा ।
त्वं श्रीमद्गुरुवत्स प्रथय तत् पीयूषमर्यङ्कुरैः
वर्णैर्यत्र भारती समभव[illegible]यते ॥ ५८ ॥
इत्युक्त्वा गतयोस्तयोरथ पथो दृष्टः प्रमाणक्षणे
विज्ञाप्य स्वगुरोः पुरः सविनयं नम्रीभवन्मौलिना ।

[illegible]

[illegible] ॥ ५९ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ६० ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ६१ ॥

[illegible] ॥ ६२ ॥

इति श्रीविजयसेनसूरिशिष्यश्रीमन्नुदयप्रभसूरिविरचिते श्रीधर्माभ्युदयनाम्नि श्रीसङ्घपतिचरिते महाकाव्ये श्रीशत्रुञ्जयतीर्थयात्रोत्सववर्णनो नाम पञ्चदशः सर्गः ।

गुणमणिगणं यदेतद्विरचितमुचितं बहुभर्तुश्चरित्रं
स्वयं पावित्र्यपात्रं पथिकजनमनःखेदविच्छेदहेतुः ।
अस्मिन्नारब्धगाथाप्रसरसरसवतीं सत्कथां पान्थसार्थाः
प्राप्य श्रीवस्तुपाल प्रवरनवरसास्वादमास्वादयन्ति ॥ १ ॥

श्रीशारदैकसदनं हृदयालयः के नो सन्ति हन्त सकलासु कलासु निष्णाः ।
सारपरस्य दृष्टो सुकवित्वतत्त्वबोधाय बुद्धिविभवस्तु न वस्तुपालात् ॥ २ ॥

नैव व्यापारिणः के विदधति करणग्रामसात्मैकवश्यं
लेभे यशोगणिकैः कलमलमलं केवलं वस्तुपालः ।
आकल्पस्थायि धर्माभ्युदयनवमहाकाव्यनाम्ना यदीयं
विश्वस्यानन्दलक्ष्मीमिति दिशति यशोधर्मरूपं शरीरम् ॥ ३ ॥

APPENDIX II.

रेवयकप्पसंखेवो

सिरिनेमिजिणं सिरसा नमिउं रेवयगिरीसकप्पंमि।
सिरिवइरसीसभणिअं जहा य पालित्तएणं च ॥ १ ॥

छत्तासिलाइसमीवे सिलासणे दिक्खं पडिवन्नो नेमी, सहसंबवणे केवलनाणं, सरकारामे देसणा, अवलोअणं उज्जसिहरे निव्वाणं। रेवयमेहलाए [illegible] तत्थ कल्लाणत्तिगं काऊण सुवन्नरयणपडिमालंकिअं चेइअत्तिगं जीवंतमिणो अंबादेविं च कारेइ। इंदो वि वज्जेण गिरिं कोरेऊण सुवन्नबलाणं रूप्पमयं चेइअं रयणमया पडिमा पमाणवन्नोववेया, सिहरे अंबा रंगमंडवे अकलोअणसिहरं बलाणयमंडवे संबो एयाइं कारेइ। सिद्धविणायगो पडिहारो तप्पडिरूवं श्रीनेमिमुखात् निर्वाणस्थानं ज्ञात्वा निर्वाणादनन्तरं [illegible] विअं। तहा सत्त जायवा दामोयराणुरूया कालमेह १ मेहनाद २ गिरिविदारण ३ कपाड ४ सिंहनाद ५ खोडिक ६ रेवया ७ तिव्वतवेणं [illegible] निव्वाणा उववन्ना। तत्थ य मेहनादो समद्दिट्ठी नेमिपयभत्तिजुत्तो [illegible] गिरिविदारणेणं कंचणबलाणयंमि पंच उक्कारा विउव्विआ। तत्थेगं [illegible] उत्तरदिसाए सत्तहिअसयकमेहिं गुहा। तत्थ य उववासतिगेणं [illegible] मिलं उप्पाडिऊण मज्झे गिरिविदारणपडिमा। तत्थ य कमपण्णासं बलदेवेणं कारिअं सामयजिणपडिमारूवं नमिऊण, उत्तरदिसाए [illegible] वारंतिगं। पढमवारिआए कमसयतिगं गंतूण, गोदोहिआसणेणं [illegible] उववासपंचगं भमरूवं दाऊणं सत्तेणं उप्पाडिऊणं, कम्मसत्ताओ पविसिऊण, बलाणयमंडवे इंदादेसेण पणयजणरक्खकारिणं अंबादेविं [illegible] ठावेत्तं। तत्थट्ठिएणं सिरिमुखनाहो नेमिजिणिंदो [illegible] एगं पायं पूइत्ता, सयंवरवारीए अट्ठो कमपालीगं [illegible] कमसत्तसएहिं पूओ। तत्थ वरहंसट्ठिअसेण इहावि [illegible] दंसेत्तो। [illegible] अंबाएसेण य अन्नहा। [illegible] तत्थ य अंबाएसओ [illegible] विवरं। तत्थ [illegible] सिद्धखाइएणं [illegible] संगुहसत्तगं [illegible] [illegible] उवगहिए। तत्थ य [illegible]

अंबाएसेण पूयणेण बलिविहाणेणं गिण्हियव्वं । तहा य जुण्णकूडे उववास-तिगं काऊण सरलमग्गेण बलिपूअणेणं सिद्धविणायगो उवलब्भइ । तत्थ य चिंतिअसिद्धी दिनमेगं ठाएयव्वं । जइ तहा पच्चक्खो हवइ तहा रायमईगुहाए कमसएणं गोदोहिआए रसकूविआ कसिणचित्तपवल्ली राइमईए पडिमा रयणमया अंबाया रूप्पमयाओ अणेगओसहीओ अ चिट्ठंति । तह छत्तसिलाघंटसिलाकोडिसिलातिगं पण्णत्तं । छत्तसिलं मज्झं मज्झेणं कणयवल्ली सहस्संबवणमज्झे रयणसुवण्णमयचउवीसं लक्खारामे बावत्तरीचउवीसजिणाण गुहा पण्णत्ता । कालमेहस्स पुरओ सुवण्णवालुआए नईए सट्ठकमसयतिगेण उत्तरदिसाए गमित्ता गिरिगुहं पविसिऊण उदए पहवणं काऊण, विए उववासपओएहिं दुवारमुग्घाडेइ । मज्झे पढमदुवारे सुवण्णखाणी, दुइअदुवारे रयणखाणी, संघहेउं अंबाए विउव्विआ । तत्थ पण कण्हभंडारो । अण्णो दामोदरसमीये । अंजणसिलाए अहोभागे रयणसुवण्णधूली पुरिसवीसेहिं पण्णत्ता ।

तस्सत्थमणे मंगलयदेवदालीय संतु रससिद्धी ।
सिरिवइरोवक्खायं संघसमुद्धरणकज्जंमि ॥
सस्सकडाहं मज्झे गिण्हित्ता कोडिबिंदुसंयोगे ।
घंटसिलाचुण्णयजोयणाओ अंजणसिद्धी ।
विज्जापाहुडुद्देसाओ रेवयकप्पसंखेवो सम्मत्तो ॥

APPENDIX II.

रेवयकप्पसंसेवो

सिरिनेमिजिणं सिरसा नमिउं रेवयगिरीमकप्पंमि।
सिरियइरसीसभणिअं जहा य पालित्ताएणं च ॥ १ ॥

छत्तसिलाइसमीवे सिलामणे दिक्खं पडिवन्नो नेमी, सहसंबयणे केवलनाणं, लक्खारामे देसणा, अवलोअणं उज्जमिहरे निव्वाणं। रेवयमेहलाए कण्हो तत्थ कल्लाणतिगं काऊण सुवन्नरयणपडिमालंकिअं चेइअतिगं जीवंतसामिणो अंबादेविं च कारेइ। इंदो वि यन्नेण गिरिं कोरेऊण सुवन्नवलाणयं रूप्पमयं चेइअं रयणमया पडिमा पमाणवन्नोववेया, सिहरे अंबा रंगमंडवे अवलोअणसिहरं वलाणयमंडवे संवो एयाइं कारेइ। सिद्धविणायगो पडिहारो; तप्पडिरूवं श्रीनेमिमुखात् निर्वाणस्थानं ज्ञात्वा निर्वाणादनन्तरं कण्हेण ठाविअं। तहा सत्त जायवा दामोयराणुरूवा कालमेह १ मेहनाद २ गिरिविदारण ३ कपाट ४ सिंहनाद ५ खोडिक ६ रेवया ७ तिव्वतवेणं कीडणेणं खित्तवाला उववन्ना। तत्थ य मेहनादो समद्दिट्ठी नेमिपयभत्तिजुत्तो चिट्ठइ। गिरिविदारणेणं कंचणवलाणयंमि पंच उद्धारा विउव्विआ। तत्थेगं अंबापुरओ उत्तरदिसाए सत्तहिअसयकमेहिं गुहा। तत्थ य उववासतिगेणं बलिविहाणेणं सिलं उप्पाडिऊण मज्झे गिरिविदारणपडिमा। तत्थ य कमपण्णासं गए बलदेवेणं कारिअं सासयजिणपडिमारूवं नमिऊण, उत्तरदिसाए पण्णासकमं धारीतिगं। पढमवारिआए कमसयतिगं गंतूण, गोदोहिआसणेणं पविसिऊण, उपवासपंचगं भमररूवं दारूणं सत्तेणं उप्पाडिऊणं, कम्मसत्ताओ अहोमुहं पविसिऊण, वलाणयमंडवे इंदादेसेण धणयजक्खकारियं अंबादेविं पूइऊण, सुवण्णजालीए ठायव्वं। तत्थट्ठिएणं सिरिमूलनाहो नेमिजिणिंदो वंदिअव्वो। बीअवारीए एगं पायं पूइत्ता, सयंवरवावीए अहो कमचालीसं गमित्ता, तत्थ य मज्झवारीए कमसत्तसएहिं कूवो। तत्थ वरहंसट्ठिअत्तेण इहावि मूलनायगो वंदेयव्वो। तइअवारीए मूलदुवारपवेसो अंबाएसेण न अन्नहा। एवं कंचणवलाणयमग्गो। तत्थ य अंबापुरओ हत्थवीसाए विवरं। तत्थ य अंबाएसेण उववासतिगेण सिलुग्घाडणेण हत्थवीसाए संपुडसत्तगं समुग्गयपंचगं अहो रसकूविआ अमावसाए अमावसाए उग्घडइ। तत्थ य उववासतिगं काऊण

अंबाएसेण पूयणेण बलिविहाणेणं गिण्हियव्वं । तहा य जुण्णकूडे उववास-
तिगं काऊण सरलमग्गेण बलिपूअणेणं सिद्धविणायगो उवलब्भइ । तत्थ य
चिंतिअसिद्धी दिनमेगं ठाणयव्वं । जइ तहा पच्चक्खो हवइ तहा रायमईगुहाए
कमसएणं गोदोहिआए रसकूविआ कसिणचित्तयवल्ली राइमईए पडिमा
रयणमया अंबाया रूप्पमयाओ अणेगओसहीओ अ चिट्ठंति । तह छत्तसिलाघं-
टसिलाकोडिसिलातिगं पण्णत्तं । छत्तसिलं मज्झं मज्झेणं कणयवल्ली सहस्संब-
णमज्झे रयणसुवण्णमयचउवीसं लक्खारामे वावत्तरीचउवीसजिणाण गुहा प-
ण्णत्ता । कालमेहस्स पुरओ सुवण्णवालुआए नईए सट्ठकमसयतिगेण उत्तरदि-
साए गमित्ता गिरिगुहं पविसिऊण उदए ण्हवणं काऊण, विए उववासपओएहिं
तारमुग्घाडइ । मज्झे पढमदुवारे सुवण्णखाणी, दुइअदुवारे रयणखाणी,
तइअदुवारे अंबाए विउव्विआ । तत्थ पण कण्हभंडारो । अण्णो दामोदरसमीपे
अंजणसिलाए अहोभागे रयणसुवण्णधूली पुरिसवीसेहिं पण्णत्ता ।

तस्सत्थमणे मंगलयदेवदालीय संतु रससिद्धी ।
सिरिवइरोयकायं संघसमुद्धरणकज्जंमि ॥
सस्सकडाहं मज्झे गिण्हित्ता कोडिबिंदुसंयोगे ।
घंटसिलाचुण्णयजोयणाओ अंजणसिद्धी ।
विज्जापाहुडुद्देसाओ रेवयकप्पसंखेवो सम्मत्तो ॥

APPENDIX III.

श्रीउज्जयन्तस्तवः

नामभिः श्रीरैवतकोज्जयन्तागैः प्रणामिनम् ।
श्रीनेमिनाथिनं स्तौमि गिरिनारं गिरीश्वरम् ॥ १ ॥
स्थाने देशः सुराष्ट्राख्यां बिभर्ति भुवनेष्वमी ।
यद्भूमिकामिनीभाले गिरिरेष विशेषकः ॥ २ ॥
शृङ्गारयन्ति स्वङ्गारदुर्गं श्रीऋषभादयः ।
श्रीपार्श्वस्नेजलपुरं भूषितैनदुपत्यकम् ॥ ३ ॥
योजनद्वयतुङ्गेऽस्य शृङ्गे जिनगृहावलिः ।
पुण्यराशिरिवाभाति शरचन्द्रांशुनिर्मला ॥ ४ ॥
सौवर्णदण्डकलशामलसारकशोभितम् ।
चारु चैत्यं चकास्त्यस्योपरि श्रीनेमिनः प्रभोः ॥ ५ ॥
श्रीशिवासूनुदेवस्य पादुकाऽत्र निरीक्षिता ।
स्पृष्टाऽर्चिता च शिष्टानां पापव्यूहं व्यपोहति ॥ ६ ॥
प्राज्यं राज्यं परित्यज्य जरत्तृणमिव प्रभुः ।
बन्धून्विधूय च स्निग्धान् प्रपेदेऽत्र महाव्रतम् ॥ ७ ॥
अत्रैव केवलं देवः स एव प्रतिलब्धवान् ।
जगज्जनहितैषी स पर्यणैषीच्च निर्वृतिम् ॥ ८ ॥
अत एवात्र कल्याणत्रयमन्दिरमादधे ।
श्रीवस्तुपालो मन्त्रीशश्चमत्कारितभव्यहृत् ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रबिम्बपूर्णेन्द्रमण्डपस्था जना इह ।
श्रीनेमेर्मज्जनं कर्तुमिन्द्रा इव चकासति ॥ १० ॥
गजेन्द्रपदनामास्य कुण्डं मण्डयते शिरः ।
सुधाविधैर्जलैः पूर्णं स्नानार्हत्स्नपनक्षमैः ॥ ११ ॥
शत्रुञ्जयावतारेऽत्र वस्तुपालेन कारिते ।
ऋषभः पुण्डरीकोऽष्टापदो नन्दीश्वरस्तथा ॥ १२ ॥
सिंहयाना हेमवर्णा सिद्धबुद्धसुतान्विता ।
कम्राम्रलुम्बिभृत्पाणिरत्राम्बा सङ्घविग्रहृत् ॥ १३ ॥

श्रीनेमिपत्पद्मपूतमवलोकननामकम् ।
विलोकयन्तः शिखरं यान्ति भव्याः कृतार्थताम् ॥ १४ ॥
शाम्बो जाम्बवतीजातस्तुङ्गे शृङ्गेऽस्य कृष्णजः ।
प्रद्युम्नश्च महाद्युम्नस्तेपाते दुस्तपं तपः ॥ १५ ॥
नानाविधौषधिगणा जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु ।
किञ्च घण्टाक्षरच्छत्रशिलाः शालन्त उच्चकैः ॥ १६ ॥
सहस्राम्रवणं लक्षारामोऽन्येपि वनव्रजाः ।
मयूरकोकिलाभृङ्गीसङ्गीतिसुभगा इह ॥ १७ ॥
न स वृक्षो न सा वल्ली न तत्पुष्पं न तत्फलम् ।
नेक्ष्यतेऽत्राभियुक्तैर्यदित्येतिह्यविदो विदुः ॥ १८ ॥
राजीमती गुहागर्भे कैर्न नामात्र वन्द्यते ।
रथनेमिर्यथोन्मार्गात्सन्मार्गमवतारितः ॥ १९ ॥
पूजास्नपनदानानि तपश्चात्र कृतानि वै ।
सम्पद्यन्ते मोक्षसौख्यहेतवो भव्यजन्मिनाम् ॥ २० ॥
दिग्भ्रमादपि योऽत्राद्रौ काप्यमार्गेऽपि सञ्चरन् ।
सोऽपि पश्यति चैत्यस्था जिनार्चाः स्नपितार्चिताः ॥ २१ ॥
काश्मीरागतरत्नेन कृष्णाण्ड्यादेशतोऽत्र च ।
लेप्यबिम्बास्पदे न्यस्ता श्रीनेमेर्मूर्तिराद्यमनी ॥ २२ ॥
नदीनिर्झरकुण्डानां ध्वनीनां धीरुयामपि ।
विदाङ्कुरोत्यत्र सङ्ख्याः सङ्ख्यायानपि कः खलु ॥ २३ ॥
आसेचनकल्पाय महातीर्थाय तायिने ।
चैत्यालङ्कृतशीर्षाय नमः श्रीरैवताद्रये ॥ २४ ॥
स्तुतो मयेति सूरीन्द्रवर्णितापृजिनप्रभः ।
गिरिनारस्तारहेमसिद्धिभूमिर्मुदेऽस्तु वः ॥ २५ ॥

इति श्रीउज्जयन्ततवः ॥

APPENDIX VI.

श्रीउज्जयन्तमहातीर्थकल्पः

अत्थि सुरट्ठाविसए उज्जिंतो नाम पव्वओ रम्मो ।
तस्सिहरे आरुहिउं अच्चीए नमह नेमिजिणं ॥ १ ॥
अंबाइअं च देविं पहयणवणगंगपूयदीवेहिं ।
पूइयकयप्पणामा ता जोअह जेण अत्थओ ॥ २ ॥
गिरिसिहरं कुहरकंदरनिज्झरणकलाइविअडकूडेहिं ।
जोएह सत्तवाणं जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ ३ ॥
कंदप्पदप्पकप्पणकुमाइविहवणनेमिनाहस्स ।
निव्वाणमिला नामेण अत्थि भुवणंमि विक्खाया ॥ ४ ॥
तस्स य उत्तरपासे दसधणुहेहिं अहोमुहं विवरं ।
दारंमि तस्स लिंगं अवयाणे धणुह चत्तारि ॥ ५ ॥
तस्स पसुमुत्तगंधो अत्थि रमोपलमएण सयलंपं ।
विंधेहि कुणइ तारं समिकुंदसमुज्जलं सहसा ॥ ६ ॥
पुव्वदिसाए धणुहंतरंमु तस्सेव अत्थि जागवई ।
पाहाणमया दाहिणदिसाए बारसधणूहिं ॥ ७ ॥
दिस्सइ अ तत्थ पयडो हिंगुलवण्णो अ दिव्वपयररसो ।
विंधेइ सव्वलोहे फरिसेणं अग्गिसंगेणं ॥ ८ ॥
उज्जिंते अत्थि नई विहला नामेण पव्वई पडिमा ।
दावेइ अंगुलीए फरिसरसो पव्वईदारं ॥ ९ ॥
सक्कावयार उज्जिंतगिरिवरे तस्स उत्तरे पासे ।
सोवाणपंतिआए पारेवयवण्णिया पुढवी ॥ १० ॥
पंचगव्वेण वड्ढा पिंडीधमिआ करेइ वरतारं ।
फेडइ दरिद्दवाहिं उत्तारइ दुक्खकंतारं ॥ ११ ॥
सिहरे विसालसिंगे दीसंते पायकुट्टिमा जत्थ ।
तस्सासन्ने सिहरे कव्वडहडपासहो तारं ॥ १२ ॥
उज्जिंतरेवयवणे तत्थ य सुद्दारवानरो अत्थि ।
सो वामकण्णछित्तो उग्घाडइ विवरवरदारं ॥ १३ ॥
हत्थसएण पविट्ठो दिक्खइ सोवण्णवण्णिआ रुक्खा ।

नीलरसेण सवंता सहस्सवेही रसो नूणं ॥ १४ ॥
तं गहिऊण निअत्तो हणुवंतं छिवइ वामपाएण ।
सो दहइ वरदारं जेण न जाणइ जणो को वि ॥ १५ ॥
उज्जितसिहरउवरिं कोहंडिहरं खु नाम विक्खायं ।
अवरेण तस्स य सिला तदुभयपासेसु ओसं तु ॥ १६ ॥
तं अयसितिल्लमोसं थंभइ पडिवायवंगिअं वंगं ।
दोगवबाहिहरणं परितुट्ठा अंबिआ जस्स ॥ १७ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णाइ तत्थ पाहाणा ।
तो पिंडि घमिअ संते समसुद्धे होइ वरतारं ॥ १८ ॥
उज्जंते नाणसिला तस्स अहो कणयवण्णिआ पुढवी ।
बोकडयमुत्तपिंडी व्वइरंगारे भवे हेमं ॥ १९ ॥
नाणसिलाकयपुढवी पिंडीवद्धा य पंचगव्वेण ।
हदपाए घसइ रसो सहस्सवेही हवइ हेमं ॥ २० ॥
गिरिवरमासमठिअं आणीयं तिलयिसारणं नाम ।
सिलयड्ढगाढपीडे वे लक्खा तत्थ दम्माणं ॥ २१ ॥
सेणा नामेण नई सुवण्णतित्थंमि लहुअपहाणा ।
पडियाएण य सुयं करिंति हेमं न संदेहो ॥ २२ ॥
विल्लकपंमि नयरे मउहरं अत्थि सेलगं दिव्वं ।
तस्स य मज्झंमि ठिओ गणवइरसकुंडओ उवरिं ॥ २३ ॥
उववासी कयपूओ गणवइओ वल्लिऊण पवररसो ।
पामापेवी अत्थि अ थंभइ वंगं न संदेहो ॥ २४ ॥
सहसासवं ति तित्थं करंजकक्खेण मणहरं सम्मं ।
तत्थ य तुरयापारा पाहाणा तेसि दो भाया ॥ २५ ॥
इक्को पारयभाओ पिट्ठो सुत्तेण अंधमूसाए ।
घमिओ करेइ तारं उत्तारइ दुरकवंतारं ॥ २६ ॥
अवलोअणसिहरसिला अवरेणं तत्थ वररसो सवइ ।
सुअपरकसरिसवण्णो करेइ सुयं वरं हेमं ॥ २७ ॥
गिरिपज्जुसवयारे अंबिअआसमपयं च नामेण ।
तत्थ वि पीआ पुहवी हिमपाए होइ वरहेमं ॥ २८ ॥
नाणसिला उज्जिते तस्स य मूलंमि मट्टिआ लीआ ।

साहामिअलेवेणं छायामुक्कं कुणइ हेमं ॥ २९ ॥
उज्जिंतपढमसिहरे आरुहिउं दाहिणेण अवयरिउं ।
तिण्णि धणूसयमित्तो पूईकरं जं बिलं नाम ॥ ३० ॥
उग्घाडिउं बिलं दिक्खिऊण निउणेण तत्थ गंतव्वं ।
दंडंतराणि बारस दिव्वरसो जंबुफलसरिसो ॥ ३१ ॥
जउ घोलिअंमि भंडे सहस्सभाएण विंधए तारं ।
हेमं करइ अवस्सं हट्टं तं सुंदरं सहसा ॥ ३२ ॥
कोहंडिभयणपुव्वेण उत्तरे जाव तावसा भूमी ।
दीसइ अ तत्थ पडिमा सेलमया वासुदेवस्स ॥ ३३ ॥
तस्सुत्तरेण दीसइ हत्थेसु अ दससु पव्वई पडिमा ।
अवराहमुहरअंगुट्ठिआइ सा दायए विवरं ॥ ३४ ॥
नवधणुहाइं पविट्ठो दिक्खइ कूडाइं दाहिणुत्तरओ ।
हरिआललक्खवण्णो सहस्सवेही रसो नूणं ॥ ३५ ॥
उज्जिंते नाणसिला विक्काया तत्थ अत्थि पाहाणं ।
ताणं उत्तरपासे दाहिणय अहोमुहो विवरो ॥ ३६ ॥
तस्स य दाहिणभाए दसधणुभूमीइ हिंगुलुयवण्णो ।
अत्थि रसो सयवेही विंधइ सुचं न संदेहो ॥ ३७ ॥
उसहरिसहाइकूडे पाहाणा ताण संगमो अत्थि ।
गयवरलिंडाकिण्णा मज्झे फरिसेण ते वेही ॥ ३८ ॥
जिणभवणदाहिणेणं नउई धणुहेहिं भूमिजलुअयरी ।
तिरिमणुअरत्तविंडा पडिवाए तंवए हेमं ॥ ३९ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णा य तत्थ पाहाणा ।
सुचस्स पंचवेहं सवंति धमिआ तयं सिग्घं ॥ ४० ॥
इय उज्जयंतकप्पं अविअप्पं जो करेइ जिणभत्तो ।
कोहंडिकयपणामो सो पावइ इच्छिअं सुक्खं ॥ ४१ ॥

श्रीउज्जयंतमहातीर्थकल्पः

APPENDIX V

रैवतकल्पः

पच्छिमदिसाए सुरट्ठाविसए रेवयपव्वयरायसिहरे सिरिनेमिनाहस्स भवणं उज्जुंगसिहरं अच्छइ। तत्थ किर पुव्विं भयवओ नेमिनाहस्स दिव्वमई पडिमा आसि। अन्नया उत्तरदिसाविभूसणकन्हीरदेसाओ अजियसेणनामाणो दुन्नि बंधवा संघाहिवई होऊण गिरिनारमागया। तेहिं रयणमयराओ घणसुसिणरससंपूरिअकलसेहिं पहवणं कयं। गलिआ तेणमई सिरिनेमिनाहपडिमा। तओ अईव अप्पाणं सोअंतेहिं तेहिं आहारो पच्चक्खाओ। इहलोगसुहवत्थाणंतरं सग्गमागया भगवई अंबिआ देवी। उट्ठाविओ संघवई। तेण देविं दट्ठूण जयजयसद्दो कओ। तओ भणिओ देवीए इमं बिंबं गिण्हिऊण पुरं पच्छा न पिच्छिअव्वं। तओ अजिअसंघाहिवइणा एगागिणुट्ठिओ रयणमयं सिरिनेमिबिंबं कंचणबलाणए नीओ। पहसमयणासन्नं देवीए आरोविओ आहरिसभरनिब्भरेणं संघवइणा पच्छाभागो दिट्ठो। तिओ तओव बिंबं निहो। देवीए कुसुमवुट्ठी कया जयजयसद्दो अ कओ। एवं च बिंबं बहुसाहुपुरिसाए अहिणवपकारिअभवणे पच्छिमदिसामुहे ठविओ संघवइणा। तत्थ पाहरुत्तरं काउं अजिओ सयंगओ निअदेसं पओ। कालिवाले वालुसचिवं जणं जणिऊण हालहलतमणिमयबिंबस्स वेदी अंबिआदेवीए साहणा। पुव्विं च गुज्जरधराए जयसिंहदेवेणं खंगारराएं हणिऊण सत्तणो देसाहिवो ठाविओ। तेण य अहिणवं नेमिजिणंदभवणं एगारसरयणवंचारीए विक्कमरायवच्छरे कारिअं। मालवदेससुहमंडणेणं साहुभावेणं सोवण्णो आमलसारं कारिअं। चालुक्कवंसिसिरिकुमारपालनरिंदसंठविआसोरट्ठदेसाहिवेण सिरिसिरिवाहडकुलुब्भवेण बारससयवीसे विक्कमसंवच्छरे पच्छा कारावेओ। सव्वाहुणा पवाहेण अंतराले पवा भराविआ। पच्छाए चउहेहिं जणेहिं हत्थिदंतिकाए हत्थारामो दीसइ। अणहिलवाडपट्टणे य पोरवाडकुलुब्भवेण आसराजकुमारदेविसणया गुज्जरधरासिरिवरसिरिवीरधवलरज्जपुरवरे वत्थुपालतेजपालनामधिज्जा दो भायरो मंतिवरा हुत्था। तत्थ तेजपालमंतिणा सिरिनेमिनाहे निअनामंकिअं तेजपुरं पवरगहमहपवामंदिरआरामाइअं निम्मविअं। तत्थ य वाणपवामंकिअं आरामाइविसए सिरिनेमिनाहभवणं कारविअं। जणणीए य कुमरदेवि त्ति नामंकिअं निम्मविअं। तेजपुरस्स पुव्वदिसाए इमाणि तित्थाणि

नाम दुग्गं जुगाइनाहप्पमुहजिणमंदिररेहिल्लं विज्जइ। तस्स य तिण्णि नामधिज्जाइं पसिद्धाइं। तं जहा उग्गसेणगढं ति वा खंगारगढं ति वा ज्जुण्णदुग्गं ति वा। गढस्स वाहिं दाहिणदिसाए चउरिआवेईलहुअओवरिआपसुवाडयाइठाणाइं चिट्ठंति। उत्तरदिसाए विसालथंभसालासोहिओ दसदसारमंडवो। गिरिदुवारे य पंचमो हरी दामोअरो सुवण्णरेहानईपारे वट्टइ। कालमेहसमीवे चिराणुवत्ता संघस्स वोलाविआ। तेजपालमंतिणा मिल्हाविआ। कमेण उज्जयंतसेले वत्थुपालमंतिणा सित्तुज्जावयारभवणं अट्ठावयसंमेअमंडवो कवडिजक्कमरुदेविपासाया य काराविआ। तेजपालमंतिणा कल्लाणत्तयचेइअं, इंदमंडवो अ देपालमंतिणा उद्धाराविओ। एरावणगयपयमुहाअलंकिअं गइंदपयकुंडं अच्छइ। तत्थ अंगं पक्खालित्ता दुक्काण जलंजलिं दिंति जत्तागयलोआ। छत्तसिलाकडणीए सहस्संबवणारामो, जत्थ भगवओ जायवकुलपईयस्स सिवासमुद्दविजयनंदणस्स दिक्कानाणनिव्वाणकल्लाणयाइं संजाआइं। गिरिसिहरे चडित्ता अंबिआदेवीए भवणं दीसइ। तत्तो अवलोअणं सिहरं। तत्थट्ठिएहिं फिर दसदिसाओ नेमिसामी अवलोइज्जति। तओ पढमसिहरे संबकुमारो बीअसिहरे पज्जुण्णो। इत्थ पव्वए ठाणे ठाणे चेइएसु रयणसुवण्णमयजिणबिंबाइं निबद्धविअबिआइं दीसंति। सुवण्णमेयणी अ अणेगधाउरसभेइणी दिप्पंती दीसइ। रत्तिं च दीवउव्व पज्जलंतीओ ओसहीओ अवलोइज्जंति। नाणाविहतरुवरयहिदलपुप्फफलाइं पए पए उवलब्भंति। अणवरयपझरंतनिज्झरणाणं खलहलाराया य मत्तकोपलभमरझंकारा य सुणंति त्ति।

उज्जयंतमहातित्थकप्पसेसलवो इमो।
जिणप्पहमुणिंदेहिं लिहिओत्थ जहासुअं॥

श्रीरैवतकल्प. समाप्तः

APPENDIX VI

अम्बिकादेवीकल्पः

सिरिउज्जयंतसिहरसेहरं पणमिऊण नेमिजिणं ।
कोहंडिदेविकप्पं लिहामि बुद्धोवएसाओ ॥

अत्थि सुरट्ठाविसये धणकणयसंपयजणसमिद्धं कोडीनारं नाम नयरं । तत्थ सोमो नाम रिद्धिसमिद्धो छक्कम्मपरायणो वेयागमपारगामो बंभणो हुत्था । तस्स घरिणी अंबिणी नाम सद्धसीलालंकारभूसियसरीरा आसि । तेसिं विसयसुहमणुहवंताणं उप्पन्ना दुवे पुत्ता पढमो सिद्धो बीओ बुद्ध त्ति । अन्नया सम्मारए पिअरपरंपरं भट्टसोमेणं निमंतिआ बंभणा सक्कदिणे । कत्थ वि ते वेयसुयारन्ति, कत्थ वि आइयन्ति पिण्डपयाणं, कत्थ वि होमं करिंति बहुदेवं च । सम्पाडिआ सालिदालिवंजणपक्कमेअन्नीरन्नपक्कपमुहा जेमणा । अंबिणीए अ सासुआ पहाणं काउं पयट्टा । तम्मि अवसरे एगो साहू मासोववास-पारणए भिक्खट्ठा संपत्तो । तं पलोइत्ता हरिसभरनिब्भरपुलइअंगी उट्ठिआ अंबिणी । पडिलाभिओ तीए मुणिवरो भत्तिबहुमाणपुव्वं अहापवित्तेहिं भत्त-पाणेहिं । जाव गहिअभिक्खो साहू चलिओ ताव सासुआ वि पहाऊण रसवई-ठाणमागया । न पिच्छइ पढममिहं । तओ तीए कुविआए पुट्ठा बहुआ । तीए जहट्ठिए पुत्ते अंबाडिआ सा अज्जूए । जहा पावे किमेयं तए कयं, अज्ज वि देवया न पूइआ अज्ज वि न भुंजाविआ विप्पा अज्ज वि न भरिआइं पिंडाइं अग्गसिहा तए किमत्थं साहुणो दिन्ना । तउ तीए भणिओ सव्वो वि वइअरो सोमभट्टस्स । तेण संकट्ठेण अप्पच्छंदिअ त्ति निवालिआ गिहाओ । सा पडिभवहूमिआ सिद्धं करंगुलीए धरित्ता बुद्धं च कडीए चडावित्ता चलिआ नयराओ बाहिं । पंथे तिसाभिभूएहिं दारएहिं जलं मग्गिआ । जाव सा अंसुजलपुसलोअणा संवुत्ता ताव पुरओ ठिअं सुधम्मसरोवरं तिस्सा अणग्घेणं सीलमाहप्पेणं तक्खणं जलपूरिअं जायं । पाइआ दोन्नि सीअलं नीरं । तओ छुहिएहिं भोअणं मग्गिआ बालएहिं । पुरओ सुकसहयारतरू तक्खणं फलि-ओ । दिन्नाइं फलाइं । अंबिणीए तेसिं जाया ते सुत्था । जाव सा पूअठाणाए पीसमइ ताव जं जायं तं निसामेह जं तीए बालयाई पढमं जेमाविआ तेसिं भुत्तु-तरं पत्तलीओ तीए बाहिं उज्झिआओ आसि ताओ सीलमाहप्पाकंपिअमणाए सासणदेवयाए सोवन्नकोलयरूवाओ कयाओ । जे अ उच्छिट्ठमित्थकणा भूमीए पडिआ ते मुत्तिआइं संपाइआइं । अग्गसिहा य सिहरेसु

दंसिआ । एअमच्छभुअं सासुए दट्ठूण निवेईअं सोमविप्पस्स सिद्धं च जहा वच्छ सुलक्खणा पइव्वया य एसा वहू ता पचाणोहिं एअं कुलहरं ति जणणीपेरिओ पच्छायावानलडज्झंतमाणसो गओ वहुयं वालेउं सोमभट्टो। तीए पिट्ठओ आगच्छन्तं दिअवरं निअवरं दट्ठूण दिसाओ पलोईआओ । दिट्ठओ अग्गओ मग्गकूवओ। तओ जिणवरं मणे अणुसरिऊण सुपत्तदाणं अणुमोअंतीए अप्पा कूवंमि झंपाविओ । सुहज्झवसाणेण पाणे चइऊण ऊप्पन्ना कोहंडविमाणे सोहम्मकप्पहिट्ठे चउहिं जोअणेहिं अंबीअदेवी नाम महड्ढिआ देवी। विमाणनामेणं कोहंडी वि भन्नइ । सोमभट्टेण वि तीसे महासईए कूवे पडणं दट्ठुं अप्पा तत्थेव झंपाविओ । सो अ मरिऊण तत्थेव जाओ देवो । आभिओगिअकम्मुणा सिंहरूवं विउव्वित्ता तीए चेव वाहणं जाओ । अन्ने भणंति अंबिणी रेयगसिहराओ अप्पाणं झंपावित्ता तप्पिट्ठओ सोमभट्टो वि तहेव मओ । सेसं तं चेव । सा य भगवई चउब्भुआ दाहिणहत्थेसु अंबलुंबि पासं च धारेइ वामहत्थेसु पुण पुत्तं अंकुसं च धारेइ उत्तत्तकणयसवण्णं च वण्णमुव्वहइ सरीरे। सिरिनेमिनाहस्स सासणदेवय त्ति निवसइ रेयइगिरिसिहरे। मउडकुंडलमुत्ताहलहाररयणकंकणनेउराइमव्वंगीणाभरणरमणिज्जा पूरेइ सम्मदिट्ठीण मणोरहे निवारेइ विग्घसंघायं । तीए मंतमंडलाईणि आरोहित्ताणं भविआणं दीसंति अणेगरूवाओ रिद्धिसिद्धिओ, न पहवंति भूअपिसायसाइणीविसमग्गहा, संपज्जंति पुत्तकलत्तमित्तधणधन्नरज्जसिरिओ त्ति ।

अंबिआमंता इमे ।

वयवीअमकुलकुलजलहरिहयअकंतपेआइं ।
पणइणिवायावसिओ अंबिअदेवीइ अह मंतो ॥ १ ॥
धुयभुवणदेवि संवुड्ढिपामअंकुसनिलोअपंचसरा ।
णहसिहिकुलकलअज्झासियमायापरपणामपयं ॥ २ ॥
वाणुब्भवं निलोअं पामसिणीहाउ महअवरासस ।
कुहंइअंबिआए नमु त्ति आराहणामंतो ॥ ३ ॥

एवं अन्ने वि अंबादेवीमंता अप्पपरक्खा वि सया सुरमणा जुग्गा मग्गसेमाइगोअरा य बहवो चिट्ठंति । ते अ सव्वा मंडलाणि अ इत्थ न भणिआणि गंथवित्थरभएणं ति मुक्कमुद्दाओ नायव्वाणि ।

एअं अंबियदेवीकप्पं अविअप्पचित्तविसीणं ।
वायंतमुणंताणं पुव्वंति समीहिआ अत्था ॥ १ ॥

इति श्रीअंबिकादेवीकल्पः ।

APPENDIX VII.

श्रीगिरिनारकल्पः ।

वरधर्मकीर्तिविद्यानन्दमयो यत्र विनतदेवेन्द्रः ।
स्वस्तिश्रीनेमिरसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ १ ॥
नेमिजिनो यदुराजीमतीत्य राजीमतीत्यजनतो यम् ।
शिश्राय शिवायासौ गिरि० ॥ २ ॥
स्वामी छत्रशिलान्ते प्रव्रज्य यदुचशिरसि चक्राणः ।
ब्रह्मावलोकनमसौ गिरि० ॥ ३ ॥
यत्र सहस्राम्रवणे केवलमाप्यादिशद्विभुर्धर्मम् ।
लक्षारामे सोऽयं गिरि० ॥ ४ ॥
निर्वृतिनितम्बिनीवरनितम्बसुन्दमाप यत्रितम्बस्थः ।
श्रीयदुकुलतिलकोऽयं गिरि० ॥ ५ ॥
युक्त्वा कल्याणत्रयमिह कृष्णो रुक्मिणीरमणबिम्बम् ।
चैत्यत्रयमकृताऽयं गिरि० ॥ ६ ॥
पविना हरिर्यदन्तर्विधाय विवरं व्यधाद्रजतचैत्यम् ।
काञ्चनबलानकमयं गिरि० ॥ ७ ॥
तन्मध्ये रत्नमयीं प्रमाणवर्णान्वितां चकार हरिः ।
श्रीनेमेर्मूर्तिमसौ गिरि० ॥ ८ ॥
स्वकृतैतद्बिम्बयुतं हरिप्रियिम्बं सुराः समयरत्नो ।
न्यदधन्त यदन्तरसौ गिरि० ॥ ९ ॥
शिखरोपरि यत्राम्बाऽवलोकनशिरसि रङ्गमण्डपके ।
शाम्बो बलानकोऽसौ गिरि० ॥ १० ॥
यत्र प्रद्युम्नपुरः सिद्धिविनायकपुरः प्रतीहारः ।
चिन्तितसिद्धिकरोऽसौ गिरि० ॥ ११ ॥
तत्प्रतिरूपं चैत्यं पूर्वाभिमुखं तु निर्वृतिस्थाने ।
यत्र हरिश्चक्रोऽसौ गिरि० ॥ १२ ॥
तीर्थेतिस्मरणाद् यत्र यादवाः सप्त कालभेदाद्याः ।
क्षेत्रपलाभापुरसौ गिरि० ॥ १३ ॥

विभुमर्चेति मेघरवो वलानकं गिरिविदारणश्चक्रे ।
यत्र चतुर्द्वारमसौ गिरि० ॥ १४ ॥
यत्र सहस्राम्रवणांतरस्ति रम्या सुवर्णचैत्यानाम् ।
चतुरधिकविंशतिरयं गिरि० ॥ १५ ॥
द्वासप्ततिर्जिनानां लक्षारामेऽस्ति यत्र तु गुहायाम् ।
सचतुर्विंशतिकासौ गिरि० ॥ १६ ॥
वर्षसहस्रद्वितयं प्रावर्त्तत यत्र किल शिवाखनोः ।
लेप्यमयी प्रतिमासौ गिरि० ॥ १७ ॥
लेपगमेऽम्बादेशात्प्रभुचैत्यं यत्र पश्चिमाभिमुखम् ।
रत्नोऽस्थापयतासौ गिरि० ॥ १८ ॥
काञ्चनवलानकान्तः समवसृतेस्तन्तुनेह बिम्बमिदम् ।
रत्नेनानीतमसौ गिरि० ॥ १९ ॥
बौद्धनिपिद्धः सङ्घो नेमिनतौ यत्र मन्त्रगगनगतिम् ।
जयचन्द्रमादिशदसौ गिरि० ॥ २० ॥
तारां विजित्य बौद्धान्निहत्य देवानवन्दयत्संघम् ।
जयचन्द्रो यत्रायं गिरि० ॥ २१ ॥
नृपपुरतः क्षपणेभ्यः कुमार्युदितगाथयाम्बयार्प्यत यः ।
श्रीसङ्घाय सदायं गिरि० ॥ २२ ॥
नित्यानुष्ठानान्तस्ततोऽनुसमयं समस्तसङ्घेन ।
यः पठ्यतेऽनिशमसौ गिरि० ॥ २३ ॥
दीक्षाज्ञानध्यानव्याख्यानशिवावलोकनस्थाने ।
प्रभुचैत्यपावितोऽसौ गिरि० ॥ २४ ॥
राजीमतीचन्द्रदरीगजेन्द्रपदकुण्डनागझर्यादौ ।
यः प्रभुमूर्त्तियुतोऽयं गिरि० ॥ २५ ॥
छत्राक्षरघण्टाञ्जनविन्दुशिवशिलादि यत्रहार्यस्ति ।
कल्याणकारणमयं गिरि० ॥ २६ ॥
याकुश्यमात्यसज्जनदण्डेशाद्या अपि व्यधुर्यत्र ।
नेमिभवनोद्धृतिमसौ गिरि० ॥ २७ ॥
कल्याणत्रयचैत्यं तेजःपालो न्यवीविशन्मन्त्री ।
यन्मेघलागतमसौ गिरि० ॥ २८ ॥

शत्रुञ्जयसम्मेताष्टापदतीर्थानि वस्तुपालस्तु ।
यत्र न्यवेशयदसौ गिरि० ॥ २९ ॥
यः षड्विंशतिविंशतिषोडशदशकद्विषोजनाऽभ्रशतम् ।
अरपट्टक उच्छ्रितोऽयं गिरि० ॥ ३० ॥
अद्यापि सावधाना विदधाना यत्र गीतनृत्यादि ।
देवाः श्रूयन्तेऽसौ गिरि० ॥ ३१ ॥
विद्याप्राभृतकोद्धृतपादलिप्तकृतोद्धयन्त्रकल्पादेः ।
इति वर्णितो मयाऽसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ ३२ ॥

इति श्रीधर्मघोषसूरिकृतः श्रीगिरिनारकल्पः ।

APPENDIX VIII

Inscription of the reign of Alapkhan in the temple of Sthambhana Pârsvanâtha at Cambay.

ॐ अर्हं संवत् १३६६ वर्षे प्रतापाक्रान्तभूतलश्रीअलावदीनसुरत्राण-प्रतिशरीरश्रीअल्पखानविजयराज्ये श्रीस्तंभतीर्थे श्रीसुधर्मास्वामिसंताननभो-नभोमणिसुविहितचूडामणिप्रभुश्रीजिनेश्वरसूरिपट्टालंकारप्रभुश्रीजिनप्रबोधसू-रिशिष्यचूडामणियुगप्रधानप्रभुश्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरूपदेशेन ऊकेशवंशीयसा-हजिनदेवसाहसहदेवकुलमंडनस्य श्रीजेसलमेरौ श्रीपार्श्वनाथविधिचैत्यकारित-श्रीसम्मेतशिखरप्रासादस्य साहकेसवस्य पुत्ररत्नेन श्रीस्तंभतीर्थे निर्मापितस-कलस्वपक्षपरपक्षचमत्कारिनानाविधमार्गणलोकदारिद्र्यसुद्रापहारिगुणरत्नाकर-स्य गुरुगुरुतरपुरप्रवेशकमहोत्सवेन संपादितश्रीशत्रुंजयोज्जयंतमहातीर्थयात्रा-समुपार्जितपुण्यप्राग्भारेण श्रीपत्तनसंस्थापितकोट्टडिकालंकारश्रीशांतिनाथवि-धिचैत्यालयश्रीश्रावकपौषधशालाकारापणोपचितप्रसृमरयशःसंभारेण भ्रातृ-साहराजुदेवसाहवोलियसाहजेहडसाहलपपतिसाहगुणधरपुत्ररत्नसाहजयसिं-हसाहजगधरसाहसलपणसाहरत्नसिंहप्रमुखपरिवारसारेण श्रीजिनशासनप्र-भावकेण सकलसाधर्मिकवत्सलेन साहजेसलसुश्रावकेण कोट्टडिकास्थापनपूर्वं श्रीश्रावकपौषधशालासहितः सकलविधिलक्ष्मीविलासालयः श्रीअजितस्वामि-देवविधिचैत्यालयः कारित आचन्द्रार्कं यावन्नंदतात् ॥ शुभमस्तु । श्रीर्भूयात श्रमणसंघस्य । श्रीः ।

APPENDIX IX

Inscriptions on the Satrunjaya Hill pertaining Samarā's installation of the image of Ādiśvara.

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि सोमे श्रीमद्वृकेशवंशे वेसटगोत्रीयसा० मल्लणपुत्रसा०आजडतनयसा०गोसलभार्यागुणमतीकुक्षिसंभवेन संघपति-आसाधरानुजेन सा०लुणसीहात्मजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन पुत्रसा०सहज-पालसा०साहणपालसा०सामंतसा०समरसा०सांगणप्रमुखकुटुम्बसमुदायोपेतेन निजकुलदेवी (स्वस्ति) कामूर्त्तिः कारिता । यावद्व्योमनि चंद्रार्कौ यावन्मेरुर्महीतले । तावत् श्री (सच) का मूर्तिः····

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे····ज्ञातीयराणकश्रीमहीपाल-देवमूर्त्तिः····संघपतिश्रीदेसलेन कारिता श्रीयुगादिदेवचैत्यालये ।

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे श्रीमद्वृकेशवंशे वेसटगोत्रे सा० मल्लणपुत्रसा०आजडतनयसा०गोसलभार्यासा०गुणमतिकुक्षिसम्भूतेन संघ-पतिसा०आशाधरानुजेन सा०लुणसीहात्मजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन सा०-सहजपालसा०साहणपालसा०सामंतसा०समरसीहसा०सांगणसा०सोमप्रभृ-तिकुटुंबसमुदायोपेतेन पृथक्भ्रातृसंघपतिआसाधरमूर्त्तिः श्रेष्ठिमाढलपुत्रीसं-घ०रत्नश्रीमूर्त्तिसमन्विता कारिता । आशाधरः कल्पतरुर्होयमाशाधिकं पूरिन····· । ···· लंबितबाहुयुगो युगादिदेवं प्रणतः प्रणौति ॥ चिरं नंदतात् ॥ ॥ शुभं भवतु ॥

संवत् १४१४ वर्षे वैशाखसु १० गुरौ संघपतिदेसलसुतसा०समरस-मरश्रीयुग्मं सा०सालिगसा०सज्जनसिंहाभ्यां कारितं । प्रतिष्ठितं श्रीकक्कसूरि-शिष्यैः श्रीदेवगुप्तसूरिभिः । शुभं भवतु ॥

APPENDIX X

पेथडरासः

विणयवयणि वीनवउं देवि सामिणि वागेसरि
हंसगमणि आकाशभमणि तिहुयणि परमेसरि ।
वीरजिणिंदह नमीय चलण चउविहुश्रीसंघिहिं
कवडजक्ष जक्षाधिराज समरीय मनरंगिहिं ॥ १ ॥
कोडीयनयरनिवासिणी य वंदउं अंबिकदेवि ।
शासनदेवति मनि धरीय गुरुचलण नमेवि ॥ २ ॥
रास रमेवउ जिणसुवणि तालमेल ठवि पाउ ।
संघतलायन रोपीउ ए सभगिरि विभगिरि वेवि ॥ ३ ॥
निसुणंउं धामी एकमनि महीयलिमज्झि पहाण ।
जासं वोंध निरवमतिलउ पेथ अगंजीयमाण ॥ ४ ॥
पिणं एक तस गुण संभलउ संघपति साहसंधीर ।
अकलीअ कलि जिम छेतरीअ गरूउ गुहिर गंभीरं ॥ ५ ॥
पोरूआडकुलिमंडणउ वर्द्धमाणकुलिलीह ।
चांडसीहकुलि अवतरीया पेथपमुह सुतसीह ॥ ६ ॥
जिम कंचण कसवट्टीयए पामिउ वहुगुणरेह ।
वंधवि पेथपरीपीयइ वहुअ कालि घरि एह ॥ ७ ॥
वइसीय पेथड पाटे वंधव वोलावइ
नरसीहरतनह कारे मनि मंत्र चलावइ ।
मणूयजन्म अतिदुलह अनइ श्रावयजम्म
जीव लहइ वहुपुण्य जगि जिणवरधम्म ॥ ८ ॥
धणकणरयणभंडार ते सवि अछइ य असार ।
संचइ मोहनवंध ते सव्वि जाणे गमार ॥ ९ ॥
लाछितणउ जउ गरव करेई लीजइ राउल छल ह घरेई ।
मणूयजनम हयं सफल करीजइ जीविययौवनलाहउ लीजइ ॥ १० ॥
अथिरलाछि किम थिर ह करीजइ जिणह धंम तस ऊपम दीजइ ।
सेत्रुजि रिसहसामि वंदीजइ विविहप्रकारिइं प्रभु पूजीजइ ॥ ११ ॥

मिलि संघवि कीयउ वयण प्रमाण एकचित्ति सवि समाण जाण ।
साने संघवि कीयउ विचार सविहुं काजि लिउ नरसीअ भार ॥ १२ ॥
धम्मीय निसुणउ लोयमज्झि संघतणउ समाहउ भवीअणउ
आणूंअ दीजइ भत्तिजत्ति भवीया लहइ लाहउ घणकणउ ।
वेलसि वलीयइं रंगि रास हयं नवरस नवरंग नवीयपरे
सुणि सामहणी संघवणी जो करइं निरंतर घरेहिं घरे ॥ १३ ॥
जोइन देवालउं सामुहिउं तीहं माहि सुरेसर जिण ठवीय ।
देसदेसाउर वरनयर तिहिं लेवि कंकोत्री पाठवीय ॥ १४ ॥
पाटणि पइसीय सामति तहिं कर्णनरेसर भेटीय वीनवीउ ।
तीरथजात्र जायवउं देय तहिं देसवटउ सपसाउ कीउ ॥ १५ ॥
नयर पसाइरउ कीयउ तवम्वणि तहिं नाचइं कुतिगकुतिगीयां ।
घरि घरि वइसीय लोय मनावीय साजणसाहसरिस संग्हावी गामागर-
पुरपाटणह ॥ १६ ॥
दूसमसमइ अहि जिम तिरीयु तारणतरंड रिसह मनि धरीय फल
लीजइ जनमहतणउं ।
एकभावि नर जिणह धम्म परिरिहवरकलीय रमाउलीय ॥ १७ ॥
वेवि कुतिग नर जोइं निरंतर भलां भलेरां अतिहिं वहिला आपभयर ।
कामिणि धामिणि धवल दियंती गायंती गुण जिणयरह ।
अतिऊमाहु जात्र समाहउ करीयल कंनि सुणंतीहं य ॥ १८ ॥
ते चउरा रूडा तइयां ताटी नयांनवेरां दीसइं गेहणगण सवण ।
ते घणाघणेरा समधिसमेरा संखि न दीसइं असंखि पुण ॥ १९ ॥
देवालइ घालीय नयणि विसालीय दिंतीय ताली रंगि फिरंती हरिसभरे ।
तहिं नाचइं रोला वहुयत वेला वाला भोला लउडा रसि रमइं ॥ २० ॥
अतिरंगि पूरी दिंता भमरी नवपरि नवरंगइ तिपसपरे ।
परममहोच्छव कीउ देवालइ फागुणपंचमि वीनसीयालइ प्रधानं कीयं
पवरदिणि ॥ २१ ॥
संघपति सोहडदेउ वीनवीई तीरथजात्र जाइवउं गोसामीय ।
सेत्रुंजुत सीपामणह वहुय परवउ पणयि रहावीय ।
वहुयमल्ल लेउ पत्तनि आवीय संघ देवालइन रोपीउ ए ॥ २२ ॥

संघपूज तिहां कीधउं अवारी भोयण सयल लोय सवि पूरीय
महोच्छव कारवीय ॥ २३ ॥

लढण ॥ फागुणदसमि दिणंद चलीय संघ दहदिसितणउ ।
हसमस धसमस जोइ मिलीय लोक पण अतिघणउ ए ॥ २४ ॥
वहतमल्ल अगेवाण तुरीय ठाठ जोइं पापरीय ।
पुलेहिं पलाण जोइ इकि देवालइ फिरीय ॥ २५ ॥
पहिलउं दीथी लागि जोइन देवालां संचरइं ए ।
अखंड पीयाणे जाइ पहिलउं पीलूयाणइ रहीय ॥ २६ ॥
चलीय संघसंजुत्त पहुतउ वेगि डाभलनयरें ।
तींहं दीन्हा वास भास रास रुलीयामणां ए ।
देवालइ ऊछाहु चैत्रप्रवाडि सोहामणी ए ॥ २७ ॥
वडराउत वपाणि करणराउ मनि सलहीइ ए ।
देद दयापरजाम वील्हणवंस वपाणीइ ए ॥ २८ ॥
पहुतउ देवालइ तोइ हरसीय संघ प्रसंसीइ ए ।
पेथडसमउ न कोइ मारगि मन तुम्हि वीहिसिउ ए ॥ २९ ॥
दीन्ह पीयाणउं तोइ मयगलपरि तुम्हि संचरीय ।
वेगि पहुता तोइ नयरमाहि ते तरवरीय ॥ ३० ॥
आंगणि दीन्हा वास देवालां पापलि फिरीय ।
भविया पणमउ पास जिणह भूयण रुलीयामणउं ।
कीधीय चैत्रप्रवाडि देवदेवांगणि पेपणउं ए ॥ ३१ ॥
संघह कीउं वत्सल्ल धम्मी नागलपुरतणे ए ।
चलीय पीयाणइ जाम मारगि माग न जाणीइ ए ॥ ३२ ॥
सह थालइ गीयं ताम संघपति पेथ वपाणीइ ए ।
मयणि निहालइ लोक पुण्यवंत धनवंत तहिं ॥ ३३ ॥
पूजीया जिणभूयणाइं भविया मणोरह चित्ति धरे ।
कीउं पीयाणउं भावि अम्बलीपछीनीयहारि तहिं ॥ ३४ ॥
पेथावाडइ जाइ भेटीय मंडणदेव तहिं ।
लाधउं मानप्रमाण सीकिरि आवइं गुणपयरी ॥ ३५ ॥
भयु मनि करियउ तुम्हि मारगि जाउ तम्हि ।
गिया ते जंबू जाम संघह पार न पामीय ए ।

भेटीय झलु ताम पणवि पीयाणउं धामीयइं ॥ ३६ ॥
भडकूए आवास गोहिलसंडउ धरीय मनि ।
बहुगुणवंत सुजाण राण पहूतउ तेण म्वणि ॥ ३७ ॥
संघह दीन्हो धीर घलीय संघपति एकमनि ।
राणपुरे संपत्त संघ धनालइन रहइ ए ॥ ३८ ॥
घलीय सरीस उपराण घसहसंड संघपति भणइ ए ।
मइं मन मेल्हि निरास प्राण राणहं मन हरेसो ॥ ३९ ॥
घइठउ संघपतिपासि रंजीय ग्लीयायन हरिसे ।
गुणगरूउ सुम्वराउ लोलीयाणपुरम्वइं भणीय ॥ ४० ॥
घरउ धर्मनउ ठाउ भवीय भावि तीणइ वह भणीय ।
दीन्ह पीयाणनीयाण उपरिं पीपलाइभणीय ।
घडरा दीन्ह विहाण डूंगरा देपीय मनि ग्लीय ॥ ४१ ॥
दीठउ डूंगर हरिभियां घडीय सरोवरपाले ।
संघपति दइं यथामणी हरिपीऊ ए हरिपीऊ ए हरिपीउ मयणि निहाले ॥४२॥
कुंकुमि चाडउ दियारीउ ए तहिं पाथरीया पाट ।
पाउलि चउक पूरावीउ ए सपरिपरे सपरिपरे सपरि पडइं बहुभट ॥ ४३ ॥
पडइं भाट संघपति निसुणि पेथड पुण्यपवित्त
चंदसीहपरि अवतरीउ गुरुदेवे गुरुदेवे गुरुदेवे सुप सत्त ।
थापीउ डूंगर पण तिलउ फूलपगर ते चंग
पाउल नाचइं रंगभर गायंती ए गायंती ए गायंती मनह सरंग ॥ ४४ ॥
कापट कंचण दिन्ह तहिं बहुगुण पूरी आस ।
संघपति करइ यथामणउं घालीऊ ए घालीऊ ए घालीउ घालीपलापट्ट कास॥४०॥
गंगाजल जिम निर्मलउं लहलहावर सुपवित्त ।
सीधपेत्र तीरथतिलउ निरखपरे निरखपरे निरखपरे संपत्त ॥ ४६ ॥
मरुदेवि स्वामिणि पण नमीय संतिनाह सुरराउ ।
पालितसूरिप्रतिष्ठिउ ए सोलमु ए सोलमू ए सोलमउ जिणराउ ॥ ४७ ॥
डूंगरसिरि ते पाहरीय कवडिजक्खपडिहारो ।
संघ जि सांनिध सो करइ पहिलुं ए पहिलुं ए पहिलुं पास जुहारे ॥ ४८ ॥
अणुपम सर देपेवि तहिं पहुंता पालिद्धारि ।
सरगारोहण दिइ तहिं अहिणाद ए अहिणाद ए अहिणाद हूंत संसारे ॥ ४९ ॥

अष्टापद अवलोइई ए इंद्रमंडप अतिचंग ।
नंदीसर अहिणव तहिं देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहिं सुरंग ॥ ५० ॥
मंडपि पहुतउ पवित्र तहिं लोटींगणां करेउ ।
पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण देउ ॥ ५१ ॥
दीठल्ला पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पढमजिण विमलगिरे ।
भवीयच्छुणंत सामी लागल्ला तम्ह वइं नामि नमो य नमो नमो सेत्रुजसिहरो५२
वायवद्धामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि कलीआमणं ए
भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्ख जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥
धुणंति दीणरीण जीण ऊतारंति जललवण नम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥
कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु
गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलवउ सेवत्रीपाडल वहल कुसुम परमल विपुल पूजहे । वायवद्धामणं ॥
भवीयमणि वहआणंदि आरती ऊतारइ जिणिंद पदइं भट्ट मंगलिक रिसहसामि ।
तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि वद्धावीय लि। घन धामी वद्धामणउं ॥
भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुखीय जण मग्गण दाणु
नचंति नयनवी रमणि वीणवंसमृदंगमणि निवहि तालनिनाद सुणि पूरीय भवण । वाइवद्धामणुं० ॥
आय कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीगाल चिरकालि सुखिवर ।
तम्हचीं पाय ए कमलभमर भविक जन जयउ जगनाथ तुं जगतगुरो ॥ वाय॰ वद्धाम० ॥
[illegible] सिद्धि ले तीथयर गोत्र वंधीय ले पूजीयु हरिसह मनि मन मिलीउ ।
आयस मग्गीय जव चलीय पूरीय संघ मल्लीय मनि निचंतीय पेथडकंठि टोडर दलीउ । वायवद्धामणं० ॥
आयस मग्गिय पेथ ज चलीउ दलीय टोडर संघपति मोकलायए
सयलसंघो पहुत पालीताणए घरि घरि साहमीवच्छल कारए ।

बावीय वित्त तिहि सयलसिद्धिक्षेत्रे जन्मफल लेउ जो बहुधणवंतइं स्थापटी
चलीय पीयाणए ।
वरउ संघातिपति लोक वखाणए सेलडीया संघ पहत तहि चलयउ अखंड
पीआणए ।
जाइ अमरेलीयपीयाणए पहतउ वेगि तहिं पण विक्रीयाणए विसमगिरि लं-
घीयउ पूरि मनि आसह ॥
तेजलपुरि अंगणि दीन्हा वास उग्रसेनमंदिरु दीठ पगार अयनरकवि भणइं
गढवि खइंगार ।
गरूअउ दीसए पोलिपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥
मंटलकि मंडिउ वास तहिं विसमए सुरठ वहदेस भोल लोक तहि निवसए ।
गिरि गुरूउ गिरनार स पसिद्धउ ता लहि दमोदरो देव प्रसिद्धउ वहि सोवन-
रेख नदी जलपूरीय ।
कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रिवाहट देवि पाज करावीय पयलीय वर
परय तीण करावीय ।
विसम डूंगर गुरूउ गिरनारो चडीय नेमिकुमरि लीयउ संजमभारो
दिनि चउपनि वरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिह घर तसु सिहरे सिजए ।
सीधु सामी सामलउ तसु सिहरि संघ पहतउ उलट आंगिहि अलियणउ देपी
राजलवंत । तहि नाचिनए ए सहिलडी ए लला गीय गिरिनारे
राजलिवर कलिआमणउ सामलडउ संसारो । तहिं नाचिनए०॥
अंग पखालि सुगयंदमद ए जल पहरीय धोति प्रधीन ।
इंद्रमहोत्सव आयरंभी तहिं वयठ लि बहुधणवंत । तहि नाचिनए सहि० ॥
इंद्रमालउच्छाह करी जो वेचीय विभय नीयाणि ।
सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीयलि इन्द्रविमानि ॥ तहि नाचिनए० ॥
चमरधारि सरतारसवंगी गावंती बहु आसीस ।
सामलसाधि गिरि संघपति नंदउ बहत वरीस ॥ तहिं नाचिनए० ॥
गयंदमद ए नीरि कलस जलभरीय लि कपूरिहि भंगी मराहज अहिरीम
नग कलीय लि आरती उतारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहि ना० ॥
अंबिकि आस मणोरह पूरी अवलोईय जगनाथ
सांवपजन गुहारीय वलीयउ वेध जन्म सुकीयाथ ॥ तहि नाचिनलडी ए
या सई गिरिनारि ॥